चैतन्य लहरी

खंड : XV अंक : 9 व 10 सितम्बर - अक्तूबर 2003

3 सार्वजनिक प्रवचन, दिल्ली–24.3.2003

7 उद्घाटन–विश्व निर्मल प्रेम आश्रम– 27.3.2003

11 ध्यान का महत्व – 1.2.1975

20 पाने के बाद – 25.11.1973

31 श्रीमाताजी का परामर्श – 27.5.1976

34 सहस्रार दिवस, बम्बई – 5.5.1983

42 महिलाओं से बातचीत – जनवरी 1984

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 - ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली - 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-15
फोन : 25921159, 55458062

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-
श्री ओ. पी. चान्दना
एन - 463 (जी-11) , ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110034
फोन : 27031889
E-mail : chaitanyalahiri@indiatimes.com

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी-17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली - 110016

सहजयोगी : एक आदर्श हिन्दुस्तानी

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का सार्वजनिक कार्यक्रम पर प्रवचन
जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम, नई दिल्ली, 24.3.2003

आप लोगों का ये हार्दिक स्वागत देखकर के हृदय आनंद से भर आता है और समझ में नहीं आ रहा है कि क्या कहूँ और क्या न कहूँ! आपसे आज के मौके पर क्या कहना चाहिए और क्या बताना चाहिए, ये ही समझ में नहीं आता है क्योंकि आप लोग अधिकतर सहजयोगी हैं और जो नहीं हैं वो भी हो ही जायेंगे। हर बार ऐसा ही होता है।

जीवन में सहजयोग प्राप्त होना एक जमाने में बड़ी कठिन चीज़ थी, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब तो बहुत सहज में ही आपकी कुण्डलिनी जागृत हो सकती है। सहज में ही आप उस स्थान को प्राप्त कर सकते हैं जो कहा जाता है कि आप ही के अन्दर आत्मा का वास है और आप ही के अंदर वो चमत्कार होना चाहिए जिससे आपको अपनी आत्मा से परिचित किया जा सके। ये चीज़ एक जमाने में बड़ी कठिन थी। हजारों वर्षों की तपस्चर्या, जंगलों में घूमना, ऋषियों-मुनियों की सेवा, उसके फलस्वरूप कुछ लोग, बहुत कुछ लोग, इसे प्राप्त करते थे। पर आजकल ऐसा ज़माना आ गया है कि गर मनुष्य को ये गति नहीं मिली तो न जाने वो किस ठौर उतरेगा, उसका क्या हाल होगा? शायद इसीलिए इस कलियुग में भी यह सहजयोग इतना गतिमान है।

इसमें तो आप लोगों का भी योगदान है। हज़ारों सहजयोगी हो गए और सब लोग आपको खुद पार करा सकते हैं। ये कितना बड़ा कार्य हो गया है, क्योंकि मेरे अकेले के बस का इतना था क्या? लेकिन इसको संवारा है आपने, इसको उठाया है आपने और इसके लिए मेहनत की है आपने। मैं आपको कितना धन्यवाद दूँ ये मैं नहीं समझ पाती। कितनी बड़ी बात है कि इस दुनिया में हजारों लोग नवीन जीवन को प्राप्त कर गए और उनके अंदर एक नई रोशनी आ गई। कोई समझ भी नहीं सकता, कोई मान भी नहीं सकता कि ऐसा घटित हो सकता है, पर हो गया। सर्वजाति और सर्वतरह के लोग जिन्होनें इसे प्राप्त किया है, उसके लिए कोई वर्ग विशेष नहीं, कोई ऊँच-नीच नहीं। पता नहीं, हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि बाहर भी हज़ारों लोग इसको प्राप्त कर गए हैं और हमें बहुत से लोगों को ये देना होगा। अपने देश की जो समस्याएं थीं वे सब इससे नष्ट हो जाएंगी। जिस जिस ने इसे प्राप्त किया है उनकी सारी समस्याएं दूर हो गईं। नई दृष्टि पा ली उन्होंने और ऐसा संयोग है कि इसको पा कर के वो लोग भी अब कार्यान्वित हैं। हम तो सिर्फ इतना जानते हैं कि ये कार्य होना था और वो हो गया। पर इस कदर उसमें प्रबलता आ जाएगी, ये कभी सोचा भी न था। सिर्फ इतना ही कहना है कि जिन लोगों ने इसे प्राप्त किया है वो इसे अपने पास छिपा कर न रखें, औरों में भी बांटे, औरों को भी दें। देने से और भी आनन्द बढ़ेगा। देने से इसका आनन्द और भी द्विगुणित हो जाएगा। इसमें कोई शंका नहीं है। ये अपने पास रखने की चीज़ नहीं है। बांटने की चीज़ है। बांटने से ही इसका मज़ा आएगा। आशा है आप सब लोग इसे बांट कर इसका आनन्द उठाएंगे।

हमने तो बहुत वर्ष मेहनत की है, हिन्दुस्तान में और बाहर भी। इतनी मेहनत की है। अब उससे भी ज्यादा आप लोगों को करना होगा। तभी इस दुनिया का अज्ञान नष्ट होगा। बड़े भारी अज्ञान में डूबा है। आज यहां गड़बड़ है तो कल वहां गड़बड़ है। इसको ठीक करने के लिए आप को भी सज्य हो जाना चाहिए। और जिन्होंने इसको प्राप्त किया है उनको इसे और भी फैलाना चाहिए, बढ़ाना चाहिए, देना चाहिए। किसी भी बहाने से

आर्त, क्षुब्ध नहीं होना। आप शांत मत बैठिए। कोई ऐसी विधा नहीं है कि आप इसे फैला नहीं सकते। इसमें जितनी शक्ति दें वो ही आपके अंदर कार्यान्वित होगी और उसी से आप लोगों को प्लावित करेंगे। हमारे लिए तो दिल्ली में इतना कार्य होना बहुत बड़ी चीज है। याद है जब हम दिल्ली में शुरु-शुरु में आए थे तो लोगों को कोई समझ ही नहीं थी और हमारे लिए वो अब समझ के अनुसार ही चलते थे। धीरे-धीरे समर्थ और धीरे-धीरे उन्होंने हरेक चीज का संतुलन प्राप्त किया। अनुभव से वो समझ गए कि मनुष्य के अन्दर क्या दुर्बलता है, क्या तकलीफ है। और इसके लिए वो धीरे-धीरे शिक्षित हो गए। इतना सहजयोगियों के पास ज्ञान आ गया। बड़े ज्ञानी हो गए। लोग बताते हैं कि माँ इनके अंदर इतना ज्ञान कहाँ से आया? अंदर से ही आया है इनके अंदर। इनके अंदर ही ये ज्ञान आ गया है और कहाँ से आया है? इस प्रकार अपने ही अंदर जो परमतत्व आत्मा का है, उसका ये प्रादुर्भाव है, वो प्रकटीकरण है जिससे लोग जानते हैं कि सच क्या है और आगे क्या है? हमसे जितना बन पड़ा, हमने हरेक चीज को समझाया और देखती हूँ कि लोग बड़े आसानी से इसको आत्मसात करते हैं। देहातों में भी, जहाँ लोग खास पढ़े-लिखे नहीं हैं, उन्होंने भी सहजयोग इतने अच्छे से सीखा, इतना अच्छे से समझा और इतना अच्छे से समझाते हैं कि मैं खुद हैरान हूँ इनके तौर-तरीके देख करके।

दिल्ली वालों ने तो कमाल की हुई है। यहाँ कोई झगड़ा नहीं, कोई आफत नहीं, कोई आपस में किसी तरह का कोई मन-मुटाव नहीं। बहुत खुले दिमाग के लोग हैं और इनके साथ जितना हमसे बन पड़ा हमने समय बिताया था। अब तो नहीं इतना होता। और देखती हूँ कि ये लोग इतने होशियार हो गए। आपके हाथ से काम करके ये समझ गए हैं कि सहजयोग क्या है और उसको इन्होंने महायोग के चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। मुझे खुद आश्चर्य होता है कि इतने सर्वसाधारण लोग हैं और इस कदर जानते हैं और समझते हैं। बहुत से लोग तो अनपढ़ हैं! पर इतने होशियार और इतने समझदार हैं कि बड़ा आश्चर्य होता है कि किस तरह ये सब समझ गए और ये किस तरह इस कार्य को करते हैं!

अब भी हमें कुछ और मोर्चे निकालने होंगे। एक तो हमें देशभक्ति की बात करनी चाहिए। देश-भक्ति जरूरी आनी चाहिए। देश के इतिहास में क्या-क्या हुआ और कितने लोगों नें अपना सर्वस्व त्याग किया। इन सबके बारे में बहुत जरूरी है कि आप को जानकारी होनी चाहिए और उसके बारे में आप लोगों को बातचीत करनी चाहिए। ये महान देश है, यहां बड़े-बड़े महान लोग हो गए। लेकिन कुछ ऐसी हमारे उपर अवकृपा हुई। विदेशों से हमारे उपर इतने लोग आए। उनके कारण हम लोग दिल खोलकर सबसे कुछ बात कर न सके। लेकिन जरूरी है कि अब बताया जाए। परदेस में भी लोगों ने बताया कि हिन्दुस्तान में क्या-क्या ज्यादती हुई है। इसका मतलब ये नहीं कि आप उन लोगों से नफरत करें या दुष्टता करें, पर ये है कि आप समझ लें कि किस तकलीफ से यहाँ पर लोग गुजरे हैं। क्या क्या आफतें ले कर उन्होंने जिन्दगी काटी है। अगर आप इस चीज को समझ लें तो आपको पता होगा कि हमारा देश कितना महान है और कितने बड़े बवंडर से निकला है। उसका जब आप को पता होगा तो आपको भी अपने देश पर बड़ा गर्व होगा और आप भी सोचेंगे कि क्या महान देश है। फिर अपने देश की संस्कृति बहुत ऊँची है। ऐसी संस्कृति कोई भी देश में नहीं है। मैं तो इतने देशों में घूमी हूँ। इस संस्कृति में सबकी इज्जत करना, सबको प्यार करना और देश को प्यार करना और बड़े-बड़े, बड़े-बड़े इनके आदर्श हैं, उन आदर्शों पर चलना। उनको भुला कर

हमारा कोई फायदा नहीं। यही नहीं, पर इन्हीं को हमको और देशों में फैलाना है। हमारे देश के बारे में जो जो गलतफहमियाँ हैं वो हट जाएंगी और हम सबको बता सकते हैं कि हमारा देश कितना महान है। हम लोगों की अच्छाईयां जो हैं, सामने आनी चाहिएं। उससे लोग समझ जाएंगे कि हमारा देश कितना महान है। आप लोगों से इतना ही कहना है कि आप अपने देश के प्रति अत्यंत श्रद्धामय रहें और उन लोगों के लिए जिन्होंने देश के लिए इतना त्याग किया, जो सच्चाई पर खड़े रहे और जिन्होंने सच्चाई के लिए अपने प्राण तक दे दिए। ऐसे सब पीर-महात्मा लोगों को, आप लोगों को जानना चाहिए। सहजयोग का मतलब यह नहीं है कि आप सिर्फ इस देश की जो महानता है वो आप जानें, पर इस देश की जो परम्पराएं हैं इसको भी समझें और यहाँ की संस्कृति को भी आप अपनाएं।

आजकल तो ऐसा ज़माना चला है कि हम लोग विदेशी, परदेसी चीज़ों को पसंद करने लग गए हैं और उन्हीं के रास्ते पर चल पड़े हैं। इससे कितना नुकसान हुआ है हम लोगों का? इससे कितनी परेशानी उठाई है? अपने देश की महानता और उसके गौरव को समझें और वही हमारे जीवन में भी और औरों के जीवन में भी देखना चाहिए। ये तो कमाल की परम्पराएं हैं। उससे दूर भागने से हम सत्य से दूर भाग रहे हैं। हम लोग सत्य पर खड़े रहे और इसीलिए हमें काफी विपत्तियां उठानी पड़ी, ये तो माननी चाहिए बात। पर जो आदमी सत्य पर टिका है, वो तो अमर है। उसके लिए कुछ अच्छा नहीं कुछ बुरा नहीं। सबसे बड़ी बात ये है कि वो वंदनीय है, वो पूजनीय है, और उसके जैसे बनना एक बड़ी भारी बात है। ऐसे हज़ारों चरित्र इस देश में हो गए। लेकिन हम लोग अभी अपने देश को पहचानते नहीं और उसके आभूषण बनने की जगह हम दूसरे देशों की नकलें करते हैं। सहजयोगियों को ये शोभा नहीं देता। और सहजयोगी करते भी नहीं, मुझे मालूम है। पर औरों को भी बताना चाहिए कि हमारी चीज़ में किस कदर इस देश में देशाभिमान है, स्वयं का अभिमान है और हर तरह के, हर तरह के आदर्श जीवन की रेखाएं हैं। पर धीरे-धीरे, मेरा ख्याल है, ये बात आ जाएगी। अब सहजयोगी इतने हो गए हैं, इतने ज्यादा हो गए हैं कि मुझे ज्यादा बताने की जरूरत नहीं। वो लोग स्वयं ही इसको कर लेंगे।

मुझे आपसे गर कुछ कहना है तो ये कि आप गर सहजयोगी हैं तो आपके जीवन की पद्धति भी वैसी होनी चाहिए और दूसरे आप की जीवन प्रणाली भी वैसी होनी चाहिए जैसे एक आदर्श हिन्दुस्तानी की होती है। उसके लिए ये बात नहीं कि आप कौन से धर्म के हैं, एक ही जाति के हैं या... बात है कि आप हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तानी का धर्म ये है कि वो...हिन्दुस्तान की शोभा बने और उसी में रममाण रहे। यहाँ के हर चीज़ में आपको ध्यान देना चाहिए। यहाँ का संगीत, यहाँ की कला, यहाँ की शिल्पकला और Architecture आदि सभी चीजें इतनी बढ़िया थीं। अब तो कुछ भी नहीं बन पातीं। चलो न भी बने पर उनको समझना तो चाहिए। उनको देखना तो चाहिए। ये बात हिन्दुस्तानियों में आनी चाहिए। पता होना चाहिए कि इस देश में कितना महान कार्य हो चुका है और हम भी कुछ ऐसे कार्य करें जिससे इस देश की शोभा बढ़े। न जाने कितनी चीजें ऐसी हैं कि जो सहजयोगियों के लिए करनी होंगी, और करते हैं। उनका जीवन बहुत सुन्दर हो गया है। घर-बाहर हर जगह, और लोग बहुत तारीफ करते हैं कि सहजयोगियों का जीवन इतना सुन्दर कैसे हो गया। एक तो आत्मा का आशीर्वाद और दूसरे वो सूक्ष्म दृष्टि जिससे आप अच्छाई को पहचानते हैं, अच्छाई को जानते हैं। जब तक वो दृष्टि नहीं आएगी तब तक आप सहजयोगी नहीं है।

कहने को तो बहुत कुछ है पर मैं सोच रही थी कि आज बहुत से लोग ऐसे भी आए हैं जिन्होंने अपना आत्म ही देखा नहीं। उनके लिए जरूरी है कि उसका भी एक सत्र कराया जाये।

आप लोग सब मेरी ओर इस तरह हाथ करके बैठिए। बात मत करिये! शान्तिपूर्वक। हाँ, और आँख बंद कर लें। दोनों हाथ मेरे तरफ और आँख बंद करिए। और अब कहिए आँख बंद करके कि श्री माता जी हमको कृपया आत्म साक्षात्कार दीजिए। धीरे, अंदर ही अंदर, बाहर नहीं। अब देखिए कि आपके हाथ में (आँख बंद रखिए) ठण्डी-ठण्डी हवा तो नहीं आ रही या गरम गरम भी आ रही होगी। गर आ रही हो तो हमारी ओर सीधा हाथ करें और बाँया हाथ सर पर रख कर देखें कि आपके सर से आ रही है ठण्डी-ठण्डी हवा।

सबको अनन्त आशीर्वाद है हमारा।

उद्घाटन समारोह (NGO)

विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, ग्रेटर नोएडा, 27.03.2003

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप लोग मुझे हिन्दी में बोलने की आज्ञा दें।

अपने देश में जो अनेक प्रश्न हैं, उसमें सबसे बड़ा प्रश्न है कि यहां पर औरतों को और आदमियों को अलग-अलग तरीके से देखा जाता है पता नहीं ये कैसे आया, क्योंकि अपने शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। कहते हैं शास्त्रों में कि:

यत्र पूज्यन्ते नार्या--नारियां जहां पूजनीय होती है

तत्र रमन्ते देवता 'तो पता नहीं कैसे हमारे देश में इस तरह की स्थिति सम्पन्न हुई है, इससे औरतों के प्रति कोई भी आदर नहीं है। विशेषत: मेरा विवाह यू.पी. में हुआ और मैं देखकर हैरान हुई कि यू.पी. में घरेलू औरतों का कोई स्थान ही नहीं है। उनमें और नौकरानियों में कोई फर्क नहीं है। यह इस प्रकार क्यों हुआ और क्यों हो रहा है? क्योंकि लोग उस ओर जागृत नहीं है और कभी-कभी देख कर तो रोना आता है। जिस तरह से औरतों को छला है, घर से निकाल दिया, कोई वजह नहीं, यूंही घर से निकाल दिया और ऐसे बहुत सारे हमने जीवन में अनुभव लिए और जिसकी वजह से अत्यन्त व्यथित हो गए। समझ में नहीं आता था कि इस तरह से क्यों औरतों को सताया जा रहा है और इनके रहने की भी व्यवस्था नहीं। जब घर से निकल गई तो उनको देखने वाला भी कोई नहीं है। बाल बच्चे ले करके निकल आई थी बेचारी। वो लोग तो हैं निराश्रित पर बच्चों को भी बिल्कुल बुरी तरह से निकाल देते हैं। यह अपने यहाँ की व्यवस्था किस तरह से बदल सकती है। इसका कोई इलाज है या नहीं? मैंने बहुत बार सोचा कि इसके बारे में लिखना चाहिए, पर लिखने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए कोई व्यवस्थित रूप से कोई इन्तजाम करना होगा, कोई व्यवस्था करनी होगी, और एक तरह से बड़ा दिल कचोटता था। ऐसी अनेक-अनेक औरतें देखी हमने जो आज रास्ते पर भीख मांग रही हैं। लोगों ने बताया कि अच्छा तरीका है भीख मांगने का। मैंने कहा कि भाई तुमको मांगना पड़े तो पता चले। औरतों के प्रति एक अत्यन्त उदासीन प्रवृत्ति जो अपने देश में आ गई है मुझे उससे तो रोना ही आता था। और इसीलिए मैंने यह ठान लिया था कि इनके रहन-सहन का, इनके खान-पान का, इन बेचारी औरतों का कुछ न कुछ इलाज तो करना चाहिए। वो लोग रास्तों में भीख मांगती हैं, हर तरह का काम करती हैं, उनको मैंने घर में बुलाया, उनसे बातचीत करी तो कोई कारण नज़र नहीं आता। आदमियों को कोई औरत अच्छी लग गई उसकी (पत्नी) छुट्टी करो, दूसरा कुछ बहाना करके औरत को घर से निकाल दो। पता नहीं क्यों? औरत एक महान जीवन है, उसी से सारा संसार खड़ा होता है। उसी से अपने देश में हज़ारों बाल-बच्चे इस संसार में आते हैं। पर उनके प्रति इस तरह बेकद्री से लोग पेश आते हैं कि सहते-सहते औरत भी पागल हो जाए। पर नहीं, वो अपने बच्चों की वजह से बड़े हिम्मत से जीती हैं। लेकिन करे क्या उसके पास और खाने का ज़रिया नहीं, कोई तरीका नहीं, तो वो क्या करे, कहां जाए, किससे भीख मांगे? कोई उनको दरवाजे में भी खड़ा नहीं करता। इसका कोई इलाज मुझे दिखाई नहीं दिया। इसीलिए मैंने बहुत सोचा कि सबसे बड़ा काम, अगर कुछ है, तो इन औरतों के लिए कोई स्थान बना देना है। मैंने यही सोचा कि यहां आ करके वो सीख लेंगी, कुछ न कुछ काम सीख लेंगी। इसके अलावा यह लोग मालिश करना सीख सकती हैं, इसके अलावा यह लोग छोटे-छोटे अपने होटल जैसे बना सकती हैं। पर उनकी सहायता करने के लिए कोई चाहिए, कोई स्थान चाहिए, और उनको समझाने के लिए कोई चाहिए। इसी ख्याल से मैंने यह आश्रम बनाया है और इसमें सभी के प्यार को ललकारा है, सारे विश्व के प्यार को ललकारा है कि सब लोग प्यार से इसे देखें। इन बिचारी औरतों का कोई दोष नहीं

हैं, वो जो दर-दर में भीख मांग रही हैं इसका उत्तरदायित्व हमारे समाज का है। बहुत दुख होता है, एक औरत के नाते मुझे बहुत रोना आता था देख-देख के और यह जब बनने लगा तो मैंने कहा कि किसी तरह से यह पूरा हो जाए। और इसमें मेहनत करी काफी, इसका डिजाइन भी हमने बनाया। इसकी विशेषता यह है कि इसमें जो आपको सफेद रंग दिख रहा है यह खराब होने वाला नहीं। एक अजीबो गरीब तरीके से बनाया है, यह इटली में मैंने सीखा था। इटली में मैंने सीखा था कि ऐसा रंग बनाना चाहिए कि जो छूटे न और मुझे इसका मालूम है (तकनीक) और उसको इस्तेमाल करने से देखिए कितना सुन्दर सफेद रंग बन गया। यह कभी खराब नहीं होगा, कितना भी इस पर पानी आ जाए, कुछ हो जाए, कभी खराब नहीं होगा। यह मैंने एक experiment की तरह से, लेकिन यह चीज है बड़ी अच्छी। क्योंकि अपने देश में पता नहीं क्यों इस तरह के लोग चीज नहीं बनाते। और इस तरह की चीज बनाना कोई मुश्किल नहीं। मैंने कितनों से कहा कि आप इसको इस्तेमाल करें, सो यही बात हुई कि कौन करे तवालत, कौन करे यह आफत। इसमें कोई तवालत नहीं है, कोई आफत नहीं है। पर भारत देश में एक और प्रथा चल पड़ी है कि जैसे चले वैसे चलने दो। फिर आप क्या बात कर सकते हैं। यहां एक से एक विद्वान हो गए, संस्कृत के पंडित हो गए, इतना ज्ञान दे गए, पर लोगों को इसका बिल्कुल अंदाज नहीं है। वो जानते नहीं कि कितने महान देश में आप पैदा हुए हैं और इसके अंदर कितना ज्ञान दे गए। यही औरतों को आप बिल्कुल कुछ नहीं समझते, औरतों को तो बिल्कुल जैसे कोई भिखारियों जैसे रखा जाता है। पति जो है वो शराब पियेगा और बीवी को मारेगा, और मारेगा नहीं तो भी उसको कुछ सहुलियत नहीं है, कोई सुविधा नहीं बेचारी को। वो किसी तरह से भी रह लेगी। हाँ अगर कोई रईस की लड़की होगी तो ठीक है, नहीं तो बहुत सताते हैं। और इस तरह से कितनी ही औरतें अपने आप पिछाड़ी गई हैं। उसमें से कुछ तो घर से निकल खड़ी हो गई और भीख मांग रही हैं। और कुछ ऐसी भी है जो घर में ही रोती रहती हैं और किसी तरह से अपना जीवन काट रही हैं। पता नहीं समाज में इसके प्रति अभी, खासकर इधर, खासकर अपने यू.पी. में, इधर ध्यान नहीं गया। महाराष्ट्र में एक बात अच्छी हुई, वहां दो-तीन समाज सुधारक निकले। उन समाज सुधारकों ने बहुत कार्य किया। उनकी वजह से वहां पर यूनिवर्सिटीज बन गईं। औरतों को बहुत अच्छा शिक्षण मिला और लोग देखने लगे कि औरतों में भी बहुत गुण हैं।

अब यह हमने स्कूल तो बनाया है और आप लोगों से यही बिनती है कि आप लोग हमें बताएं कि इसमें हम क्या कर सकते हैं। कौन-सी, कौन-सी शिक्षा हम दे सकते हैं। ऐसे हम लोगों ने तो बहुत सोच लिया है। पर तो भी आप सूध्य है, आप हमारे पास खबर भेजें कि और क्या-क्या हम इन औरतों के लिए कर सकते हैं। परदेस में हमने देखा वहां कायदा-कानून ऐसा है कि कोई भी औरतों को इस तरह से सता नहीं सकता। ऐसी उनकी दुर्दशा नहीं है। यह अपने ही देश की विशेषता है जहां पर कि औरतों की दुर्दशा होती है। परदेस में हम बहुत साल रहे, जाते-आते रहे तो यह फर्क मुझे मालूम हुआ। बड़ा महसूस हुआ कि यहा पर देखिए कि एक औरत की कोई कीमत ही नहीं है, वही बच्चे पैदा करती है, वही संवारती है। और भारतीय नारी तो वैसे भी बड़ी सुन्दर होती है, बहुत कार्यक्षम, बहुत दक्ष और बहुत ही ज्यादा मोहब्बत वाली होती है। यहाँ की माताएं तो मशहूर हैं। पर हमारे यहां उनके लिए कोई प्रेम-आदर नहीं। पता नहीं ऐसा क्यों? हाँ वहाँ जरूर है औरतों ने ही अपना मंच बनाया हुआ है। उन्होंने अपने लिए यह सब यह स्थापित कर लिया है। और इस देश में उनको पूछने वाला कोई नहीं। इसी ख्याल से हमने यह छोटा सा आश्रम बनाया है कि इस आश्रम में जो लोग आएं लड़कियां-औरतें, उनको दे दिया जाए ज्ञान, अपने पांव

पर खड़ा होना और सहज-योग भी उसके साथ। गर वो इसको प्राप्त कर लें तो वो बहुत अभिमान के साथ और गौरव के साथ रह सकती हैं। यहीं आश्रम में हम बहुत सी इंडस्ट्रीज़ भी बना सकते हैं, बहुत से खाने-पीने की चीजें बना सकते हैं, और बहुत से उच्च तरह का शिक्षण भी दिया जा सकता है। यह तो देखा जाएगा कि किन औरतों में इसकी क्षमता है, कितनी औरतें इसमें उठ-खड़ी होती हैं। कभी-कभी हमने देखा है कि ऐसी ही जगहों से जहां पर औरतों को कुचला गया है, बड़े-बड़े स्थानों में औरतें उठ खड़ी हुईं। पर हमको उनकी मदद करनी होगी, हमें देखना होगा। क्योंकि जो हो रहा है वो अपने समाज के लिए बहुत हानिकारक है, और बड़ी दुष्टता की निशानी है। उस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं है, पता नहीं कैसे? उधर ध्यान देना बहुत जरूरी है। और यह जो औरतों की तरफ हमारा, कहना चाहिए कि, उनके लिए जो हमारे हृदय में जो श्रद्धा होनी चाहिए वो नहीं है। बिल्कुल नहीं है और हम बुरी तरह से उनको सताते भी हैं, पीटते भी हैं, बात-बात में मारते भी हैं। ऐसी-ऐसी मेरे पास कहानियाँ हैं कि मैं उनको अभी गर सुनाऊं तो आप रो पड़ियेगा। मैं बहुत रो चुकी हूँ अब चाहती हूँ कि कुछ न कुछ मार्ग ढूंढा जाए और इसलिए यह छोटा सा प्रयास किया है। इसको बढ़ा भी सकते हैं बाद में और फिर यहाँ से जो औरतें ठीक हो कर जायेंगी, जो यहाँ से, कहना चाहिए कि, परिपक्व हो कर जायेंगी, वो कुछ न कुछ अपनी जिन्दगी में करेंगी। इतना ही नहीं वो अपने को संभाल सकती हैं। अपने बच्चों को भी संभाल सकती हैं और बाइज्जत अपनी जिन्दगी निभा सकती हैं। यह बहुत जरूरी है। उनको कितना भी आप शिक्षण दीजिए, कुछ दीजिए, घर में उनकी अगर इज्जत होती नहीं तो वो क्या करेंगी बेचारी। उनकी पढ़ाई-लिखाई की यदि इज्जत नहीं होती तो वह क्या करेगी? इसलिए कोशिश यही करनी है कि इनको इस लायक बना दिया जाए, इन औरतों में यह आ जाए हुनर कि वो स्वाभिमान के साथ अपनी जिन्दगी काट सकें। वो भी इन्सान हैं, वो कोई जानवर तो नहीं है। वो भी इन्सान हैं और इन्सान की पदवी उनको देना यह नितान्त आवश्यक बात है। गर हम यह बात नहीं समझेंगे, पहले तो अपने घर-द्वार से शुरु करें, वहीं से देखें कि क्या से क्या चल रहा है। हमने तो बहुत नज़दीकी से देखा है और सिवाए रोने के और कोई मार्ग नहीं था।

मैं जान करके हिन्दी में बोल रही हूँ क्योंकि परदेसी लोग हैं, इनके सामने अपने देश की औरतों की निन्दा कैसे करें? इन लोगों को देश के प्रति बहुत अभिमान है। जब भी आते हैं तो पहले सर को जमीन में छू करके अभिनन्दन करते हैं। इतना मानते हैं कि मैं आपसे बता नहीं सकती। मैंने इनको कभी नहीं कहा। अपने ही विचार से, अपनी ही श्रद्धा से यह समझते हैं कि यह तो नन्दन वन है और उनको अभी यहाँ की दुर्दशा का पता नहीं है इसलिए मैं नहीं चाहती कि इनको पता चले, अपने देश की बुराई करने में क्या रखा है? पर जो बुराई है उसे निकालना चाहिए, उसको हटाना चाहिए। यही बात मैं आप सब से कह रही हूँ। वहां औरतों का मान होने का कोई विशेष कारण तो है नहीं, पर वहाँ के कायदे-कानून ऐसे बन गए थे कि कोई भी औरत कहीं पड़ी हो, कैसी भी हो, कहीं हो, उसकी बेइज्जती नहीं होती इसलिए हमें भी चाहिए कि हम भी समझें कि यह बहुत बड़ी बात है कि हम भी अपनी औरतों का मान करें और उनके प्रति श्रद्धा रखें। हमने तो इतनी भयंकर चीजें देखी हैं कि विश्वास नहीं होता कि कोई इन्सान दूसरे इन्सान को इस तरह से छल सकता है, सता सकता है परेशान कर सकता है! एक अजीब ही तरह की गुलामी है। हम तो अंग्रेज़ों की गुलामी से तो छुटकारा पा गए लेकिन हमारे समाज में जो इस तरह की गुलामी है उससे छुटकारा पाना बहुत जरूरी है। हमारे देश की महिलाएं, मेरे ख्याल से कम से कम 70 फीसदी है और बाकी आदमी लोग हैं, इतना होते हुए भी आदमियों में बड़ा

घमंड है। अपने को पता नहीं क्या समझते हैं और सोचते हैं कि हम चाहे जो भी कर लें वह ठीक हो जाएगा ऐसा नहीं है। एक औरत भी स्त्री है एक समाज का बड़ा भारी घटक है। उनके साथ जो भी आप ज्यादती करिएगा उसका फल आपको और आपके बच्चों को भोगना ही पड़ेगा। अब हम लोग देखते हैं कि हमारे बच्चे भी खराब हो रहे हैं क्योंकि उन पर नियंत्रण कौन करे, माँ को तो कोई अधिकार नहीं और बाप को फुर्सत नहीं, तो बच्चों को ठीक कौन करेगा, और कौन देखेगा? यह तो घर-घर की कहानी है। मैंने तो देखा है कि यू.पी में देखिए कि कॉलेज में जाने वाले लड़के दिन-दहाड़े कॉलेज से छुट्टी पा करके और किसी भी रेलगाड़ी में चढ़ जाएगें और वहां लूट- खसोट करेंगे और उनकी माँ लोग करेंगी क्या? वो तो कुछ बोल नहीं सकती। उनको तो कोई सुनता ही नहीं। इस चीज को बदलना नहीं चाहिए और अपने घर की जो औरतें हैं उनकी सामाजिक व्यवस्था उसकी उन्नति करनी चाहिए और उसकी ओर विचार करना चाहिए।

वो अपने घर में जब शुरू होगा तो और भी जगह हो जाएगा। मुझे इसके लिए नितान्त-नितान्त तकलीफ होती है। हम तो क्या बताएं आपको, सब बेकार है। सहन नहीं होता। जब यह इमारत बनने को हुई हमने कहा कुछ भी करो, पैसा-वैसा हम दे देंगे, बिल्डिंग बनाओ किसी तरह से और जब यह बिल्डिंग बन गई तो मुझे बड़ी खुशी हुई। किसी तरह से कम से कम ऐसी एक चीज बनी है, ऐसी एक चीज बन गई कि जिससे औरतों की तरफ ध्यान आकर्षित होगा। और लोग उनको कुछ तो उनकी मुहब्बत इज्जत से रखेंगे। यह दुर्दशा मुझे नए तरीके से क्या बताना है। जो है सो है। पर आप लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में देखें कि आपके यहाँ औरतों का क्या हाल है। आपकी माँ, बहनों का क्या हाल है। और उसके बाद समाज की ओर दृष्टि करें। यह ठीक हो जाने से आपका देश बहुत उन्नति पर पहुँच जाएगा, बहुत ऊँचा उठ जाएगा। जहाँ पर औरत निर्देश करती हैं और संभालती हैं, वहाँ पर बड़े महान-महान लोग हो गए। पर यहाँ जिस तरह से घटित हो रहा है, इस छोटे से प्रयास से आशा है, मुझे आशा है, कि कुछ तो हालात ठीक होएंगे। इतने दिन से मैं जिस चीज के लिए रोती रही, परेशान थी, उसकी ओर सबका ध्यान जाए और सब लोग उस ओर देखें ।

सहजयोग से आप आत्मा को प्राप्त होते हैं, आप आत्मा को जानते हैं, पर सबके तरफ आपकी जो दृष्टि है उसमें करुणा होनी चाहिए। आत्मा को प्राप्त करके आपके अन्दर करुणा नहीं हुई तो क्या फायदा? करुणा होनी चाहिए और उस करुणा में आप देखिए, चारों तरफ आप देखकर परेशान हो जाएंगे कि यह माँएं और बहनें किस दुष्चक्र में फंस गई हैं। इसके लिए आपसे विनती है मेरी कि आप आस-पास आंख घुमा कर देखिए, घर-बाहर देखिए और औरतों की जो स्थिति बनाई हुई है उसे व्यवस्थित करने का प्रयत्न करें। हमने तो छोटा सा एक प्रयास किया है पर आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। इसलिए मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि जैसा आप मुझे प्यार करते हैं ऐसा ही आप अपनी माँ को और अपनी बहनों को प्यार करें

अनन्त आशीर्वाद।

ध्यान क्यों करना चाहिए

प्रभादेवी, बम्बई, 1 फरवरी, 1975

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सहजयोग में सबसे आवश्यक बात ये है, कि इसमें अग्रसर होने के लिये, बढ़ने के लिये आपको ध्यान करना पड़ेगा। ध्यान बहुत जरूरी है। आप और चाहे कुछ भी न करें लेकिन अगर आप ध्यान में स्थित रहें, तो सहजयोग में प्रगति हो सकती है।

जैसे कि मैंने आपसे कहा था कि एक ये नया रास्ता है। नया आयाम है, dimension है; नई चीज है जिसमें आप कूद पड़े है। आपके अचेतन मन में, उस महान सागर में आप उतर गए हैं, बात तो सही है। लेकिन इसकी गहराई में अगर उतरना है, तो आप को ध्यान करना पड़ेगा।

मैं बहुत से लोगों से ऐसा भी सुनती हूँ कि "माता जी, ध्यान के लिए हमको time (समय) नहीं मिलता है।" आज का जो आधुनिक मानव है, modern man है, उसके पास घड़ी रहती है, हर समय time बचाने के लिये, लेकिन वो ये नहीं जानता है कि वो time किस चीज के लिए बचा रहा है? उसने घड़ी बनाई है वो सहजयोग के लिये बनाई है, ये वो जानता नहीं है।

एक साहब मुझ से कहने लगे कि "मुझे लंदन जाना बहुत जरूरी है। और इसी Plane (हवाई जहाज) से जाना ही है और किसी तरह मेरा टिकट बुक होना ही चाहिये और कुछ कर दीजिये आप, और Air-India वालों से कह दीजिये और कुछ कर दीजिये...।" मैंने कहा ऐसी कौन-सी आफत है? आप लंदन क्यों जाना चाहते हैं? ऐसी कौन सी आफत है? क्या विशेष कार्य आप वहां करने वाले हैं? कौन सी चीज है? कहने लगे 'I must go there, I have to save time" (मुझे जरूरी जाना है, मुझे समय बचाना है) "time is very important" (समय बहुत मूल्यवान है), मैंने कहा आखिर बात क्या है? ये time बचा कर भागे-भागे आप वहां क्यों जा रहे हैं? तो कहने लगे "वहां एक special dinner है (विशेष भोज) वो मुझे attend करना है, और उसके बाद वहां पर Ball (Dance) है"। Time आप बचा किसलिये रहे हैं?

हर समय, आप ये सोच लीजिये कि जो हाथ में घड़ी बंधी है, ये सहजयोग के लिए और 'ध्यान' के लिये है। और सहजयोग के ही कार्य के लिये बांधी हुई है, मैंने उसी लिये बाँधी है, नहीं तो मैं कभी भी नहीं बाँधती।

जिस आदमी का पूरा ही समय सहजयोग में बीतता है, उसको जरूरी नहीं कि आप घर का काम न करें। ये जरूरी नहीं कि आप दफ्तर का काम न करें; सारा ही कार्य आप करें पर 'ध्यान में करें', ध्यानावस्थित होकर के कार्य हो सकता है क्योंकि आप को ध्यान में उतार दिया है। हरेक काम करते वक्त आप निर्विचार हो सकते हैं। और निर्विचार होते ही उस काम की सुन्दरता, उसका 'सम्पूर्ण' ज्ञान और उसका सारा आनन्द आप को मिलने लग जाता है।

समझने की बात है, ये लोग समझते नहीं हैं। इसलिये ध्यान के लिये अलग से time नहीं मिलता है, झगड़ा शुरु हो जाता है। लेकिन जब इसका मजा आने लगता है, तब आपको आश्चर्य होगा कि नींद बहुत कम हो जाती है और आप ध्यान में चले जाते हैं। निद्रा में भी आप सोचेंगे कि आप ध्यान में जा रहे हैं। कोई भी चीज छोड़ने की या कम करने की नहीं। लेकिन हमारी जो महत्वपूर्ण चीजें हैं-जिसे हम महत्वपूर्ण समझते हैं, वो बिल्कुल ही महत्वपूर्ण नहीं रह जातीं। और जिसको हम बिल्कुल ही विशेष समझते नहीं हैं, वो हमारे लिये 'बहुत कुछ' हो जाता है।

ध्यान करने के लिये एक छोटी सी चीज आपको याद रखनी चाहिये, कि जिस चीज पर ध्यान का आलाप छेड़ा जाएगा, जिस वीणा पर ये सुन्दर गीत बजने वाला है, वो साफ होनी चाहिये। आप वो वीणा नहीं हैं, आप वो आलाप भी नहीं हैं, लेकिन आप उसको सुनने वाले हैं और उसको बजाने वाले हैं। आप उसके मालिक हैं। इसलिये अगर वो वीणा कुछ बेसुरी हो, उसके अगर तार जंग खा जाएं, या उसके कुछ तार टूट जाएं, तो आपको जरूरी है कि उसको ठीक कर लेना चाहिये। अगर वो ठीक नहीं है, तो आपके जीवन में माधुर्य नहीं है। आप में वो सुन्दरता नहीं आ सकती, आप में एक अजीब तरह का चिड़चिड़ापन, अजीब तरह की रुक्षता (dryness) और विचलितता दृष्टिगत होगी।

एक सहजयोगी को एकदम निश्चित मति से ध्यान में बैठना, देखना, बहुत बड़ी चीज हो जाती है मेरे लिये। और वही मैं देखती हूँ कि कुछ सहजयोगी गहराई से अन्दर चले जा रहे हैं और कुछ सहजयोगी बहुत विचलित हैं। ये नहीं मैं कहती कि सभी लोग उतनी दशा में पहुँच सकते हैं या नहीं। लेकिन जो कुछ भी बन पड़े वो इस जीवन में करना ही चाहिये। उपार्जन का जितना भी समय है, वो इसी में बिताना चाहिये। और जो कुछ भी मिल सके, सभी इसी में मिलना चाहिये बाकी कुछ हो या नहीं।

अधिकतर लोगों को मैं ये देखती हूँ, इधर-उधर की पचासों बातें करेंगे, लेकिन ध्यान की बात, अपने मनशुद्धि की बात, अपने अन्दर के आनन्द को उभारने की बात कितने लोग, आप लोगों में से करते हैं? "इसने ये कहा, उसने वो कहा, ऐसा हो गया, ऐसा नहीं करना चाहिए था, वैसा नहीं करना चाहिये था"-ये क्या सहजयोगी को शोभनीय होगा? जब आपके पास निर्विचार की इतनी बड़ी सम्पत्ति है, तो क्या उसको पूरी तरह से उघाड़ देना चाहिये या नहीं। ये तो आप जानते हैं कि क्षण-क्षण आप उसे पा रहे हैं; और हर क्षण उसे आप खो भी रहे हैं। ये हरेक क्षण कितना महत्वपूर्ण है, इसे आप देखिये। कौन-सी छोड़ने की बात, कौन-सी पकड़ने की बात कोई भी ऐसी बात मैंने आप से आज तक तो की नहीं होगी। लेकिन ये आपका भ्रम है। आपका मन आपको भ्रम में डाले दे रहा है। तो तुम क्या घर-गृहस्थी छोड़ दोगी? मैंने घर-गृहस्थी छोड़ी है जो आपसे मैं घर-गृहस्थी छोड़ने को कहती हूँ? आप जानते हैं कि आपसे कहीं अधिक मैं मेहनत करती हूँ। लेकिन मैं थकती नहीं हूँ क्योंकि मेरे आनन्द का स्रोत आप लोग हैं। जब आपको देख लेती हूँ, बस खुश हो जाती हूँ। तबीयत सारी बाग-बाग हो जाती है।

जिस चीज का महत्व है, उधर दृष्टि रखिये। आप को पूरी तरह से मैं ये नहीं कहती कि चौबीसों घण्टे इसमें आप यहीं बैठे रहिये! जहाँ भी बैठे हैं, वहां बैठे रहिये-ये मतलब है मेरा। जहाँ भी जमे हैं वहाँ जमे रहिये, अपने स्थान पर, अपने सिंहासन पर।

कुछ लोग इसीलिये प्रगति करते हैं और कुछ लोग नहीं करते। शारीरिक बीमारियां आप लोगों की, बहुतों की ठीक हो गई हैं। बहुतों के पास बीमारियां नहीं हैं। लेकिन अभी भी मानसिक प्रश्न है।

सब बातें भूल जाइए। हर इन्सान इसका पाने का अधिकारी है। आपका जन्मसिद्ध हक है, क्योंकि ये 'सहज' है, आप ही के साथ पैदा हुआ है। लेकिन ध्यान करना ही होगा और वो भी समष्टि में लेकिन उसको organise करने की आप लोग इतनी चिन्ता न करें। उसकी व्यवस्था करने की आप इतनी चिन्ता नहीं करें। वो कार्य हो रहा है, वो हो भी जाएगा। क्या हर्ज है अगर दस आदमी ज्यादा आएं चाहे दस आदमी कम। हजार बेकार के लोग रखने से दस ही कायदे के आदमी हों सो

ही सहजयोग के लिये 'विशेष चीज' है।

आप उनमें से बनिये जो दस 'अच्छे' आदमी हैं। जो ऐसे लोग हैं, जो सहजयोग का कार्य अत्यंत प्रेम से करते हैं और उसमें मजा उठा रहे हैं, उसमें बह रहे हैं, उसमें अग्रसर हैं, और एक अग्रिम श्रेणी में जाकर के खड़े हो जाते हैं। जैसे कि हिमालय संसार में सबसे ऊँचा है। उसकी ओर सबकी दृष्टि रहती है। ऐसे ही आप बनें। आप ही में आप हिमालय बन सकते हैं और आप देख सकते हैं कि दुनिया आप की ओर आँख उठा कर कहे कि बनूँ तो मैं इस आदमी जैसा बनूँ जो सहजयोग में इतना ऊँचा उठ गया। ये अन्दर का उठना होता है, बाहर का नहीं। और मैं सबके बारे में जानती हूँ कौन कहाँ तक पहुँच रहा है।

आप ही अपनी रुकावट हैं। और कोई आप की रुकावट नहीं कर सकता। कोई भी दुनिया का आदमी आप पर मन्त्र-तन्त्र आदि 'कोई' चीज़ नहीं डाल सकता। आप ही अपने साथ अगर खराबी न करें और पहचाने रहें कि कौन आदमी कैसी बातें करता है, आप खुद ही समझ लेंगे कि इस आदमी में कोई न कोई दुष्टता आ गई है, तभी वो ऐसी बातें कर रहा है, नहीं तो ऐसी बात ही न करता वो। जैसे गलत बात वो कर रहा है, इसमें कोई न कोई खराबी है। उसमें साथ देने की कोई जरूरत नहीं। फिर चाहे वो आपका पति ही हो, चाहे आपकी वो पत्नी हो। उससे लड़ाई-झगड़ा करने की, उलझने की 'कोई' जरूरत नहीं। वो अपने आप ही ठीक हो जाएगा।

इतना ही नहीं आप ये भी जानते हैं कि आपमें कोई खराबी आ जाए तो आप किस तरह से उसे हाथ चला कर भी ठीक कर सकते हैं, क्योंकि आपके हाथ के अन्दर ही वो चीजें बह रही हैं। असल में आपकी उँगलियों में ही ये सब जो भी देवता मैंने बताए हैं ये जागृत हैं, इन पाँचों उँगलियों में और इस हथेली में, सारे देवता यहां जागृत हैं। लेकिन बहुत जरूरी है कि इन जागृत देवताओं का कहीं भी अपमान न हो। इन को बहुत ही संभाल के और जतन से रखना चाहिये। इनकी पूजा होनी चाहिये। अपने हाथ ऐसे होने चाहियें कि पूजनीय हों। लोग ये सोचें कि ये हाथ हैं या गंगा की धारा! गंगा ही की धारा बहे। जिस वजह से गंगा पावन हुई वही (वाइब्रेशन) चैतन्य, आपके अन्दर से बह रहे हैं। जिस चैतन्य शक्ति से सारी सृष्टि चल रही है, वही आपके अन्दर से बह रही है, ये आप जानते हैं।

फिर जिन हाथों से, जिन पांव से ये चीज बह रही है, उसको 'अत्यन्त पवित्र' रखना चाहिये। मेरा मतलब धोने-धवाने से नहीं है। इसमें जो भी आप काम करें, अत्यन्त सुन्दरता से, सुगमता से और 'प्रेम' से होना चाहिये। 'सबसे बड़ी' चीज 'प्रेम' है।

ध्यान में गति करना, यही आपका कार्य है, और कुछ भी आपका कार्य नहीं है, बाकी सब हो रहा है। और ***आप में से अगर कोई भी जब ये सोचने लगेगा कि मैं ये कार्य करता हूँ और वो कार्य करता हूँ, तब आप जानते हैं कि मैं अपनी माया छोड़ती हूँ और बहुतों ने उस पर काफी चोट खाई है। वो मैं करूंगी।*** पहले ही मैंने आप से बता दिया है, कि कभी भी नहीं सोचना है कि मैं ये काम करता हूँ या वो काम करता हूँ। "हो रहा है।" जैसे "ये जा रहा है और आ रहा है।" अब सब तरह से अकर्म में-जैसे कि सूर्य ये नहीं कहता कि मैं आपको प्रकाश देता हूँ। "वो दे रहा है।" क्योंकि वो एकतानता में परमात्मा से, इतनी प्रचण्ड शक्ति को अपने अन्दर से बहा रहा है। ऐसे ही आपके अन्दर से 'अति' सूक्ष्म शक्तियां बह रही हैं क्योंकि आप एक सूक्ष्म मशीन हैं। आप सूर्य जैसी मशीन नहीं हैं, आप एक "विशेष" मशीन हैं, जो बहुत ही सूक्ष्म है, जिसके अन्दर से बहने वाली ये सुन्दर धाराएं एक अजीब तरह की अनुभूति देंगी

ही, लेकिन दूसरों के भी अन्दर। उनके छोटे-छोटे यंत्र हैं, मशीनें हैं, उनको एकदम से प्रेमपूर्वक ठीक कर देंगे।

ये जो शक्ति है, ये प्रेम की शक्ति है। इस चीज़ का वर्णन कैसे करूं मैं आप से? इस मशीन को ठीक करना है, तो आप किसी भी चीज से रगड़-मगड़ कर के ठीक कर दें, कोई आप screw (पेच) लगा दें, तो ठीक हो जाएगा। लेकिन मनुष्य की मशीन जो है वो प्रेम से ठीक होती है। उसको बहुत ज़ख्मी पाया है। बहुत ज़ख्म हैं उसके अन्दर में। बहुत दुखी है मानव। उसके ज़ख्मों को प्रेम की दवा से आपको ठीक करना है। जो आपके अन्दर से बह रहा है, ये वाइब्रेशन सिर्फ "प्रेम" है। जिस दिन आपकी प्रेम की धारा टूट जाती है, वाइब्रेशन रुक जाते हैं।

बहुत से लोग मुझसे कहते हैं "माता जी हमको बाधा हो गई। हमारे हाथ से वाइब्रेशन बंद हो गए।" आपके अन्दर से प्रेम की धारा टूट गई। प्रेम का पल्ला पकड़ा रहे, सिर्फ प्रेम का-वाइब्रेशन बहते रहेंगे। क्योंकि ये ही प्रेम परमात्मा का जो है, वही बहे जा रहा है। और वही बह रहा है।

इतनी अद्‌भुत अनुभूति है, इतना अद्‌भुत समां आया हुआ है। क्या ये सब व्यर्थ हो जाएगा क्योंकि आपने इसमें पूरी लगन से मेरा साथ नहीं दिया?

हरेक बात आप खुद भी जान सकते हैं, और न जानने पर मैं भी आपसे हरेक बात बताने के लिए हमेशा तैयार रहती हूँ। लेकिन थोड़ा-सा इसमें एक आप से सुझाव देने का है, कि आप इसके अधिकारी तो हैं या नहीं, इसे सोच लीजिये। क्योंकि आप मेरे ध्यान में आते हैं-जैसे मराठी में बहुत से लोग कहते हैं,-"जमून आले" इससे आप अधिकारी 'नहीं' होते। आप अधिकारी इसलिये होते हैं, कि आपके अन्दर वो गहराई आ गई।

जैसे एक गागर है। जितनी गहरी होगी, उतना पानी उसमें समा जाएगा। अब अगर वो नहीं है तो उसमें पानी डालने से क्या फायदा, वो तो सब पानी निकल जाएगा। अपनी गहराई आप ध्यान से बढ़ाते हैं। ध्यान पर स्थित होइये। ध्यान में जाइये। ध्यान में जो विचार आ रहे हैं उनकी ओर देखते ही आप निर्विचार हो जाएंगे। निर्विचार होते ही उस अचेतन मन में-'अचेतन', सुप्त चेतन नहीं कहेंगे-अचेतन मन में अपनी चेतना के सहित आप जाएंगे। आपकी चेतना, आपकी consciousness खत्म नहीं होती। वहाँ आप चेतना को जानेंगे। ये पहली मर्तबा इंसान के शरीर के अन्दर हुआ है, कि आप अपना भी शरीर जानते हैं और दूसरों का भी जानते हैं। और दूसरों के बारे में आप सामूहिक चेतना से जानते हैं कि इसके अन्दर क्या हो रहा है।

इसका महत्व अभी बहुत कम लोग जानते हैं। क्योंकि सब लोग मुझसे कहते हैं कि,"माता जी, सबसे अगर आप रुपया लें, तो सब लोग समझेंगे क्योंकि लोग पैसों को बहुत मानते हैं।" पैसा एक भूत है। पैसा लेने से अगर आप इसका महत्व समझें तो बेहतर है कि आप न ही समझें। कोई भी पैसा देने से इसका महत्व आप नहीं समझ सकते। अपने को ही पूरी तरह से देना होगा। और वो देने में कितना मिलने वाला है। जो आप सात गुने खड़े हुए हैं वो तो एकदम साक्षात मिल जाएगा।

ध्यान में समष्टि रूप में ही आप को आना होगा, ये जरूरी है। चाहे महीने में एक बार ही आएं, लेकिन जहाँ सात लोग बैठते हैं, वहीं बैठ कर ध्यान करना चाहिये। चाहे आप अपना एक छोटा ग्रुप बना लें जहाँ आप हफ्ते में एक बार मिल सकें और एक बार बड़े ग्रुप में मिलें। क्योंकि मैंने आपसे बताया था कि ये "विराट" का कार्य है।

जैसे शरीर का एक-एक अंग-प्रत्यंग जो है, उसको जागना है। जितना जागृत होता जाएगा, वैसे-वैसे दीप

जलते जाएंगे। आप लोग जो घर में बहुत भी ध्यान करते रहें, मेरे आने के बाद आप जानते हैं, कि आप लोगों ने पाया कि कुछ प्रगति नहीं हुई। लेकिन यहाँ छः-सात आदमी जो रोज आते थे और ध्यान करते थे, उन्होंने बहुत प्रगति कर ली।

ध्यान में अगर आप की आँखें फड़क रही हों, तो समझ लेना चाहिये कि आज्ञा चक्र पर कोई चोट हो रही है। उसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। अपना आज्ञा चक्र अगर खराब है तो उसे ठीक कर लेना चाहिये। क्योंकि आपका आनन्द कम होता है।

आपका शरीर अगर हिल रहा हो ध्यान में, और आप आराम से बैठ नहीं सक रहे हों, तो समझ लेना चाहिये आपके मूलाधार पर ही चोट हो गई है ये और भी dangerous situation (खतरनाक परिस्थिति) हो जाती है। मूलाधार पर जब चोट हो जाती है, उसका भी इलाज करा लेना चाहिये। वो भी लोग जानते हैं, किस तरह से मूलाधार चक्र को ठीक करना चाहिये।

जानने को तो आप लोग मेरे लैक्चर सुन-सुन के सब शास्त्र जान लें, लेकिन मैं देखती हूँ कि जो लोग थोड़े ही दिन पहले आए हैं, वो आप लोगों से कभी-कभी बहुत जोरों में जल्दी आगे बढ़ जाते हैं। क्योंकि ये पढ़ाने-लिखाने की बात है ही नहीं।

आप के हाथ अगर थरथरा रहे हैं, कंपकंपा रहे हैं, तो भी समझ लेना चाहिये कि कुछ न कुछ आपके अन्दर बहुत बड़ी खराबी हो गई है। उसमें जूते मारने का इलाज सबसे अच्छा है। कल एक साहब आपने देखा होगा कि वहाँ कहने लगे कि "माता जी, मैं वहाँ एकदम जड़ हो गया।" फिर मेरे सामने आकर यूँ-यूँ करने लगे। उनसे मैंने पूछा कि तुम्हारे गुरु कौन हैं? तो कहने लगे कि "एक भागवत् सा. हैं पूना में।" तो मैंने कहा वो क्या करते हैं? तो कहने लगे कि "उन्होंने एक spiritual centre बनाया हुआ है, उन्होंने मुझे दीक्षा दी।" मैंने कहा दीक्षा क्या दी? ये हिलने की दीक्षा दी? कहने लगे कि "मैंने सोलह साल में बीमारियाँ उठाई, मेरी नौकरी चली गई, ये हो गया, वो हो गया।" मैंने कहा तुम्हारे अक्ल नहीं आई? अगर तुम्हारे गुरु हैं, तो तुमको ये सब होना नहीं चाहिये।

कितने रुपये दिये? "अभी तक 5-6 हजार रुपये दे चुका हूँ centre को।" मैंने कहा अच्छा 5-6 हजार रुपये देकर के सारी बीमारियाँ तुमने अच्छे से मोल ले लीं। फिर उसके भूत-वो जो भागवत् साहब थे उनको जूते मारे और वो जो उनका centre था, उसको भी जूते मारे तब उनका हाथ ठहरा और वो ठीक हो गए-ये तो आप ही के सामने सब हुआ था, बहुत से लोग वहाँ थे।

लोगों से साफ-साफ बात कर लेनी चाहिए कि आपके कोई न कोई गुरु हैं, आपके अन्दर कोई न कोई बाधा है। कोई न कोई गड़बड़ है, उसमें कोई बुरा मानने की बात नहीं।

लेकिन मैं देखती हूँ कि एक को जरा सी भी बाधा पकड़ रही हो तो दूसरा बाधा वाला बराबर, उसके साथ में खड़ा हो जाएगा। लाइन से वहाँ खिंच जाते हैं एक साथ। और पता हो जाता है ये सारे बाधा वाले साथ बैठे हैं। असल में ऐसा बैठना नहीं चाहिये।

सब को अलग-अलग बैठना चाहिये, अधिकतर; जैसे कि कोई ग्रुप बना लेते हैं। "बहुत" गलत बात है। जैसे कि ठाणे वाले आए तो ठाणे वाले साथ बैठ गए, फलाने आए-ऐसा नहीं। अलग-अलग बैठिये। बहुत जरूरी है। सब इकट्ठे होकर मत बैठिये।

दूसरी बात ये है कि जैसे कोई बुड्ढे हैं, उम्र में ज्यादा हैं, बुजुर्ग हैं, कुछ बीच के हैं, कुछ छोटे हैं। छोटे बच्चों को तो ऐसी कोई विशेष बात नहीं है लेकिन जो बीच के और ये लोग हैं, ये सब अलग-अलग बैठें। जो वृद्ध हैं, वो जवान लोगों के साथ बैठें। जो जवान हैं वो बूढ़ों के

साथ बैठें। चार पाँच जवान इकट्ठे हो जाएँ तो भी आफत हो जाएगी। और चार-पाँच बूढ़े इकट्ठे हो जाएँ तो भी आफत हो जाएगी। आप देख लीजिए; होता है! जवानी और बुढ़ापे की जो समझ है, दोनों बाँटने की चीज़ है। वो भी सामूहिक चेतना में आप बाँट सकते हैं। बड़ों को समझदारी चाहिए, wisdom चाहिये; जरूरी है। "बहुत" wise होना चाहिये। बड़प्पन चाहिये, बड़ा दिल चाहिये। और छोटों को मानना चाहिये, बड़ों को मानना चाहिये। और छोटों में activity (कार्यवाही) ज्यादा होनी चाहिये, बड़ों से। बड़े आदरणीय हों तो उनका आदर होगा। पर बड़ों को आदरणीय होना चाहिये और छोटों को बड़ों का आदर करना चाहिये।

अनादर तो वैसे भी एक सहजयोगी का दूसरे सहजयोगी से करना नहीं, क्योंकि आप लोग सब देवता स्वरूप हैं। ये सब आप ध्यान में समझ सकते हैं। आपसी बातों से, दूसरों के बारे में आंतरिकता से अगर आप सोचें तो आप फौरन समझ लेंगे कि "अरे भई उनका तो ये आज्ञा चक्र पकड़ा है, इसीलिये ऐसा हो रहा है।" "अरे भई उनका तो हृदय चक्र पकड़ा है, इसीलिये ऐसा हो रहा है।" "इसीलिये स्वर ठीक से नहीं निकल रहे हैं" आपको "बुरा" नहीं लगेगा। दूसरों को भीं बुरा नहीं लगेगा।

लेकिन बुरा लगना, यही "बहुत बड़ी" बाधा है। मेरी भी बात का लोग बुरा मानते हैं तब फिर औरों का क्या करेंगे। मेरी कोई भी बात का बुरा नहीं मानना चाहिये। मैं आपके बिल्कुल हित के ही लिये सारा काम करती हूँ, ये आप जानते हैं। कोई भी बात की चर्चा होते वक्त ये देखना चाहिये कि हम सिर्फ यही चर्चा कर रहे हैं न कि 'हमारी कुण्डलिनी कहाँ है, 'हम कहाँ जा रहे हैं, कैसे उठ रहे हैं'। बाकी सब चर्चाएं व्यर्थ हैं। 'हम धर्म में कहाँ तक जागृत हो गए हैं। हम कितना पा गए हैं, कितना आनन्द परमात्मा का लूट रहे हैं', ये ही अनुभव आपस में बताना है। और इसी को आपस में जानना है। और बाकी सब व्यर्थ है। बाकी सब चीजों में मौन ही बेहतर चीज है। जब इस तरह के सहजयोगी हो जायेंगे तो बड़ा अन्तर हो जाएगा। "बहुत बड़ा अन्तर"।

सहजयोग का प्रतिबिंब आपसे फैलने वाला है। और जिससे प्रतिबिंब पड़ता है तो एकदम 'साफ' चीज होनी चाहिये। और उसकी प्रतिबिंबित होने की शक्ति अगर पूरी तरह से जाग उठे तब कोई भी मुश्किल नहीं रह जाती। सहजयोग और किसी चीज़ से नहीं-किसी भी चीज से नहीं-आप बड़े-बड़े organisations (संगठन) कर दीजिये, आप बड़े-बड़े मंत्र-जागरण कर दीजिये, और गाने हो जाएं और music (संगीत) हो जाए-इससे नहीं होने वाला। इन सब चीजों से कुछ भी नहीं होने वाला है।

मैंने तो इतने कभी पार लोग देखे नहीं जितने आज देख रही हूँ। ये अहो भाग्य है हमारा कि ऐसे मैं देख रही हूँ। किसी भी युग में इतने पार लोग, मेरी दृष्टि के सामने नहीं रहे। ये "परम्" भाग्य की बात है।

लेकिन जैसा कि मैं कहती हूँ कि modern time (आधुनिक युग) में पूरे साधु कोई नहीं हैं। आप ही लोग पहले बहुत बड़े साधु थे और संसार में रमे हुए नहीं थे, जंगलों में रहते थे। आज आप ने संसार ले लिया है और संसार में आप रमे हुए हैं। लेकिन अपनी साधुता में उतरते ही क्या मज़ा आ जाएगा! इस गंगा-जमुना में ही एक सरस्वती बहना शुरु हो जाएगी।

ध्यान में जाते वक्त किसी भी तरह की बाहर की आवाज आपको भूल जाती है। अगर कान में भी आप उंगली डालें और सहस्रार अगर आपका पूरी तरह से खुला हुआ है-तो इसकी पहचान है-पूरी तरह से आप आँख कान को बंद कर लें, आप सुन सकते हैं। इसीलिये जो वो लड़के आए थे, जो सुनते नहीं थे, उनको

थोड़ा-थोड़ा सुनाई देने लग गया।

अगर आपका सहस्रार खुल जाए, तो limbic area में-डाक्टर लोग सब जानते हैं कि वहाँ पर subtle points होते हैं, subtle centres (सूक्ष्म केन्द्र) होते हैं, उनको excite करने से वही काम होता है, जो नाक, कान, मुँह और सब अपने शारीरिक जितने भी organs (अंग) हैं, उससे होता है। उसी सहस्रार को हम जागृत कर लेते हैं जो सारे शरीर को यहाँ संभाले हुए हैं और आपको सारे ही-जैसे सुगंध है-हरेक चीज़, नाक की कोई जरूरत नहीं है आपको। फिर आप श्वास भी यहाँ से ले सकते हैं। सारा का सारा ही शरीर अगर भ्रष्ट हो जाए तो भी आप यहाँ से सब काम कर सकते हैं। लेकिन (भ्रष्ट) होता नहीं। शरीर तो आपका खिलते ही जा रहा है। शरीर तो सुन्दर होते ही जा रहा है। बीमारियाँ तो भाग ही गई हैं। वो तो सब चीज ठीक हो ही गई। कोई थोड़ा-बहुत हो भी जाते हैं, तो ठीक हो जाते हैं।

ध्यान में बढ़ने के लिए एक गुण बहुत जरूरी है। बहुत ही जरूरी है। उसको कहते हैं innocence-भोलापन, स्वच्छ, एक छोटे बच्चों जैसा-innocent child, इसीलिये आपने देखा है कि छोटे बच्चे फट-से पार हो जाते हैं। चालाक लोग, cunning लोग, अपने को जो बहुत होशियार समझते हैं, बस उनकी परमात्मा की तो इच्छा नहीं होती, बस अपनी होशियारी दिखाते रहते हैं, वो नहीं पाते। "पूर्णतया" innocent होना चाहिये।

किसी को दुख देना भी, किसी को तकलीफ देना भी innocence के "विरोध" में है। इतनी भरी हुई खोपड़ियों के ऊपर बैठ करके क्या हम innocent हो सकते हैं? किसी के हृदय में चोट लगे, वो आदमी innocent नहीं हो सकता। innocent का मतलब ही ये होता है कि फूल की जैसे खिली हुई चीज़ जो सिर्फ दुनिया को सुगंध ही देती है। किसी को भी तकलीफ या दुख देना नहीं चाहिये। हाँ, कभी-कभी लोग उनकी मूर्खता की वजह से किसी चीज़ को दुख मान लेते हैं-वो ठीक है। पर अपनी तरफ से आप निश्चित हो करके कभी भी किसी को दुख या तकलीफ नहीं देना चाहिए।

आपके पास तो innocence का switch है नहीं। मैंने देखा था कि देखें आप लोगों ने ऐसा कोई switch बनाया है। अगर हो तो वैसे innocence का switch दबा लीजिये तो आप देखेंगे कि आपका आज्ञा चक्र एकदम "साफ" हो जाएगा। पर innocence का switch आप लोगों के पास है नहीं; दया का switch है नहीं, शांति का switch है नहीं। ये सब switches आपके अन्दर अभी तक लगे नहीं हैं। पहले आप सब अपने देवता जगा दीजिये, अन्दर में जो बैठे हुए हैं, फिर उसके बाद एक-एक सारे सब के switch भी लग जाएंगे।

पर सबसे आसान innocence का switch लगाना है, क्योंकि हम लोग एक बार बहुत innocent थे जब हम लोग पैदा हुए थे, जब छोटे थे। छोटे बच्चों के साथ रहने से innocence आता है। उनकी बातें याद करने से बहुत innocence आता है। जो लोग innocent हो जाते हैं, वो परमात्मा के राज्य के अधिकारी हो जाते हैं।

ध्यान में सिर्फ आप ही अपनी ओर विचार करें कि मेरा मन इस वक्त में कौन-सी चालाकी में लग रहा है इधर-उधर। महामूर्खता का कार्य कर रहा है। इतना बस देखते ही आप "निर्विचार"- "निर्विचारिता"-यही innocence है।

आप लोग अब जब ध्यान में जाएंगे, बहुत देर तक ध्यान नहीं करेंगे हम लोग। लेकिन ध्यान में जाते वक्त आप सिर्फ ये देखें कि आप का कौन-सा चक्र पकड़ रहा है। क्योंकि आप लोग जो पार हो चुके हैं आप को अच्छी तरह से मालूम है। उंगलियों पर आपको जान

पड़ेगा, कौन-सी उंगली थोड़ी-सी जल रही है। जो भी आपकी उंगली जल रही है, उस पर आप बंधन डाल लें तो वो छूट जाएगी। अगर आपकी उंगलियां ज्यादा ही जल रही हों तो हाथ झटक लीजिये, वो छूट जाएगा, आप जानते हैं। बंधन डाल दीजिये।

लेकिन निर्विचारिता की ओर रहें और चित्त जो है सहस्रार की ओर रखें। और जो लोग आज नए आए हैं उनको भी देखना होगा कि वो पार हुए हैं या नहीं। उनको क्या खराबी है, उनको क्या तकलीफ है, वो निकाल देंगे। ये सारी तकलीफ जो है, बाह्य है।

ये भी एक बड़ा भारी समर्पण है जहाँ शक्ति दोनों side (तरफ) से आती है left and right sympathetic nervous system का जो यहाँ ये expression है, उस रास्ते से। और इसके बीच में ही सुषुम्ना नाड़ी है। ऐसा करते ही सुषुम्ना नाड़ी अन्दर चलना शुरु हो जाती है। लेकिन ये जागृत होनी चाहिये। अगर ये जागृत नहीं है, इसका मतलब सुषुम्ना चल नहीं रही है। और जागृत का मतलब ये है कि आपके अन्दर सारी उंगलियों में से धीरे-धीरे ठण्डी-ठण्डी ऐसी हवा आने लगेगी। अगर आपके अन्दर ऐसी ठण्डी-ठण्डी हवा जा रही है; पूरी तरह से आप 'निर्विचार' हैं उस 'तरण्य में' ध्यान में हैं तो आप बढ़ रहे हैं, आगे आप चले जा रहे हैं। जैसे कि आप aeroplane में बैठते हैं, आपको पता नहीं आप कहाँ जा रहे हैं, लेकिन आप कहीं पहुँच जाते हैं।

जब तक हम यहाँ पर हैं, ये जरूरी है कि जो सहजयोगी आप लोग हैं, ज्यादा इसमें part (हिस्सा) लें और आगे बढ़ें। और जाने के बाद भी अपना समष्टी-रूप खराब न करें। आपसी बेकार की बातें बोलने पर आप कुछ न कुछ दंड देखेंगे। जिसने भी कोई सहजयोग के सिवाय, अन्दर की बात के सिवाय बाहर की बात जरा भी करी, उसको दंड। बाहर की कोई भी बात नहीं करनी। अंदर ही की बात करें।

अपने-अपने चक्रों को साफ करिये। उसमें 'कोई' शर्म की बात नहीं है। जिसके-जिसके चक्र पकड़े हैं वो बाहरी चीज है। बिल्कुल हिम्मत से सारी सफाई करके और नीचे डाल दें। जिसके भी हाथ जल रहे हैं, निकाल दें। हमारे भी हाथ जल रहे हैं-निकालियेगा नहीं तो क्या करियेगा? बैठ भी नहीं सकते।

और भी तरीके आप जानते हैं बहुत सारे, ध्यान में अपने को सफाई करने के। इसमें कोई बुराई की बात नहीं है, अगर मैं किसी से कह दूँ कि आप पानी में पैर डाल कर बैठिये और इस तरह से निकालिये। इसमें कौन-सी बुराई की बात है? इसमें क्या बुरा मानने की बात है? कितना पागलपन है, किस बात पर लोग बुरा मान जाते हैं? वो सोचते हैं "माता जी ने क्या कह दिया।" आप क्या कोई बड़े भारी saint (सन्त) हैं? यानि बड़े-बड़े saint तक ये काम करते हैं, आपको पता नहीं है।

जैसे मैंने कबीर दास जी के लिये कहा कि "दास कबीर जतन से ओढ़ी" कबीर दास भी अपने लिये कहते हैं कि "मैंने जतन से ओढ़ी भई"-जो कि इतने बड़े महापुरुष थे। फिर आपको इसमें बुरा मानने की कौन-सी बात है?

जरा-सा किसी से कहा कि भई मटका लेकर आओ, तो बुरा मान गए; फिर इतना बड़ा-बड़ा मटका लेकर आते हैं!

'बेकार' की बातें, 'मूर्खों' जैसी अपनी जो कल्पनाएं हैं अपने बारे में उसको "त्याग" दीजिये। "बचकानापन" है, बचपना नहीं। child-like होना चाहिये childish नहीं।

अब हम लोग ध्यान में जाएंगे। मैंने जैसे कहा है पहले अपने को प्रेम से भर लो। आप जानते हैं मैं आपकी माँ हूँ। पूर्णतया आप इसे जानें कि मैं आपकी माँ

हूँ। और माँ होने का मतलब होता है कि सम्पूर्ण security है, संरक्षण है। कोई भी चीज़ गड़बड़-शड़बड़ नहीं होने वाली। आप मेरी ओर हाथ करिये। और धीरे-धीरे से आँख बन्द करके और अपने विचारों की ओर देखिये, आप निर्विचार हो जाएंगे। आपको कुछ करने का है ही नहीं। आप जैसे ही निर्विचार हो जाएंगे, वैसे ही आप अन्दर जाएंगे।

पहले अपने से इतना बता दो कि आज से निश्चय हो कि किसी को कोई सी भी चोट मैं नहीं पहुँचाऊंगा। और सब को प्रभु तुम क्षमा कर दो, जिन्होंने मुझे चोट पहुँचाई हो। और मुझे क्षमा करो क्योंकि मैंने दुनिया में बहुत लोगों पर चोट की है।

आप जो भी कहेंगे वही परमात्मा आपके साथ करेगा। आप उससे कहेंगे कि "प्रभु शांति दो", तो तुम्हें शांति देगा। लेकिन आप मांगते नहीं हैं शांति। "संतोष दो", तो वो तुम्हें संतोष देगा, तो वो मांगते नहीं हैं।

"मेरे अंदर सुन्दर चरित्र दो" तो वो चरित्र देगा।

अब प्रार्थना का अर्थ है, क्योंकि आपका connection हो गया है परमात्मा से।.....

....."मेरे अन्दर प्रेम दो। सारे संसार के लिये प्रेम दो।"....."मुझे माधुर्य दो, मिठास दो।"

जो भी उनसे मांगोगे, वो तुम्हें देगा। और कुछ नहीं मांगो। अपने लिये ही मांगो।....."मुझे अपने चरण में समा लो।"....."मेरी बूँद को अपने सागर में समा लो।"

"जो भी कुछ मेरे अन्दर अशुद्ध है, उसे निकाल दो।" परमात्मा से जो कुछ भी प्रार्थना में कहोगे, वही होगा।....."मुझे विशाल करो। मुझे समझदार करो। तुम्हारी समझ मुझे दो। तुम्हारा ज्ञान मुझे बताओ।"

"सारे संसार का कल्याण हो, सारे संसार का हित हो। सारे संसार में प्रेम का राज्य हो। उसके लिये मेरा दीप जलने दो। उसमें ये शरीर मिटने दो। उसमें ये मन लगने दो। उसमें ये हृदय खपने दो।"

सुन्दर से सुन्दर बातें सोच करके उस परमात्मा से मांगें। जो कुछ भी सुन्दर है, वही मांगो तो मिलेगा। तुम असुन्दर मांगते हो तो भी वो दे देता है। बेकार मांगते हो तो भी वो दे ही देता है। लेकिन जो असली है उसे मांगो, तो क्या वो नहीं देगा?

यूँ ही ऊपरी तरह से नहीं, "अन्दर से", आंतरिक हो करके मांगो।

"पाने के बाद"

(सात चक्रों का वर्णन)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

दिनांक 25.11.73

आपको कुछ भी नहीं करने का है सहज में हो जाता है सहज शब्द का अर्थ रोजमर्रा भाषा में सहज माने आसान। लेकिन सहज शब्द जहाँ से आया वो 'सह' और 'ज' के साथ मिले हुए सहज से आया। माने आसान है मतलब जो हमारे साथ जो पैदा हुई आँख है, हमारे साथ जो पैदा हुई वो हमारी नाक है, इसका हमें कुछ देखना नहीं पड़ता। इस कारण इसमें कोई भी प्रतिबिम्ब पूरा नहीं पड़ता। अगर कोई ऐसा सरोवर हो कि जिसमें अन्दर कोई भी लहर उठ नहीं रही तो उसके चारों तरफ फैला हुआ उसका सौन्दर्य, पूरा का पूरा अन्दर प्रतिबिम्बित होता है इतना ही नहीं सब पूरा तादात्म्य होता है, इसी तरह से जब आप किसी भी सुन्दर दृश्य को देखेंगे, परमात्मा की रचना की ओर दृष्टि करेंगे आप निर्विचार हो जाएंगे निर्विचार होते ही उसके अन्दर की जो आनन्द-शक्ति है वो आपके अन्दर पूरी प्रतिबिम्बित होगी इतना ही नहीं आप ने उसमें पूरी तरह से तादात्म्य पा लिया है। इसी तरह से अनेक विधि परमात्मा ने आपके लिए श्रृंगार सजाए हैं, अत्यन्त सौन्दर्य चारों तरफ फैला हुआ है। उस सौन्दर्य के सूत्र में उतरने से ही आपके अन्दर आनन्द की उत्पत्ति हो जाती है। इस आनन्द को आप देखने के लिए ही पैदा हुए हैं, अपने को बेकार में दुखी बनाने के लिए नहीं।

इस तरह से बहुत से लोगों ने पूछा है हमें अब आगे क्या करना है। अब क्या करना होगा सिर्फ देखना होगा। जब आप सिनेमा देखने जाते हैं एक दर्शक की दृष्टि से तो आप सोचते हैं कि हमें क्या करना है, देखना ही है, देखते ही रहना है, आवागमन देखना है, पेड़ों का बढ़ना देखना है, चिड़ियों का चहचहाना देखना है। हरेक चीज़ की मंगल पवित्रपूर्ण मधुर मुस्कान हर चीज़ में लहलहाती परमेश्वर की आशीर्वाद की वाणी को सुनना है और कुछ भी नहीं करना है। बस यहीं तक देखते देखते आप अपने में ही विभोर हो जाइए। अब सिर्फ देखने का होता है कुछ करने का सवाल ही नहीं उठता। शरीर के स्वास्थ्य के लिए भी आपको अब बहुत कुछ नहीं करना जैसे कि आज तक आप बहुत से योग-आसन आदि करते हों तो बहुत योगासन आदि करने की जरूरत नहीं, एक आध हल्का योगासन करें तो कोई हर्ज नहीं लेकिन अधिकतर अपने शरीर का बहुत ख्याल रखें, इसी शरीर में उस परमात्मा का वास है, इसकी इज्जत, इसके साथ कोई भी ज्यादती करने की जरूरत नहीं। हाँ शराब आदि चीजों से ग़र आप अपना छुटकारा करना चाहते हैं तो बहुत आसान है। अब आप कोई भी चीज़ का निश्चय कर लें वो काम हो जाएगा।

आपमें conditioning नहीं आएगी, ग़र आपने तय कर लिया है कि हमने शराब नहीं पीना है तो छूट जाएगी शराब। शराब इन्सान इसलिए पीता है कि अपने से भागना चाहता है, एक शराब के सिवाय और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसके लिए मैं मना कर रही हूँ। लेकिन शराब जरूर ऐसी चीज़ है क्योंकि वो आपकी चेतना को खराब कर देती है। शराब की ओर देखते साथ शराब छूट जाती है क्योंकि आप स्वयं को इतना प्यार करने लगे हैं, अपने आप इतना मज़ा आ जाएगा। ग़र आपमें से किसी को जेल हो जाए तो आप कहेंगे कि वाह भई यह तो बड़ा अच्छा हुआ वहाँ बैठकर ध्यान करेंगे। मनुष्य अपनी ही मौज में ऐसा रहेगा कि उसको फिर शराब-वराब की वो कहाँ, सिगरेट भी अपने आप छूट जाती है कुछ कहने की जरूरत नहीं। अपने आप ही सब कुछ छूट जाता है। हमारे यहाँ तो बम्बई में ये हालत है कि माचिस नहीं तो

अपने घर से ले जानी पड़ती है धूपबत्ती जलाने के लिए, कोई भी सिगरेट नहीं पीता। बड़े-बड़े सिगरेट पीने वाले पता नहीं कैसे सिगरेट छोड़ दी! कुछ लोग तो रम्मी खेलते थे वो कहते हैं कि वो रम्मी हमारी छूट गई। उसमे मज़ा आ गया, ज़िन्दगी में मज़ा आएगा, इन्सान में मज़ा आएगा, उनके problems में भी मज़ा आएगा, उनके साथ जूझने में मज़ा आएगा। अब आप इन्सान के साथ एक होना चाहिए। अब ये भी ख्याल रखना चाहिए अब हमें जूझना नहीं हैं। अब वो नहीं रहे जो पहले थे, एकदम बदल गए। अब दूसरे हमारे साथ बदले नहीं, इनकी ओर देखना है। उसमें घबराने की कोई बात नहीं क्योंकि आप भी तो वैसे ही थे। बहुत से लोग सोचते हैं कि हम बड़ी भारी position के हैं, बड़ी उनकी position खोपड़ी पर चढ़ी है। कोई सोचते हैं हम पैसे वाले हैं, कोई सोचते हैं बड़े भारी धार्मिक आदमी हैं। सोचने दीजिए। सब पागल हैं, उनकी तरफ देखिए ही नहीं। सब पागलखाने में अपने को बहुत अक्लमंद समझते हैं। जब उस पागलखाने में आप थे आप भी यही सोचा करते थे। वो सब पागलपन की बातें हैं। एक दम से जो सारी मिथ्या चीज़ें हैं धीरे-धीरे छूट जाएंगी। जब आप जान जाएंगे कि सत्य क्या है। अब आपके अन्दर वो शक्ति आ गई। अब आपमें ऐसी शक्ति आ गई जिसके कारण आप कोई सी भी बात सोचेंगे, उस सोच विचार का आप पर असर नहीं आता। जैसे कि कोई आदमी कहे कि मुझे गुस्सा नहीं करना तो बड़े अपने से पूछो अरे पागल ज़रा गुस्सा तो करो। आप शीशे के सामने खड़े होकर अपने को कहो ज़रा गुस्सा तो करो। हँसी आएगी। जब भी आप गुस्सा करिएगा अन्दर से हँसते ही रहिएगा आपको पूरी समय हँसी ही आती है। गुस्से में आप लपटिएगा नहीं। लपट जाते हैं, किसी भी चीज़ में आप लपट नहीं सकते। सभी चीज़ काम, क्रोध , मद, मत्सर आदि सब चीज़ें जो हैं इस विषय की एक अपनी एक खेल है, उसे आप देखिए। उसका एक खेल है उसे आप देखते रहिए। आप दूर रहें आप दूर से इसे देखते रहें। क्योंकि आप पहले बाहर थे, वो नहीं रहे और अब आप अन्दर हैं। **सहज में यही करना है कि अपने को अन्दर रखना है बाहर नहीं। दूसरों से बात करते वक्त अन्दर रहें, माने निर्विचार।** किसी से भी बात करें, किसी से भी कुछ कहना हो तो पहले निर्विचार हो जाएं। निर्विचार होते ही आप उनके अन्दर उतर जाते हैं। फौरन उनका भी रंग बदल जाएगा और आपका तो बदला हुआ है ही। गर आप भी बाहर से वैसे आ जाएं तो हो सकता है आपको वो पनपा दे। अभी आप अन्दर बाहर हो सकते हैं क्योंकि वजह यह है कि अभी अभी कहीं अन्दर आप पहुँचे हैं, जैसे कि आप traffic में से गुज़र कर आ रहे हैं और आपको पहाड़ी पर बिठा दिया है, लेकिन आपको traffic की आदत हो गई है तो आपका ख्याल बनता है अरे मैं तो traffic में हूँ। फिर आप देखिए कि मैं कहाँ खड़ा हूँ, पता हो जाएगा कि आप कहाँ खड़े हैं। यही Self Realization है। पहली जो चीज़ है कि संसार का सारा सौन्दर्य आपमें तादातम्य है। आप जानिए, यह नई चीज है। पर बड़ी अद्भुत, विश्वसनीय, कोई विश्वास ही नहीं करता है पर है बात, ऐसा ही कुछ है। आपको खुद ही लगने लगा कि आप साक्षी हैं। घर में कोई बीमार पड़ जाए, अब सारा घर दौड़ेगा, आफत करेगा। कोई झूठ, कोई सच, कुछ नहीं, कुछ करने की ज़रूरत नहीं। आप अपने को देखिए, आपको बराबर सूझेगा कि आपको क्या करना है। आपको जो मन में आए वो करिए आपके मन में आए सर पर हाथ रखिए, सर पर हाथ रखिए पैर पकड़ने का मन है, पैर पकड़िए। जो भी आपके मन में आ रहा है सबके लिए आ रहा है, उसको आप करें।

दूसरी चीज है सत्य। सत्य बोलें या झूठ बोलें। झूठ क्या है, सत्य क्या है? बहुत सा सत्य जो होता है मनुष्य का बनाया हुआ होता है। मनुष्य का बनाया हुआ सत्य कोई सत्य नहीं है। बहुत बार बहुत सा जो झूठ दिखाई देता है वो महासत्य होता है, इसलिए उसका निर्णय आप मत कीजिए। आप सिर्फ बोलिए। आप अपनी निर्विचारिता पर बोलें। आप अपनी स्थिति पर बोलें। लोगों से डंके की चोट पर कहना पड़ेगा कि हाँ यह ठीक है, यही सत्य है, यही होना चाहिए इसमें डरने की कोई बात नहीं। दिखने के लिए शायद वो लोगों को झूठ लगे, लोग आप पर हँस भी सकते हैं। हम पूना में गए थे वहाँ कुछ ऐसे महामूर्ख लोग थे उन्होंने पेपर में कहीं निकाला कि ये लोग तो हाथ को ऐसे-ऐसे श्रीमाताजी कर रही थीं तो वो सबको मिसमराइज़ कर रही हैं। उनसे एक साहब ने सवाल पूछा, वहाँ पर कि उनको क्या ज़रूरत पड़ी मिसमराइज़ करने की? क्या उनको कोई धंधा नहीं? कहने लगे हम तो मिसमराइज़ हो नहीं सकते, कहने लगे आप हो ही नहीं सकते। उनके तरह का मिसमराइज़ होना पड़ेगा। इतने तरह-तरह के लोग हैं दुनिया में जिनको समझ नहीं है। क्योंकि आपके अन्दर ये चैतन्य आ गया, आपके अन्दर ये बह रहा है, आपने इसे देखा हुआ है, इसकी पुष्टि की आपको जरूरत है, लेकिन आपने तेजस्विता नहीं पाई। यही आपमें और बड़े-बड़े साधु सन्तों में यही अन्तर है। आपने वो तेजस्विता अभी पाई नहीं जो प्रखर होती है, जो अपनी शक्ति पर अटूट खड़ी रहती है, जो डरती नहीं, ये कहने के लिए कि यही सत्य है बाकी सब असत्य है और मिथ्या है। वो क्राइस्ट जैसे आदमी के अन्दर, वो कृष्ण के अन्दर और बहुत बड़े-बड़े सन्त साधुओं में ये चीज़ पाई जाती है। वो आप आदिशंकराचार्य में पाइए। इसकी पुष्टि के लिए आप उनकी किताबें पढ़िए। अब नए सिरे से आप पढ़िए, अब नए सिरे से आप गीता पढ़ें, नए सिरे से आप बाइबल पढ़ें, उसमें आप देखिएगा कि हरेक बात की पुष्टि देने वाली चीजें उसमें हैं। लेकिन आप स्वयं पुष्ट हैं आपको कोई जरूरत नहीं कि कोई आपको support करता रहे, सहारा दे। आप स्वयं अपने सहारे पर खड़े होना जैसे ही शुरू कर देंगे एक दम प्रकाशवान हो जाएंगे। इसमें कोई शर्माने की बात नहीं, इसमें कुछ घबराने की बात नहीं। हमारे यहाँ ऐसे लोग देखे जाते हैं जो एकमेव घर के अन्दर एक आदमी होता है वो फिर किसी से बात कहता नहीं, अन्दर छिपा के रखता है। बाइबल में कहा जाता है कि दिया नीचे नहीं रखा जाता, टेबल के नीचे नहीं दिया रखा जाता है, किसी ऊँचे स्थान पर दिया रखना चाहिए। गर आप वाकई दीपक हो गए हैं तो ऊँचे स्थान पर बैठकर के सबको प्रकाश दें, सब धर्मों का प्रकाश यही है। आप चाहे किसी भी धर्म में हों, आप उठा के देख लीजिए। आप सिक्खों के धर्म को मानते हैं आप उठाकर देख लीजिए, अगर ये कहीं पर भी ये बात न लिखी हो, गर झूठ बात कही है-आप किसी भी धर्म की किताब देख लीजिए।

आपकी पुष्टि के लिए बड़े-बड़े लोगों ने लिख रखा है। आप श्लोक के श्लोक कह सकते हैं, आप कुरान की आयात की आयात कह सकते हैं। इसी चीज़ की गवाही देते हैं चाहे उसे यहाँ पर हम लोग, जिसे spiritual कहते हैं अंग्रेजी में, जिसको हम लोग आध्यात्मिक कहते हैं संस्कृत में, और जिसे वो लोग रूहानी कहते हैं। नाम बदल देने से जो सत्य है वो एक ही है। और सबको ये मालूम है आप लोगों को कि सत्य क्या है। तो सत्य की भी कोई व्याख्या तो हो नहीं सकती। सागर की क्या व्याख्या है? लेकिन क्षण-क्षण में आप देखेंगे कि सत्य ये है, मिथ्या ये है, सत्य ये है, मिथ्या ये है। आपकी vibration से आप जानेंगे। वाइब्रेशन से

इसे, आप तोल पाइएगा इससे आप समझ पाइएगा,जहाँ vibration आ रहे हैं वही पर सत्य है। आप पत्थर में भी, मिट्टी में भी, हरेक में आप vibration देखेंगे। कोई गर आदमी है उसके चार-पाँच चक्र पकड़े हैं उससे उलझने की कोई ज़रूरत नहीं है। कठिन आदमी है, आपके बस का नहीं। आपको फौरन आपके हाथ पर गर्म-गर्म आ जाएगा। भागिए वहाँ से कुछ दिनों के लिए, बाद में वो भागेगा। वो खुद ही जलेगा। जिससे भी आपको गर्म-गर्म vibrations आए, छोड़ दीजिए। ये अपनी बात नहीं; ये रूहानी बात है। यहाँ पर कोई नहीं, अंधेरा है। रोशनी और अंधेरे का युद्ध पूरी समय चल रहा है। आपके दीप इतने सारे जल गए, सारा ही वातावरण बदल सकता है गर कुछ दीप और जल जाएं। इसलिए अपने दीप को जलाकर रखना चाहिए, अपनी vibrations को हमेशा तोलते रहना चाहिए। हमारे फोटो से vibrations हर समय आती है, उसके कभी रुकते नहीं। आप हमारे फोटो की ओर अपना हाथ किया करिए। गर आपके किसी भी उंगली पर देखा कि जिस जगह भी आपको vibrations जलते हुए नजर आ रहे हैं उन सब चीज़ों का अर्थ होता है। जैसे आप जानते हैं ये मणिपुर चक्र है और ये आपका विशुद्धि चक्र है और ये आपका आज्ञा चक्र है, ये आपका स्वाधिष्ठान चक्र है और ये आपका मूलाधार चक्र है, और बीचों बीच यहाँ पर आपके हाथ के बीचों-बीच सहस्रार है, पूरा गोल। किसी के भी, किसी ने आकर आपको बता दिया कि फलाने की तबियत खराब है, हम चाहते हैं कि आप उसके लिए प्रार्थना करें। कुछ करने की जरूरत नहीं। जो चक्र उनका खराब हो उसको आप यूं करके धो लीजिए उनको बहुत फायदा हो जाएगा।

यहीं बैठे आपकी उंगलियों के इशारे पर सब चीज़ चलने वाली है। आपके attention पर दिव्यत्व है, मैंने आज सवेरे बताया था, इसका आप पड़ताला लीजिए। पाँव में पूरे चक्र बने हैं। मनुष्य बहुत बड़ी चीज़ है, बहुत बड़ी चीज़ है। ऐसे हज़ारों उसके सामने यंत्र फैंक दिए जाएं, उसका यंत्र परमात्मा ने इतना सुन्दर बनाया है। बस उसकी बिजली चमकाने की बात है। वो भी चमक गई, अब क्या रह गया? रह यही गया कि बहुत कुछ है लेकिन अब दीप लेकर सब जुट जाना होगा और देखना होगा क्या है। क्योंकि बहुत कुछ है। थोड़ा सा एक दिया जला दिया और उसको लेकर बैठे हैं! बैठने की बात नहीं और आप देखिएगा कहाँ तो दूसरों के मन में, दूसरों के अंतस में, दूसरों के अंतस में जब आप देखिएगा तब आप जानिएगा कि क्या है। इसलिए यहाँ पर एक organisation की भी बात सोची गई है। हमारे एक अनन्त जीवन नाम की संस्था है, बम्बई में चली है। इसमें हम कोई Membership नहीं रखते हैं, जो realized होगा वो member है, realized लोग भी थोड़े से वो ढलक जाते हैं। फिर से realized होते हैं, कुछ आते हैं ऊपर से फिर सड़क जाते हैं। ऐसे आपमें भी आंधे अधूरे कुछ होंगे, कुछ पूरे होंगे, बिल्कुल चलेंगे। पीछे हमने बोस साहब से request किया था, आप उन्हीं को chairman बना लीजिए जैसा भी करना चाहें कर लीजिए, उनके पास हम ठहरेंगे और आपका घर भी, आपका पता यहाँ भी पास ही है। वो क्या है? 10 नंबर, किंग जार्ज एवेन्यू, ये आपका घर है, और फोन नंबर भी आपसे ले लीजिए। उनके पास हम फोटो वगैरा सब भेज देंगे, लेकिन आप बहुत बड़े काम में व्यस्त रहते हैं, समय पर आप लोग आ जाइएगा और आपको शुक्रवार का दिवस बहुत अच्छा है। उस दिन आप लोग अपना meditation का कार्यक्रम रखें। हम वहीं से चित्त से आपको देख रहे हैं। परमात्मा के बहुत से प्रतीक रूप आपने सुने होंगे जैसे गणेश जी हैं, उनके मूषक वाहन

हैं और सबके वाहन आपने सुने हैं। आपका वाहन सिर्फ चित्त है, आप चित्तारूढ़, चित्त पे रहें। क्या कमाल है आपकी? आप चित्त पर अपने बैठे हुए हैं, जहाँ चित्त जाए वहीं काम बन जाए। और इसकी इतनी कमाल है, यहाँ बैठे-बैठे आप अपनी सत्ता निकालिए। यूँ करके ठीक कीजिए सब।

जिसको भी देखा है कि वो सता रहा है, परेशान कर रहा है, किसी भी आदमी जिसके लिए भी आप सोचते हैं अपने सहस्रार पर ला करके उसको ठीक कीजिए। बीच में ब्रह्मन्ध्र है, आपको आश्चर्य होगा कि उनकी काफी हालत ठीक हो गयी। बहुत दुष्ट, महादुष्ट जो अभी इन्होंने गाया था कि दु:शासन बैठे हैं और सन्त बैठे हैं, बिल्कुल बैठे हैं। सबके ऊपर में हम लोग बैठे-बैठे सवेरे यही धन्धा करते रहते हैं कि उनको सुबुद्धि दो। इस तरह से ये प्यार का चक्कर है, बैठे-बैठे यहाँ से प्यार का चक्कर घुमाने से उधर आदमी ठीक हो जाता है क्योंकि नफरत से कितनी ज्यादा शक्तिशाली है प्यार की बात। बहुत शक्तिशाली है, समुद्र की जैसे थाह होती है। समुद्र कितना बढ़ जाए उसकी थाह बढ़ती ही रहती है। ऐसी है! कितनी भी नफरत बढ़ जाए संसार की और प्यार जो है उससे भी ज्यादा बढ़ते रहेगा और नहीं बढ़ेगा तो संसार नष्ट हो जाएगा। आप अपनी जिम्मेदारी को अभी समझ नहीं पाए कि एक नया ज़माना जमाने की बात है। नए लोग, नया Dimension, एक नया आयाम जिसको आप समझ सकते हैं, सिर्फ vibrations से आप समझ सकते हैं। कोई और नहीं समझ सकता। अभी जो सिद्धेश्वरी बाई गा रहीं थी उनकी हालत खराब थी, कल इतनी खराब थी कि घबरा-घबरा कर मेरे पास पहुँची। Operation करना है और ये करना है, वो करना है, ऐसा है, वैसा है। हमने हाथ रखा और आज वो गाने लग गई। आप लोग सब ये काम कर सकते हैं। कोई ऐसा मैंने छोड़ा नहीं काम जो आप कर नहीं सकते। अब बस ये है कि हमारे बीच में बड़ा परदा है, इस परदे को चाक करना आ जाए, काम बन जाएगा। इस पर्दे का ही चाक होना मुश्किल हो जाता है। बहरहाल आप पार हो गए तो पहले अपना तो परदा चाक हो जाए। अब हमारा और आपका बीच का अन्तर जितने जल्दी छूट जाए उतना ही काम बड़ा जबरदस्त है। इस चीज़ में अन्त में जो सबसे बड़ी बात है वो है प्रेम। हमें प्रेम के साथ तादात्म्य करना है। जब हम किसी के साथ बात करते हैं तो हम पहले ही सोच लेते हैं कि इसे प्रेम ही करें। ये सारा ही प्रेम है इसमें आप कुछ गड़बड़ कर ही नहीं सकते। जैसे लोग हमसे कहते हैं कि आप हरेक को देखो तो Realization दे रहा है। अमेरिका में खासकर लोगों को बड़ी परेशानी है, कि लोग उसको बुरी चीज़ के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मैंने कहा क्या बुरा करेंगे? किसी की जागृति करेंगे, किसी को पार ही करेंगे या किसी को ठीक करेंगे। प्यार से आप किसी का बुरा कर ही नहीं सकते। आप ही सोचिए जिस आदमी को आप प्यार करते हैं आप उसका बुरा कभी कर सकते हैं? प्यार की पहचान ही ये है कि वो कभी किसी का अहित सोच ही नहीं सकता। जो कुछ भी होगा वो हितकारी होगा, वो जाएगा कहाँ? हित ही होगा।

बस अपनी इज्जत खुद ही करनी होगी। बस अगर अपनी जैसे जैसे इज्जत करनी शुरू कर दी वैसे-वैसे आपकी स्थापना अन्दर हो गई। क्योंकि ये मन्दिर है और इस मन्दिर की जितनी भी आपने इज्जत करी हुई है उतना ही उसके अन्दर परमात्मा का प्रकाश है। आप प्रेम से तादात्म्य पा सकते हैं। एकदम आप प्रेम से एकाकार हो सकते हैं, बिल्कुल एक स्वरूप हो सकते हैं। आपके अन्दर से शुद्ध प्रेम ही बह सकता है जो स्वयं साक्षात् चैतन्य है, वही सत्य भी है, वही सौन्दर्य भी। इस सबके

साथ एकाकार आप एकदम हो सकते हैं। निर्विचारिता में आप बैठें। लेकिन निर्विचारिता तभी आती है जबकि आप इसको यहाँ से तो निकल गए हैं, यहाँ पर आ गए हैं। इस दशा में आप खड़े हैं कि आप निर्विचार हैं। आपका Brain था वो सोचता था, अब Brain से आपको निकालकर के सहस्रार तोड़कर के आपको यहाँ ले आए हैं। अब यहाँ आप जब पहुँच जाइए, इस जगह पर आप हाथ रखकर देख सकते हैं, जो Realized हैं देखिए। आपको लगेगा इस जगह अर्धबिन्दु में, जो लोग Realized हैं उनको महसूस होगा, जो लोग Realized नहीं हैं उनको महसूस नहीं होगा। लग रहा है? धीरे-धीरे ऊपर नीचे करें, ऊपर नीचे करें। जरा नीचे, इससे ऊपर में अर्धबिन्दु की दशा है, उससे ऊपर में बिन्दु हैं, उसके ऊपर में वलय है। सब कुछ जो भी सृष्टि करने में बनाया गया था वो सब कुछ मनुष्य के अन्दर में बना दिया। पहले वलय, उसके बाद बिन्दु, इसके बाद अर्धबिन्दु उसके बाद में ये। फिर सारी कुण्डलिनी की रचना। पूरी कुण्डलिनी को बना दिया है और वो जो आदि कुण्डलिनी है वो ही आपके अन्दर में लपक करके आ गई और आपकी कुण्डलिनी बन गई। आदि कुण्डलिनी बनाने के लिए पहले कुछ लोगों को बिठाया गया था, शुरुआत करने के लिए किसी को बिठाना पड़ता है। पहले उन्होंने गणेश जी को बिठाया। आदिशक्ति ने सिर्फ एक चक्र के साथ श्री गणेश जी को बिठाया, एक गणेश, एक ही चक्र के साथ श्री गणेश ।

गणेश जी क्या हैं? सिर्फ पावित्र्य, सिर्फ पावित्र्य। आप इसी को सोचिए हमारे शरीर के ऊपर कुछ दिनों तक यदि आप नहाए धोए नहीं और मैल है। आप सोच लीजिए यहां पर भी vibrations है और यहाँ भी vibrations हैं, और उसको निकालकर के हम इकट्ठा कर दें तो जो जड़ तत्व जो है उसके अन्दर vibrations ही vibrations होगा। माने सिर्फ पवित्रता के बिल्कुल पुँज हैं। क्योंकि He is an eternal child, अनन्त के बालक हैं। उनके जैसा बालक संसार में मिलना मुश्किल है। सिर्फ पावित्र्य ही पावित्र्य है, उनका सारा प्यार ही पवित्रता है और उस पावित्र्य की वजह से आपके मूलाधार चक्र पर, चक्र पर, मूलाधार पर तो माँ बैठी हुई हैं, उनको बिठाया है। इसका मतलब ये है कि sex के मामले में आपको एक छोटे से बच्चे जैसा होना होगा। इसका अर्थ ये नहीं कि sex का life में कोई स्थान नहीं।

इसका अर्थ ये है कि sex के मामले में जब आप धर्म में उतरते हैं उस वक्त अपने sex के प्रति विचार जैसे बालक के अबोध होते हैं वैसे होने चाहिएं। इसका अर्थ ये है। गणेश तक पहुँचना बहुत कठिन बात है, बहुत कठिन बात है क्योंकि बड़ी पवित्र आत्मा हैं। और उनका प्रकाश चारों तरफ फैल रहा है। उसके अन्दर जाने के लिए हमें बहुत ही स्वच्छ होना पड़ता है तभी हम उसके अन्दर उतरते हैं। नहीं तो वो और उनकी माँ के सिवाय वहाँ कोई बैठता नहीं।

उसके बाद दूसरा चक्र लेकर के वो जब आए तब उन्होंने ब्रह्मदेव की रचना करी, किन्तु वो उन्होंने करी उल्टे ढंग से। पहले उन्होंने श्री विष्णु को पैदा किया। उसकी वजह ये कि पहले, creation करने से पहले ही एक पालनकर्त्ता पहले ही बना दिया। इसलिए नाभि चक्र से हमें भी अपनी माँ से ही पहले पैदा किया जाता है। और फिर इस पिता स्वरूप बाप को बनाने के बाद क्योंकि पहले बाप बना दिया उन्होंने और उसके बाद उनकी नाभि से श्री ब्रह्मदेव की रचना हुई। बिल्कुल हुआ, ऐसे ही हुआ जैसे खूँटे बिठाए जाते हैं, इसी तरह से हुआ। इसमें झूठ कुछ नहीं, आप खुद देख सकते हैं ये बात। अब भवसागर बन गया, भवसागर की तैयारी हो

गयी, सारा void तैयार हो गया, Vagus Nerve और Aortic Plexus चारों तरफ भवसागर के, उसके अन्दर से बहने वाला प्यार, creation उसी में फँस गई। प्यार चारों तरफ से लिपटा हुआ है। All pervading power है प्यार, और उसके बीच में creation है। अब इस भवसागर को लाँघने की बहुत जरूरत है। लेकिन सबसे पहले दिन जो मैंने आपसे बताया था, जो ईश्वर और उनकी शक्ति, जो ईश्वर है वो हमारे हृदय में आत्मास्वरूप बैठे हैं। इसलिए जैसे ही बच्चा जन्मता है, जन्मता नहीं जब माँ के उदर में ही होता है तभी साक्षीस्वरूप ईश्वर उनके हृदय में आ जाते हैं और एक flame, जैसे अंगूठा है एक flame, के जैसे दिखाई देते हैं। ये left hand side हृदय में हैं। बहुत लोग confusion में डाल देते हैं कि हृदय चक्र में हैं। हृदय चक्र में नहीं वो हृदय में हैं। आत्मा स्वरूप एक flame जैसे रहते हैं। उसकी वजह है, हृदय चक्र में क्यों नहीं क्योंकि वह कुण्डलिनी के जाने का मार्ग है, हृदय चक्र, जो बीचों बीच है और ये एक तरफ left में रहते हैं। राम शब्द रा- माने energy और म माने, महेश, जो ईश्वर अपने हृदय में बैठे हैं। रा जब म से मिल जाता है तभी राम हो जाता है। इसे भवसागर में फँसे लोगों को बाहर निकालने के लिए कोई न कोई व्यवस्था करनी पड़ी। इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये बड़ी अजीब सी हस्ती बनाई है। इन तीनों की धर्म पर स्थापना कर दी गई, दत्तात्रेय ने और यही आदि गुरु और हमेशा गुरुरूप रहे हैं। इन्होंने अनेक बार संसार में जन्म लिया। उनका जन्म राजा जनक के रूप में हुआ जो आदिशक्ति के पिता स्वरूप थे। उसके बाद उनका जन्म ईरान में हुआ था जोरास्टर के रूप में, मच्छिंदरनाथ भी वही, मोहम्मद साहब भी वही, नानक साहब भी वही। किसका झगड़ा किसके साथ लगा हुआ है? सोचिए।

कैसे अन्धकार में आप हैं? मोहम्मद साहब की जो लड़की थी फातिमा, वो वही थी जो कि जनक की लड़की थी। किससे झगड़ा कर रहे हो ये सोचो तो। और नानक की जो नानकी थी वो वही थी जो जानकी है। उसके बाद हमारे शिरडी के साईं बाबा, वो भी आदि गुरु थे, सबके ही गुरु हैं, मेरे भी यही गुरु हैं। आदि गुरु हैं इन्होंने ही मुझे सब धन्धा सिखाया, जन्म जन्मांतर सिखाते रहे। अन्त में मुझ ही को आकर ये काम करना पड़ा। ये उन्होंने भी नहीं किया और इस जन्म में मुझी को वो गुरु स्थान में बिठा रहे हैं कि मैं गुरु बनूं। अजीब सी हालत है! एक जमाना ऐसा था कि किसी स्त्री को कोई गुरु मानने को तैयार नहीं था। कलियुग में माँ के सिवाय काम नहीं है, पुरुषों के बूते का काम नहीं है। प्रखरता से काम चलने वाला नहीं है, माँ का प्यार ही क्योंकि इतना ज्यादा पहले ही से दबाव और tension संसार में आ गया कि आदमी टूट जाएगा जिस दिन और प्रखरता में उतरेगा, और टूट ही जाएगा। इसलिए प्यार के बगैर कोई इलाज नहीं था। इसलिए हमीं को आज गुरु पद पर आना पड़ा। सब स्वीकार्य है लेकिन हम तो जानते ही नहीं थे गुरु कैसा होता है। गुरु में तो Distance रह जाता है वो माँ में कोई Distance नहीं रहता है। बच्चे माँ की खोपड़ी पर बैठे रहते हैं। इसलिए आप लोग भी देखिएगा हमसे आप बहुत liberty लीजिए और मज़ा आता है। पूरे freedom से आप हमारे साथ रहिए। न आपको हमारे साथ कोई भय लगेगा न आपको कोई घबराहट होगी। कोई परेशानी नहीं। कोई भी बात हो बेधड़क आकर आप हमसे बताइगा, कोई सा भी problem हो आप हमसे कहिएगा। आप हमसे लड़िएगा, झगड़िएगा सब होगा, जैसे अपनी माँ के साथ, वही होती है जिससे हम बिल्कुल freely बैठे हैं। पूरे freedom की जरूरत थी इसी वजह से। धर्म की चर्चा खुलेआम करने की ज़रूरत

थी। गुप्त कुछ भी नहीं है, कुछ भी गुप्त नहीं है, एक दशा में जाकर सब उघाड़ कर ही जाना है। पूरा उघाड़ना है, पूरा तत्व उघाड़कर कहने की जो बात है। लेकिन हो गया। हरेक बात हर मौके पर नहीं कही जाती। पूरी ही बात अब हम आप लोगों से कह रहे हैं ये हम Realized लोगों से कह रहे हैं जो non-realized हैं उनके लिए शंका ही है। जो realized लोग हैं उनके लिए कुछ इसका मतलब है पर इससे भी ऊँची दशा पर पहुँचने पर आप साक्षात् हो जाते हैं। उसके बाद भवसागर को पार करने के लिए जो गुरु की स्थापना हुई उस पर भी बहुत कुछ काम किया गया कि गुरु किसी तरह से इस भवसागर से मनुष्य को पार कर देगा। कुछ काम बने कुछ नहीं बने, बहुत से लोग हो गए। वो ही आज मदद कर रहे हैं वो चिरंजीव हैं। जैसे कि जैन धर्म में बहुत से चिरंजीव हैं, जैन धर्म के संस्थापक महावीर और बुद्ध की माँ एक थी और आदिशक्ति के ही पेट से दोनों पैदा हुए। इसलिए उनका पहला ही रिश्ता आप समझ लीजिए कि वो कहाँ पैदा हुए और फिर कितने बार फिर पैदा हुए। लेकिन सब के लिए ही experimental था, सबने ही experiment किए, कभी इस दशा में कभी उस दशा में, कभी इस तरफ ले जाकर कि किसी तरह से मनुष्य भवसागर से पार हो जाए। थोड़े बहुत हो जाते थे, चिरंजीव हो जाते थे लेकिन amass जिसे कहना चाहिए इतने लोगों को पार करना कलियुग में ही हो सकता है।

इसके बाद रामचन्द्र जी संसार में आए, वो भी इसीलिए वो बिल्कुल ही मानव हो गए थे, एकदम मानव हो गए थे, उनको तो भुला दिया गया था कि तुम अवतार हो। वो एक दम ही अपने को भुलाकर के आप इस माया में पड़कर एक दम ही अपने को भुला करके आए और मानव ही बनकर इस संसार में वो जिए हैं इस भवसागर से आपको निकालने के लिए। पूर्णतया वो मानव थे। यहाँ तक बाहरी features में आप देखिए तो वो पूर्णतया मानव थे कि मनुष्य उनको जाने। उस वक्त भी दो चार लोग थे वो पार हो गए इसमें कोई शक नहीं लेकिन बहुत ज्यादा नहीं हो पाए।

उसके बाद छः सात हजार साल पहले श्री कृष्ण आए। शिवजी तो आप जानते हैं उनके साथ-साथ हैं ही। लेकिन श्रीकृष्ण के आने से पहले आदिकाल से ही जब भवसागर से लोग पार होना चाहते थे तब उन भक्तों को बड़ी आफत आती थी, वो जब भी meditation में बैठते थे उनको सताया जाता था। तब आदिशक्ति अपने सम्पूर्ण रूप में प्रकट हुई और उन्होंने 108 बार अवतार लिया। इसको आप जानते ही होंगे। देवी महात्मय आप पढ़ें, मेरी बात आप समझ जायेंगे। देवी रूप वो संसार में आई और उन्होंने आकर के लोगों को पहचाना। लेकिन तब वो सिर्फ देवी स्वरूप आई थीं, उनको कोई माया बीच में नहीं थी। इस वजह से मनुष्य तारण नहीं पा सकता, उनकी सिर्फ Protection ही जिसे कहना चाहिए बचाव ही हो सकता है लेकिन तारण नहीं हो सकता। महिषासुर को मारा, शुम्भ-निशुम्भ को मारा बहुतों को मारा।

जो राक्षस सताते थे, जो Negative लोग थे, जो सताते थे भक्तों को उनको सबको मारा। लेकिन उनसे उनका तारण नहीं हुआ क्योंकि वो पूर्णतया Human नहीं थे। जितने चक्र थे, तो चार चक्र पर हृदय चक्र आता है, इसलिए उनके सामने चार ही पड़ते थे। इसलिए राधा का जन्म हुआ सीताजी के बाद श्री राधा का जन्म हुआ। जो बहुत ही Human, विशुद्धि चक्र पर पाँचवें चक्र पर उनका स्थान है। बहुत ही Human और प्रेम का संगीत उन्होंने गाया। कहते हैं कि जब कंस को मारा था श्री कृष्ण ने, अपना मामा था, तब भी राधा जी को

बुला कर लाए थे। राधा 'रा' माने फिर वही energy 'धा' माने धारने वाली। राधा ही की धारा हो जाती है आपके अन्दर। जो शैवाइट लोग हैं वो शिवजी को मानते हैं, वो भी एक दिन अकृष्ण थे। कृष्ण और शिव में कोई अन्तर नहीं सिवाय इसके कि शिव जो हैं ईश्वर स्थिति में अपने हृदय में स्थान बनाए हैं, और श्री कृष्ण विशुद्धि चक्र में, उनको 16 कला कहते हैं वैसे अपने अन्दर 16 Plaxuses होते हैं, आश्चर्य की बात है विशुद्धि चक्र जिसकी कि 16 कलाएं हैं वहाँ पर श्रीकृष्ण का वास है। और उनकी शक्ति राधा थी जो बाद में दो में बंट गई जो रुकमणी और राधा बनकर के एक वृंदावन में और एक द्वारिका में। बहुत ही Human।

उसके बाद श्री कृष्ण का एक ही पुत्र था जो प्रणव स्वरूप था। ज़रा सोचिए साक्षात् ओम् स्वरूप वो था। उसने यहाँ अवतार लिया। उसका नाम जीसस क्राइस्ट है और उसकी 'मेरी' माँ थी आज्ञा चक्र पर वो आए। आज्ञा चक्र पर आते ही वहाँ पर ego और super ego दोनों का सामना होता है। आप देखिए कि आपका आज्ञा चक्र जो है Pineal Body (शंकु रूप) और Pituitary Body (पीयुष ग्रंथी) को control करता है। बिल्कुल Scientific बात है। इसलिए आपके आज्ञा चक्र पर भूत सिर्फ उन्होंने निकाले क्योंकि Super ego में भूत बैठते हैं और Ego में भी भूत बैठ सकते हैं क्योंकि ईडा और पिंगला दोनों वहीं-खत्म होते हैं। उसी ने इस पर हाथ रखा। पहले वैसे तो नानक जी के जमाने में भी हुआ था। हर समय ये भूत वाले आते रहते थे। Enticement करते रहते थे। ये होता था लेकिन उनकी तो गर्दन ही काट दी। कृष्ण में तो संहार शक्ति है कमाल की। तो आज्ञा चक्र पर ईसा-मसीह का नाम है। और महालक्ष्मी जिनकी हम इतनी स्तुति गाते हैं, उनको किसी ने कहीं वर्णित नहीं किया कि वहाँ कहाँ हैं, वो स्वयं 'मेरी' हैं। ये जब भी अपने बच्चे के साथ आती हैं और अपने पति के साथ में आती हैं तब शांत होती हैं, लेकिन जब अकेली आती हैं तब वो भयानक होती हैं। और तब से यहाँ का स्थान साक्षात् भगवती का है। सहस्रार का स्थान साक्षात् भगवती का है। ये स्वयं इसे तोड़कर इसमें सातों चक्र पूरे होते हैं इसीलिए माया भी सात पर्दे की है। और इसकी पहचान मुश्किल बहुत मुश्किल है। पूरा का पूरा उसका Human बिल्कुल Human चक्र पूरा हो जाता है। 'सातों चक्र का।

आपको क्या करना चाहिए किस तरह से अपनी साधना पूरी करनी चाहिए। ये तो मैंने थोड़े में बता दिया। लेकिन Methodically इसे बताया जाए तो इस तरह से समझिए इसका कोई समय तो होता नहीं, हर समय आप निर्विचारिता में रहिए जैसे इस वक्त आप निर्विचार बैठे हैं। जब विचार करिए निर्विचारिता में जाइए। अब इसके बाद में Thoughtless awareness के बाद में Doubtless awareness आती है। अब आपको शंकाएं खड़ी होंगी। इसके बाद Second stage में आदमी Doubtless awareness में आता है। अब शंकाएं होंगी। ये ठीक है या नहीं, माताजी ने ये कहा ये बात ठीक नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता है? ये हुआ या नहीं, हम पार हुए कि नहीं? इस तरह की शंकाएं। ये शंका का निर्मूलन ऐसा होगा जब आप अपने स्थान पर आसन्न होंगे। माने कि हमने आपको तो सिंहासन दे दिया लेकिन आपको शंका है कि ये सिंहासन है या नहीं, हम बैठे हैं ये ठीक है या नहीं? तो आप देख लीजिए आप अपने हाथ से देख लीजिए कि कितनी अद्वितीय चीज़ आपके हाथ से जा रही है और लोगों को जब आप इसी हाथ से छूकर के ठीक करेंगे, आपको जब इनके अनुभव धीरे-धीरे आने लग जाएंगे तो आपके Doubt तब धीरे-धीरे कम होने लग जाएंगे। माने ये कि हमने आपकी नाव बना दी तैयार कर दी, अब तैयार होने के बाद इसको, नाव को,

पानी में छोड़ना चाहिए लहरों से लड़ना चाहिए, तब पता होगा कि ये नाव है या नहीं। हो सकता है लकड़ी ही हो। लेकिन लकड़ी की नाव बन गई कि नहीं, बन गई, ये पानी में गिरे बगैर नहीं पता चलेगा। इसलिए इसको, नाव को छोड़ देना चाहिए और लहरों पर छोड़ना चाहिए और देखना चाहिए। लहरों के थपेड़े जब बैठेंगे और तो भी जब नाव नहीं डूबेगी तो पता हो जाएगा नहीं, हाँ हो गया है, मामला कुछ। अभी तो doubts ही आएंगे थोड़े से, क्योंकि मनुष्य अपने को बहुत ऊँचा समझता है। एक साहब थे हमारे यहाँ, तो वो गए वहाँ एक स्वामी जी बैठे हुए हैं, हजारों आदमी वहाँ आते हैं खाते हैं पीते हैं। वो झण्डा लगाकर वहाँ बैठे हैं। अब ये महाशय हमारे साथ अमेरिका गए हुए थे। ऐसे इशारे पर वो कुछ करते थे। आप भी कर सकते हैं, यूं करिए, किसी-किसी की कुण्डलिनी रास्ते-रास्ते यूं ही उठा सकते हैं, यूं करिए। यूं इशारे पर यहाँ बैठे बैठे ही किसी की कुण्डलिनी चाहे उठा करके आप मज़ा देखिए क्या होता है! आप किसी की भी आप उंगलियों पर आपके कुण्डलिनी घूमेगी। आपके क्या आपके हाथ से जो बह रहा है उसी के सहारे होगा। वो ऐसे तीन-तीन सौ लोगों की अमेरिकन लोगों की कुण्डलिनी उठाते थे वो साधू जी थे वहाँ बहुत से लोग गए। तो ये भी चले गए तो जब गए तो हमें तो सब पता हो ही जाता है कहाँ कौन भटक रहे हैं। जब लौट के आए तो हमने कहा आपने उनके पाँव क्यों छुए? कहने लगे सब छू रहे थे हम ने भी छुए। जो अपने से बड़ा हो उसके पाँव छूने चाहिए। आपने क्यों किया? कहने लगे सब छू रहे थे तो हमने भी छू लिए। हमने कहा उनका हाल क्या था? कुण्डलिनी का क्या हाल है? वो पार हो गए? कहने लगे वो पार तो नहीं हैं और कुण्डलिनी, वो तो ओंधी बैठी है। मैंने कहा तुम्हारे उंगली के इशारे पर हजारों ऐसे उठते हैं और तुम्हें ख्याल नहीं आया कि इसके मैं क्यों पाँव छुऊं? कुण्डलिनी ओंधी बैठी हुई है अरे पार तो होता कम से कम, उसके पाँव छूने चाहिएं। पाँव उसी के छूने चाहिए जो अपने से ऊँचा हो। आखिर किस चीज़ के लिए? तुम तो सब जानते हो उसका शास्त्र, जानते हो, सब कुछ जानते हो। इतनी तेजस्विता तुममें आ गई तुमने उसके पाँव कैसे छुए? Egolessness ये ही आता है। आप लोग इतने साधारण तरीके से रहिए कि कोई विश्वास नहीं कर सकता कि आप पार हैं। आदमी Egoless हो जाता है। एकदम Egoless । उसको लगता ही रहता है कि ये कैसे हो सकता है। कुछ भी करे उसको लगता है। ऐसे कैसे हो सकता है। लेकिन हो गया है, आपके अन्दर ये बात हुई, अगर हो गई तो ये सोचना चाहिए कि गर हुई है तो हमारे लिए क्यों हुई, इस दिल्ली में हम कितने लोग रहते हैं।

आखिर हमीं क्यों विशेष रूप से पार हुए? कोई न कोई कारण होगा। पूर्व जन्म के, जन्म जन्मांतर की आपकी खोज है, जन्म जन्मांतर का आपका हक है। आप लोग साधु, बड़े-बड़े साधु लोग हैं, आपको क्या पता? आप गर साधु नहीं होते तो क्या आपको हम पार कराते। हम क्या करते गर पत्थर को हम पार कराते। हजारों लोग आते हैं, हम, आपने देखा, नहीं पार करा पाते। आप ही लोग कुछ लोग पार हो गए, कोई न कोई बात तो है ही। लेकिन ये आपके अन्दर आएगी नहीं बात, बैठेगी नहीं, क्योंकि आप अपने को सोचिएगा कि ऐसे कैसे हो सकते है? Egoless हैं इस वजह से ये Problem आ जाता है। ये सहजयोग की Egolessness है। बहुत ही साधारण तरीके से। न तो आप कपड़ों में कोई बदल करने वाले हैं, न तो किसी चीज़ में लेकिन अन्दर से आप देखते जाइएगा कि शान्ति आ गयी, अब क्यों उलझ रहे हो? बातचीत में बोलने में हरेक चीज़ से

आप Realized आदमी होंगे कि हाँ यह Realized है। और फिर माहिर, होशयार हो जाएंगे क्योंकि आप जानेंगे कि इनका ये ऐसे ही बोलेंगे, इनका ये घूम रहा है, उनका ये घूम रहा है। वो उधर बक-बक कर रहे हैं ये इधर ऐसे-ऐसे कर रहे हैं, चलो इनको ठण्डा करें। थोड़ी देर में देखा महाशय जी ठण्डे हो गए हैं। कोई लोग आते हैं हमसे झगड़ा वगड़ा करने, ये लोग पीछे से उनकी कुण्डलिनीयाँ घुमा-घुमा कर उनको ठण्डा करते हैं, थोड़ी देर में चुपचाप बैठे। बहुत Tricks करते हैं। एक साहब बहुत झगड़ा कर रहे थे। इतने उनका Time वो बता रहे थे आज एक किस्सा, एक साहब झगड़ा कर रहे थे उनका Time आ गया तिल खाने का। तो अच्छा लाओ देखें तुम्हारी तिल, हाथ में रखकर उसमें Vibrations दे दिया, खाओ। खाते साथ ध्यान में खट से चले गए। किसी ने ज्यादा परेशान किया तो पानी में ज़रा सा हाथ डालकर वाल करके पिला दीजिए पानी, काम खत्म। चैतन्य अन्दर में एकदम से पनप जाएंगे। लेकिन आप सभी अभी आप बच्चे हैं। अभी-अभी आप पैदा हुए हैं तो छोटा बच्चा बड़ी जल्दी बीमार होता है, बड़ी जल्दी आप पकड़ लेते हैं। अपने स्थान से आप बड़ी जल्दी गिर जाएंगे। स्थान को पकड़े रहें, स्थान से हटें नहीं। डावांडोल आदमी को नहीं रहना है। अपने स्थान पर जमे रहें क्योंकि चीज़ ऐसी मिली हुई है कि आदमी डांवाडोल हो ही जाएगा। ये आपको मैं बता रही हूँ।

इसीलिए संघ शक्ति होनी चाहिए। ये लोग हैं आपस में आकर के माताजी मेरा सिर पकड़ गया। निकाल दीजिए। आपस में, अरे भई कमर में ही, आज्ञा चक्र में कहीं जहाँ पर भी है वहाँ निकाल दो। आपस में ऐसे ही बातें करते रहते हैं। अब यही आपके सब भाई बहन हैं यही सब प्रेम की एक नई दुनिया है। ये आपके रिश्तेदार हैं इनको सबको आप जानिए। कोई तकलीफ होगी अचानक आप देखिएगा कि इनमें से कोई आदमी पहुँच जाएगा अचानक। क्योंकि देवता आपके ऊपर मँडराते हैं। एकदम से कोई आदमी सोचे जरा देखूं उनका क्या हाल है? कहने लगे मुझे पता नहीं मैं कैसे चला आया? मैं आ रहा था रास्ते से, मैंने कहा ऊपर जाएं, चला आया। काम आपका बन गया। एक्सीडेंट आपके होने वाले नहीं, देवता आप पर मंडरा रहे हैं। आपमें से एक भी आदमी गर ऐसी जगह है जहाँ एक्सीडेंट हो रहा है तो सब बच जाएंगे, आपकी वजह से। बहुत-बहुत कुछ होगा। आप देखते रहें, रोज़ लिखते रहें, आपकी कुण्डलिनी की जागरणा, उसका घूमना फिरना देखते रहें। उसमें परेशान होने की कोई बात नहीं। उठेगी, कभी यहाँ गुदगुदी करेगी, कभी यहाँ चढ़ेगी, कभी यहाँ आलौकित करेगी, कभी यहाँ आलौकित करेगी। उस सब चीज़ से आपकी जो चेतना है वो बँधी है, वो प्रकाशित होएगी और संसार में वो आन्दोलित होएगी। अभी यहाँ आप बैठे हुए हैं आपको पता नहीं कि हज़ारों करोड़ों रश्मियाँ आपकी यहाँ बह रही हैं। आप देख लीजिएगा कि दिल्ली का वातावरण बदल जाएगा। देख लीजिए हम एक ही बार कलकत्ते गए थे कलकत्ते का वातावरण देखा आपने कैसा है? तभी हमने कहा था कलकत्ते का वातावरण बदल जाएगा। आठ दिन कलकत्ते में रहे, वातावरण बदल गया। लोगों के दिमाग जरा ठण्डा हो गया। आज महाराष्ट्र में सबसे अच्छा चल रहा है। वजह है इसकी। कितने ही लोग Realized हो गए महाराष्ट्र के, अब दिल्ली स्टेट को जाना है। और सारे संसार की कुण्डलिनी भारत-वर्ष में बैठी हुई है वो भी देख लीजिए, क्या कमाल है? भारतवर्ष में ही सारे विश्व की कुण्डलिनी बैठी हुई है और भारत वर्ष हमारा ठीक हो जाए सारा संसार ही ठीक हो जाए। और उसका सहस्रार भी यहीं बैठा हुआ है और इसलिए मुझे हज़ारों हिन्दुस्तानी ऐसे चाहिएं जो Realization दे पायें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का परामर्श

मुम्बई 27.05.1976

(मराठी से अनुवादित)

मैंने आपको बताया था कि सहजयोग में आप किस प्रकार निर्विचार चेतना को प्राप्त करते हैं। आत्मा से एकरूपता (तदात्मय) प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति परमात्मा का सामीप्य तथा सालोक्य प्राप्त कर सकता है। परन्तु आत्मा का तदात्म्य (एकरूपता) प्राप्त करने पर व्यक्ति की रुचियाँ ही परिवर्तित हो जाती हैं।

केवल आत्मा से एकाकारिता प्राप्त करने मात्र से, इसका अनुभव प्राप्त करने के पश्चात व्यक्ति में सालोक्य और सामीप्य की अवस्था में जाने की इच्छा नहीं होती। इसका अर्थ यह है कि जब आपके हाथों में चैतन्य लहरियाँ बहने लगती हैं और जब आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी को महसूस करते हैं, उनकी कुण्डलिनी को उठाने लगते हैं तो आपका चित्त दूसरे साधकों की कुण्डलिनी को देखने और अपनी कुण्डलिनी को समझने में लग जाता है। अपने चक्रों के प्रति आप सावधान हो जाते हैं और अन्य लोगों के चक्रों को भी समझते हैं।

आप यदि आकाश की ओर देखें तो वहाँ विद्यमान बादलों के बावजूद भी आपको बहुत सी प्रकार की कुण्डलिनीयाँ दिखाई देंगी। क्योंकि अब आपका चित्त कुण्डलिनी पर चला गया गया है तो जो भी कुछ आप कुण्डलिनी के बारे में जानना चाहते हैं, जो भी कुछ देखना चाहते हैं, जो भी इच्छाएं आपके अन्दर हैं वो सब आपके सम्मुख प्रकट होंगी। कुण्डलिनी में आपकी दिलचस्पी बढ़ती है और अन्य सभी चीज़ों में घटती है।

इस बात को इस तरह से समझने का प्रयत्न करें; जैसे आप बचपन को छोड़कर युवा अवस्था में प्रवेश करते हैं तो आपमें युवा आयु की रुचियाँ होती हैं। उदाहरण के रूप में आपकी नौकरी, व्यापार, परिवार आदि। अब आप केवल इन्हीं चीज़ों में दिलचस्पी लेते हैं और बाल्यावस्था की सभी दिलचस्पियाँ छूट जाती हैं, पुराने अनुभव धुंधले पड़ जाते हैं और आपका चित्त नए अनुभवों की ओर जाता है। या इसे इस तरह से समझने का प्रयत्न करें; मान लो एक व्यक्ति की रुचि संगीत में है। किसी भी प्रकार से उसकी रुचि संगीत में है-शास्त्रीय संगीत में। तब वह किसी अन्य संगीत का आनन्द नहीं ले पाएगा चाहे वह गैर-शास्त्रीय संगीत की सभा ही क्यों न हो।

सहजयोग में आपकी स्थिति भी बिल्कुल ऐसी ही होनी चाहिए। जहाँ तक आपकी अन्य आदतों तथा रुचियों का सम्बन्ध है उनकी वास्तविकता यह है कि उन्हें जान बूझकर शनै: शनै: विकसित किया गया है। अत: ये रुचियाँ गहन रूप से आपके अन्दर बनी हुई हैं। सहजयोग आपके अन्दर पूर्ण परिवर्तन लाया है। आप एक नई चेतना की अवस्था में आ गए हैं, अन्य लोगों की चैतन्य लहरियाँ और कुण्डलिनी को महसूस कर सकते हैं, बहुत से लोगों को आत्म साक्षात्कार दे सकते हैं। बहुत से लोगों को रोगमुक्त किया है। एक नई शक्ति में आप प्रवेश कर सकते हैं और यही शक्ति आपके अन्दर संचारित है।

परन्तु यह सब करते हुए एक कमी रह गई है कि आपने कोई भी प्रयत्न नहीं किया, फिर भी बिना किसी प्रयत्न के सभी कुछ घटित हो गया है। सम्भवत: यही कारण है कि यद्यपि बहुत से लोगों को सहज-योग में चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हो जाती हैं और वे एक स्तर तक उन्नत भी हो जाते हैं, परन्तु उनका चित्त परमात्मा, आत्मा एवं कुण्डलिनी पर कभी भी स्थापित नहीं हो पाता तथा बार-बार गलत चीज़ों की ओर दौड़ता है।

आपने पूछा था," आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् क्या करें?" प्राप्त करने के पश्चात् आप आत्मसाक्षात्कार दें। प्राप्त करने के पश्चात् देना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा प्राप्त करना अर्थहीन है। तथा देते हुए एक बात-केवल एक बात-मस्तिष्क में रखनी आवश्यक है

"कि शरीर, मन और बुद्धि-अर्थात् 'पूर्ण व्यक्तित्व' जिसके माध्यम से आप इतनी अद्वितीय चीज़ दे रहे हैं, वह अपने आपमें अत्यन्त सुन्दर होनी चाहिए। आपका अन्तस अत्यन्त स्वच्छ होना चाहिए।" इसमें कोई रोग नहीं होना चाहिए, आपमें यदि कोई रोग है-सम्भवत: कुछ सहजयोगियों में रोग होंगे। सहज-योग में आने से पूर्व आपको अवश्य चिन्ता होती होगी और आप इच्छा करते होंगे कि किसी भी तरह से बीमारियाँ ठीक हो जाएं। परन्तु आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आपका चित्त बीमारियों पर नहीं होना चाहिए और आपको कहना चाहिए, "यह ठीक हो जाएगी, कोई बात नहीं।" परन्तु यह गलत है। आपको जो भी समस्या है, चाहे वह छोटी सी है, रोग प्रभावित स्थान पर अपना हाथ रखकर आप इस रोग को ठीक कर सकते हैं। अपने शारीरिक पक्ष को आप अत्यन्त स्वच्छ रख सकते हैं।

जो भी हो आप लोगों के लिए मैंने एक इलाज बताया है। जैसे मैंने बताया है आपमें से हर एक प्रात: उठने के पश्चात् स्नानागार में जाकर स्वयं को स्वच्छ करें। ***कम से कम पाँच मिनट के लिए पानी पैर क्रिया करना भी सहजयोगियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।*** आप चाहे जितने उन्नत हों, चाहे आपको बिल्कुल पकड़ ना आती हो, फिर भी कम से कम पाँच मिनट के लिए आप पानी पैर क्रिया अवश्य करें। कभी-कभी तो मैं स्वयं भी यह क्रिया करती हूँ (यद्यपि मेरे लिए ऐसा करना आवश्यक नहीं है) ताकि सहजयोगी भी इस क्रिया को अपना लें। यह बहुत अच्छी आदत है।

सभी सहजयोगियों को चाहिए कि कम से कम पाँच मिनट के लिए पानी पैर क्रिया करें। सभी को चाहिए कि मेरे फोटो के सम्मुख दीपक जलाएँ, कुमकुम लगाएं और नमक वाले पानी में पैर डाल कर फोटोग्राफ के सम्मुख अपने हाथ खोल कर इस प्रकार से बैठ जाएँ। आप यदि ऐसा करते हैं तो आपकी आधी समस्याएँ तो स्वत: ही सुलझ जाएंगी। आप चाहे जितने व्यस्त हों, पाँच मिनट के लिए बैठना कठिन नहीं है। रात को सोने से पूर्व सभी को यह क्रिया करनी आवश्यक है। इससे आपकी आधी से ज्यादा समस्याएँ ठीक हो जाएंगी।

हम लोगों के अन्दर बहुत सी बुरी प्रवृत्तियाँ बनी हुई हैं, बहुत सी अन्धकारमय प्रवृत्तियाँ हमारे अन्दर बनी हुई हैं जिन्हें हम नकारात्मकता का नाम देते हैं। पूरी ताकत से वे हमें प्रभावित करने का प्रयत्न करती हैं। उनके नियन्त्रण में रहना शैतान के नियन्त्रण में रहना है। आप यदि चाहें तो शैतान बन सकते हैं और चाहें तो भगवान। यदि आप शैतान बनना चाहते हैं तो उस कार्य के लिए मैं आपकी गुरु नहीं हूँ। यदि आप भगवान बनना चाहते हैं तो मैं आपकी गुरु हूँ। शैतान बनने से स्वयं को बचाएँ।

ध्यान देने योग्य पहली बात यह है कि पूर्णमासी और अमावस्या की रातों में हमेशा आपके बाएँ और दाएँ पक्ष को प्रभावित होने का भय होता है। विशेष रूप से इन दो दिनों में-अमावस्या और पूर्णमासी-आपको चाहिए कि रात को जल्दी सो जाएँ। खाना खाने के पश्चात फोटोग्राफ को प्रणाम करें, ध्यान करें और सहस्रार पर चित्त को रखें तथा बन्धन ले कर सो जाएँ। इस का अर्थ यह है कि जिस क्षण आप अपने चित्त को सहस्रार पर ले जाते हैं उसी क्षण आप अचेतन में चले जाते हैं। उस स्थिति में स्वयं को बन्धन दें तो आपको सुरक्षा प्राप्त हो जाती है। विशेष रूप से इन दो रातों को। अमावस्या की रात को आपको श्री शिव का ध्यान करना चाहिए। श्री शिव का ध्यान करने के पश्चात आपको सोना चाहिए-अर्थात आत्मा का ध्यान करने के पश्चात-और स्वयं को उनके प्रति समर्पित करना चाहिए। पूर्णमासी की रात्रि को आपको चाहिए कि श्रीराम का ध्यान करें और सुरक्षा की कृपा करने के लिए स्वयं को उनके प्रति समर्पित करना चाहिए। रामचन्द्र शब्द का अर्थ है 'सृजनात्मकता'। अपनी सारी सृजनात्मक शक्तियाँ पूरी तरह से उन्हें समर्पित कर दें। इस प्रकार से इन दो रातों को आपको अपनी विशेष रूप से देखभाल करनी चाहिए।

शुक्ल पक्ष (Lunar fortnight) सप्तमी और नवमी को आपको मेरा विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। यह बात स्मरण रहे कि इन दो दिनों में आपको मेरा विशेष आशीर्वाद मिलता है। कुछ ऐसा प्रबन्ध करें कि इन दिनों में आप अच्छी तरह से ध्यान-धारणा करें। इस प्रकार से आपको चाहिए कि स्वयं को सुरक्षित करें।

जब भी घर से बाहर जाना हो तो स्वयं को बन्धन दें, हमेशा बन्धन में रहें।

किसी ऐसे व्यक्ति से यदि आपका सामना हो जिसे आज्ञा की पकड़ हो तो तुरन्त बन्धन ले लें चाहे यह बन्धन चित्त से ही क्यों न लेना पड़े। आज्ञा की पकड़ वाले व्यक्ति से वाद-विवाद न करें। ऐसा करना मूर्खता है। किसी भूत से क्या आप वाद-विवाद कर सकते हैं?

विशुद्धि की पकड़ वाले व्यक्ति से भी वाद-विवाद न करें। **सहस्रार से पकड़े हुए व्यक्ति के पास कभी न जाएँ, उससे कोई सम्बन्ध न रखें। उसे बताएँ कि पहले अपने सहस्रार को ठीक करो। उसे यह बताने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि 'आपका सहस्रार पकड़ा हुआ है इसे ठीक करें।'** सहस्रार स्वच्छ रखा जाना चाहिए। किसी को यदि सहस्रार पर पकड़ आने लगे तो उसे चाहिए कि तुरन्त अन्य सहजयोगियों से प्रार्थना करें कि कुछ करें और मेरा सहस्रार ठीक कर दें।' सहस्रार की पकड़ वाला व्यक्ति यदि आप से बात करता है तो उसे बता दिया जाना चाहिए कि वह आपका दुश्मन है, शत्रु है। जब तक यह पकड़ बनी हुई है तब तक उससे बात नहीं की जानी चाहिए।

जहाँ तक हृदय की पकड़ वाले व्यक्ति का सम्बन्ध है तो आपको चाहिए कि उसकी सहायता करें। जहाँ तक सम्भव हो उसके हृदय को बन्धन दें। श्री माताजी के फोटोग्राफ के सम्मुख बैठा कर उसका एक हाथ हृदय पर रखवाएँ। हृदय चक्र के विषय में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए। कभी भी व्यक्ति को हृदय चक्र की समस्या हो सकती है। अपने हृदय चक्र को अवश्य शुद्ध रखें।

परन्तु बहुत से लोगों में हृदय ही नहीं होता। वे इतने शुष्क व्यक्तित्व होते हैं। चाहते हुए भी आप ऐसे लोगों के लिए कुछ नहीं कर सकते। फिर भी यदि वे आपसे प्रार्थना करें तो उन्हें सलाह दें कि हठयोग को छोड़ दें, भिन्न कार्यों के बोझ से स्वयं को मुक्त करें, अन्य लोगों से प्रेम करना सीखें। यदि वे एक दम से किसी मनुष्य को प्रेम नहीं कर सकते तो पहले पालतु पशुओं से प्रेम करें। आपको चाहिए कि सभी से प्रेम करें।

बच्चों से प्रेम करें। उनके प्रति निर्दयी न बनें। वास्तव में किसी से भी नाइन्साफी न करें, किसी को हानि न पहुँचाएं, कोई भी बच्चों को पीटे नहीं, पीटने की मुद्रा में कभी अपना हाथ ना उठाएं, किसी पर क्रोधित ना हों। विशेष रूप से सहजयोगियों को तो कभी नाराज होना ही नहीं चाहिए। बिना नाराज हुए अत्यन्त विवेक एवम् युक्तिपूर्वक उन्हें सुधारना चाहिए। कभी नाराज न हों।

यह सब बातें मैंने इसलिए बताई हैं ताकि आप अपने शरीर यन्त्र को स्वच्छ कर सकें और कुछ आदर्श रखें। आपका लक्ष्य यदि ऊँचा होगा और आपमें यदि उत्थान की इच्छा होगी तभी आपका उत्थान होगा। नीचे की ओर कभी न देखें।

हर कदम पर, हर स्थान पर मैं आपके साथ हूँ सर्वत्र। कहीं भी आप चले जाएं, हर स्थान पर मैं आपके साथ हूँ-पूर्णतया व्यक्तिगत रूप से, हर प्रकार से, दिल-दिमाग से। जब भी आप मुझे याद करेंगे तो अपनी पूरी शक्तियों के साथ मैं आपके पास हूँगी। यह मेरा वचन है। जो लोग नर्क में जाना चाहते हैं उन्हें मैं नीचे की ओर ढकेल रही हूँ। अत: सावधान रहें और ऊपर को देखें।

सहस्रार दिवस

5 मई 1983 गोरई क्रीक, बम्बई

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप सबकी ओर से मैं बम्बई के सहजयोगी व्यवस्थापक जिन्होंने यह इन्तज़ामात किये हैं, उनके लिये धन्यवाद देती हूँ, और मेरी तरफ से भी मैं अनेक धन्यवाद देती हूँ। उन्होंने बहुत सुन्दर जगह हम लोगों के लिए ढूंढ रखी है। ये भी एक परमात्मा की देन है कि इस वक्त जिस चीज़ के बारे में मैं बोलने वाली थी, उन्हीं पेड़ों के नीचे बैठकर सहस्रार की बात हो रही है।

चौदह वर्ष पूर्व कहना चाहिये या जिसे तेरह वर्ष हो गए और अब चौदहवाँ वर्ष चल पड़ा है, यह महान् कार्य संसार में हुआ था, जबकि सहस्रार खोला गया। इसके बारे में मैंने अनेक बार आपसे हर सहस्रार दिन पर बताया हुआ है कि क्या हुआ था, किस तरह से घटना हुई, क्यों की गई और इसका महात्म्य क्या है।

लेकिन चौदहवाँ जन्म दिन एक बहुत बड़ी चीज़ है। क्योंकि मनुष्य चौदह स्तर पर रहता है, और जिस दिन चौदह स्तर वो लाँघ जाता है, तो वो फिर पूरी तरह से सहजयोगी हो जाता है। इसलिये आज्ञ सहजयोग भी सहजयोगी हो गया।

अपने अन्दर इस प्रकार परमात्मा ने चौदह स्तर बनाए हैं। अगर आप गिनिये, सीधे तरीके से, तो भी अपने अन्दर आप जानते हैं सात चक्र हैं, एक साथ अपने आप। उसके अलावा और दो चक्र जो हैं, उसके बारे में आप लोग बातचीत ज्यादा नहीं करते, वो हैं 'चन्द्र' का चक्र और 'सूर्य' का चक्र। फिर एक हँसा चक्र है, इस प्रकार तीन चक्र और आ गए। तो, सात और तीन-दस। उसके ऊपर और चार चक्र हैं। सहस्रार से ऊपर और चार चक्र हैं। और उन चक्रों के बारे में भी मैंने आपसे बताया था-अर्धबिन्दु, बिन्दु, वलय और प्रदक्षिणा, ऐसे चार चक्र हैं। सहजयोग के बाद भी, जब कि आपका सहस्रार खुल गया है, उस पर भी ये चार चक्रों में आपको जाना है-अर्धबिन्दु, बिन्दु, वलय और प्रदक्षिणा। इन चार चक्रों के बाद कह सकते हैं कि हम लोग सहजयोगी हो गए।

और दूसरी तरह से भी आप देखें, तो हमारे अन्दर चौदह स्थितियाँ, सहस्रार तक पहुँचने पर भी हैं। अगर उसको विभाजित किया जाए तो सात चक्र इड़ा नाड़ी पर और सात पिंगला नाड़ी पर हैं।

मनुष्य जब चढ़ता है, तो वो सीधे नहीं चढ़ता। वो पहले left (बायें) में आता है, फिर right (दायें) में जाता है, फिर left में आता है, फिर right में जाता है। और कुण्डलिनी जो है, वो भी जब चढ़ती है तो इन दोनों में विभाजित होती हुई चढ़ती है। इसकी वजह ये है कि मैं आपको अगर समझाऊँ कि दो रस्सी और दोनों रस्सियाँ इस प्रकार नीचे उतरते वक्त या ऊपर चढ़ते वक्त भी दो अवगुण्ठन लेती हैं। जब दो अवगुण्ठन लेती हैं, तो उसके left और right इस प्रकार से, पहले left और फिर right, दोनों के अवगुण्ठन होने से, फिर right वाली right को आ जाती है, left वाली left को चली जाती है।

आप अगर इसको देखें, तो मैं आपको दिखा सकती हूँ। समझ लीजिये इस तरह से आया। अब इसने एक चक्कर लिया, और दूसरे चक्कर लेने में फिर आ गई इसी तरफ। इस तरफ से आया, इस ने एक चक्कर लिया, फिर दूसरा चक्कर लिया, फिर इस तरफ। इस प्रकार दो अवगुण्ठन उसमें होते जाते हैं। इसलिये आपकी जब कुण्डलिनी चढ़ती है, तो चक्र पर आपको दिखाई देता है, कि left पकड़ा है या right, क्योंकि कुण्डलिनी तो एक है। फिर आपको एक ही चक्र पर दोनों चीज़

दिखाई देती हैं। इस प्रकार आप देखें कि left पकड़ा है या right पकड़ा है।

तो इस प्रकार हमारे अन्दर left और right, अगर दोनों का विभाजन किया जाए, एक चक्र का, तो सात दूनी चौदह। वैसे ही हमारे अन्दर चौदह स्थितियाँ तो पहले ही cross (पार) करनी पड़ती हैं, जब आप सहस्रार तक पहुँचते हैं। और अगर इसको आप समझ लें कि सात ये, और ऊपर के सात-इस तरह भी तो चौदह का एक मार्ग बना।

इसलिये, 'चौदह' चीज़ जो हैं वो कुण्डलिनी शास्त्र में बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत महत्वपूर्ण। बहुत महत्वपूर्ण चीज़ है। और जब तक हम इस चीज़ को पूरी तरह से न समझ लें, कि इन चौदह चीज़ों से जब हम परे उठेंगे, तभी हम सहजयोग के पूरी तरह से अधिकारी हैं। हमको आगे बढ़ते ही रहना चाहिए और उसमें पूरी तरह से रजते रहना पड़ेगा। रजना, विराजना-ये शब्द आपके सामने पहले बार भी मैंने बहुत कहे हैं लेकिन आज के दिन विशेषकर के, हम लोगों को समझना चाहिए कि सहस्रार के दिन रजना, विराजना क्या है।

अब आप यहाँ बैठे हैं, ये पेड़ों को आप देखिये। ये पेड़ श्रीफल का है। नारियल को 'श्रीफल' कहा जाता है। श्रीफल, जो नारियल है, इसके बारे में आपने कभी सोचा या नहीं, पता नहीं। लेकिन बड़े सोचने की चीज़ है-'इसे श्रीफल क्यों कहते हैं?'

ये समुद्र के किनारे होता है, और कहीं होता नहीं। सबसे अच्छा जो ये फल होता है, समुद्र के किनारे। वजह ये है कि समुद्र जो है, ये 'धर्म' है। जहाँ धर्म होगा, वहीं श्रीफल फलता है। जहाँ धर्म नहीं होगा, वहाँ श्रीफल नहीं होगा। लेकिन समुद्र के अन्दर 'सभी' चीजें बसी रहती हैं। हर तरह की सफाई, गन्दगी, हर चीज़ इसमें होती है। ये पानी भी 'नमक' से भरा होता है। इसमें नमक होता है। ईसा मसीह ने कहा था कि 'तुम संसार के नमक हो।' माने हर चीज़ में आप घुस सकते हो, 'हर चीज़' में आप स्वाद दे सकते हो। 'नमक हो'-नमक के बगैर इन्सान जी नहीं सकता। जो हम ये प्राण-शक्ति अन्दर लेते हैं, अगर हमारे अन्दर नमक न हो तो वो प्राण-शक्ति भी कुछ कार्य नहीं कर सकती। ये catalyst (कार्य-साधक) है। और ये नमक जो है, ये हमें जीने का, संसार में रहने का, प्रपन्च में रहने की पूर्ण व्यवस्था नमक करता है। अगर मनुष्य में नमक न हो, तो वो किसी काम का इन्सान नहीं। लेकिन परमात्मा की तरफ जब ये चीज़ उठती है, तो वो सब नमक को नीचे ही छोड़ देती है-'सब' चीज़ छूट जाती है। और जब इन पेड़ों पर सूर्य की रोशनी पड़ती है, और सूर्य की रोशनी पड़ने पर जब इसके पत्तों का रस और सारे पेड़ का रस, ऊपर की ओर खिंच आता है-क्योंकि evaporation होना (भाप बनता) है; तब इसमें से जो, इस तने में से जो यही पानी ऊपर बहता है-वो 'सब' कुछ छोड़कर के, उन चौदह चीज़ों को लाँघ करके, ऊपर जाकर के, श्रीफल बनता है।

वही श्रीफल आप हैं। और देवी को श्रीफल जरूर देना होता है। श्रीफल दिये बगैर पूजा सम्पन्न नहीं होती। श्रीफल भी एक अजीब तरह से बना हुआ है। दुनिया में ऐसा कोई सा भी फल नहीं, जैसे श्रीफल है। उसका कोई-सा भी हिस्सा बेकार नहीं जाता। इसका एक-एक हिस्सा इस्तेमाल होता है। इसके पत्तों से लेकर हर चीज़ इस्तेमाल होती है और श्रीफल का भी-हर एक चीज़ इस्तेमाल होती है।

आप देखें कि श्रीफल भी मनुष्य के सहस्रार जैसा है। जैसे बाल अपने हैं, इस तरह से श्रीफल के भी बाल हैं। 'यही श्रीफल है।' इसमें बाल होते हैं ऊपर में, इसके protection (रक्षा) के लिये। मृत्यु से protection हमें बालों से मिलता है। इस लिये बालों का बड़ा महान् मान

किया गया है-बाल बहुत महान् हैं, और बड़ी शक्तिशाली चीज़ हैं क्योंकि आपको protect करते हैं। इनसे आपकी रक्षा होती है। और इसके अन्दर जो हमारे जो cranial bones हैं, जो हड्डियां हैं, वो भी आप देखते हैं कि श्रीफल के अन्दर में बहुत कड़ा-सा इस तरह का एक ऊपर से आवरण होता है। उसके बाद हमारे अन्दर grey matter और white matter ऐसी दो चीजें हमारे अन्दर होती हैं। श्रीफल में भी आप देखें-white matter और grey matter.....और उसके अन्दर पानी होता है, जो हमारे में cerebrospinal fluid होता है। उसके अन्दर भी पानी होता है-वो limbic area होता है।

तो ये साक्षात् श्रीफल जो है, ये ही हमारा-अगर इनके लिये ये फल है, तो हमारे लिये ये फल है। जो हमारा brain (मस्तिष्क) है, ये हमारी सारी उत्क्रान्ति का फल है। आज तक जितना हमारा evolution (उत्क्रान्ति) हुआ है-जो amoeba (एक कोशिकीय जन्तु) से आज हम इन्सान बने हैं, वो सब हमने इस brain के फल स्वरूप पाया है। ये जो brain है, ये सब कुछ-जो कुछ हमने पाया है इस brain से। इसी में सब तरह की शक्तियाँ, सब तरह का इसी में सब पाया हुआ धन संचित है।

अब इस हृदय के अन्दर जो आत्मा विराजती है, और उसका जो प्रकाश हमारे अन्दर सहजयोग के बाद सात परतों में फैलता है, दोनों तरफ से, वो तभी हो सकता है, जब आदमी का सहस्रार खुला हो। अभी तक हम इस दिमाग से वो ही काम करते हैं। आत्म-साक्षात्कार से पहले, सिवाय इसके कि हम अहंकार और super-ego (प्रति-अहंकार) इन दोनों के माध्यम से जो कार्य करना है, वो करते हैं। अहंकार और प्रतिअहंकार, या आप कहिये 'मन' और 'अहंकार'-इन दोनों के सहारे हम सारे कार्य करते हैं। लेकिन realization (साक्षात्कार) के बाद हम आत्मा के सहारे कार्य करते हैं। आत्मा, realization से पहले, हृदय में ही विराजमान है, बिल्कुल अलग-'क्षेत्रज्ञ' बना हुआ, देखते रहने वाला। उसका काम, वो जैसा भी है, देखने का मात्र-वो करता रहता है। लेकिन उसका प्रकाश हमारे चित्त में नहीं है, वो हमसे अलग है, वो हमारे चित्त में नहीं है।

Realization के बाद तो हमारे चित्त में आ जाता है, पहले, पहले चित्त में आता है। और चित्त आप जानते हैं कि void (भवसागर) में बसा है। उसके बाद उसका प्रकाश सत्य में आ जाता है, क्योंकि हमारा जो मस्तिष्क है, उसमें प्रकाश आ जाने से हम सत्य को जानते हैं। जानते-माने ये नहीं कि बुद्धि से जानते हैं, पर साक्षात् में जानते हैं कि ये है 'सत्य'। उसके बाद उसका प्रकाश हृदय में दिखाई देता है। हृदय प्रगाढ़-हृदय बढ़ने लग जाता है, 'विशाल' होने लगता है, उसकी आनन्द की शक्ति बढ़ने लगती है। इसलिये 'सच्चिदानंद'-सत, चित्त और आनन्द-सत् मस्तिष्क में, चित् हमारे धर्म में और आनन्द हमारी आत्मा में-प्रकाशित होने लगता है। उसका प्रकाश पहले धीरे-धीरे फैलता है, ये आप सब जानते हैं। उसका प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता है, सूक्ष्म चीज़ होती है, पहले बहुत सूक्ष्म क्योंकि हम जिस स्थूल व्यवस्था में रहते हैं, उस व्यवस्था में उस सूक्ष्म को पकड़ना कठिन हो जाता है। धीरे-धीरे वो पकड़ आ जाती है। उसके बाद आप बढ़ने लग जाते हैं, अग्रसर होते हैं। सहस्रार का एक पर्दा खुलने से ही कुण्डलिनी ऊपर आ जाती है लेकिन उसका प्रकाश चारों तरफ जब तक नहीं फैलेगा, 'सिर्फ' ऊपर कुण्डलिनी आ जाने से आप ने सदाशिव के पीठ को नमस्कार कर दिया, आप के अन्दर की आत्मा का प्रकाश धुँधला-धुँधला बहने लगा, लेकिन अभी इस मस्तिष्क में वो पूरा खिला नहीं।

अब आश्चर्य की बात है कि आप अगर मस्तिष्क से

इसको फैलाना चाहें तो नहीं फैला सकते। अपना मस्तिष्क और अपना हृदय-इसका अब बड़ा सन्तुलन दिखाना होगा। आपको तो पता ही है, कि जब आप अपने बुद्धि से बहुत ज्यादा काम करते हैं, तो heart-failure (हृदय-गति रुकना) हो जाता है और जब आप heart (हृदय) से बहुत ज्यादा काम करते हैं, तो आपका brain (मस्तिष्क) फेल हो जाता है। इनका एक सम्बन्ध बना ही हुआ है, पहले से बना हुआ है। बहुत गहन सम्बन्ध है और उस गहन सम्बन्ध की वजह से, जिस वक्त आप पार हो जाते हैं, इसका सम्बन्ध और भी गहन होना पड़ता है। हृदय और इस brain (मस्तिष्क) का सम्बन्ध बहुत ही घना होना चाहिये। जिस वक्त ये पूरा integrate (एक) हो जाता है, तब चित्त आपका जो है, पूर्णतया परमेश्वर-स्वरूप हो जाता है।

ऐसा ही कहा जाता है हठ योग में भी कि 'मन' और 'अहंकार' दोनों का लय हो जाता है।' लेकिन ऐसी बात करने से तो किसी की समझ ही में नहीं आयेगा, 'इसका लय कैसे होगा?' मन और अहंकार का, तो लोग वो मन के पीछे लगे रहते हैं, अहंकार के पीछे लगे रहते हैं। अहंकार को मारते रहो तो मन बढ़ जाता है। मन को मारते रहो तो अहंकार बढ़ जाता है। उनके समझ ही में नहीं आता, कि ये पागलपन क्या है। ये किस तरह से जाए? मन और अहंकार दोनों को किस तरह से जीता जाए?

उसका एक ही द्वार है-'आज्ञा-चक्र'। आज्ञा-चक्र पर काम करने से मन और अहंकार जो हैं, उसका पूरी तरह से लय हो जाता है। और वो लय होते ही हृदय और ये जो brain है, इनमें पूरा 'सामंजस्य' पहले आ जाता है-concord। लेकिन एकता नहीं आती। **'इस एकता को ही, हम को पाना है।' तो आपका जो हृदय है, वही सहस्रार हो जाता है, और आपका जो सहस्रार है, वही हृदय हो जाता है। जो आप सोचते हैं, वही आपके हृदय में है, और जो कुछ आपके हृदय में है, वही आप सोचते हैं।** ऐसी जब गति हो जाए तो कोई भी तरह की आशंका, कोई भी तरह का अविश्वास, किसी भी तरह का भय, कोई-सी भी चीज़ नहीं रहती।

जैसे आदमी को भय लगता है, तो उसे क्या करते हैं? उसे brain से सिखाते हैं, देखो भाई, भय करने की कोई बात नहीं। देखो तुम तो बेकार चीज से डर रहे थे; 'ये देखो, प्रकाश लेकर।' फिर वो अपनी बुद्धि से तो समझ लेता है, पर फिर डरता है।

लेकिन जब दोनों चीज़ एक हो जाती है-आप इस बात को समझने की कोशिश कीजिये-कि जिस मस्तिष्क से आप सोचते हैं, जो आपके मन को समझाता है और सम्भालता है, वही आपका मन अगर हो जाए; यानि, समझ लीजिये कि ऐसा कोई instrument (यन्त्र) हो कि जिसमें accelerator (गति बढ़ाने वाला) और brake (रोकने वाला), दोनों automatic (स्वचालित) हों, और दोनों 'एक' हों-जब चाहे तो वो brake बन जाए, और जब चाहे तो वो accelerator हो जाए-और वो सब जानता है।

ऐसी जब दशा आ जाए, तो आप पूरे गुरु हो गये। ऐसी दशा हमको आनी चाहिये। अभी तक आप लोग काफी उन्नति कर गए हैं, काफी ऊँचे स्तर पर पहुँच गए हैं। जरूर अब आपको कहना चाहिए कि अब आप श्रीफल हो गये हैं। लेकिन मैं हमेशा आगे की बात इसलिये करती हूँ कि इस पेड़ पर अगर चढ़ना हो, तो क्या आपने देखा है, कि किस तरह से लोग चढ़ते हैं? अगर एक आदमी को चढ़ाकर देखिये तो आप समझ जाएँगे कि वो एक डोर बाँध लेता है चारों तरफ अपने, और उस डोर को ऊपर फँसाते जाता है। वो डोर जब ऊपर फँस जाता है, तो उस पर वो चढ़ता है। इसी तरह

से अपनी डोर को ऊँची फँसाते जाना है। और यही जब आप सीख लेंगे, तभी आपका चढ़ना बहुत जल्दी हो सकेगा।

पर ज्यादातर हम डोर को नीचे ही फँसाते रहते हैं। सहजयोग में जाने के बाद भी डोर हम नीचे की तरफ फँसाते हैं, और कहते हैं कि 'माँ हमारी तो कोई प्रगति नहीं हुई।' अब होगी कैसे? जब तुम डोर ही उल्टी तरफ फँसा कर नीचे उतरने की व्यवस्था करते हो! जिस वक्त नीचे उतरना है, तो फिर डोर को फँसाने की भी जरूरत नहीं। आप जरा-सी ढील दे दीजिये, ढर-ढर-ढर आप नीचे चले आएंगे। वह तो इन्तजाम से बना हुआ है-नीचे आने का। ऊपर चढ़ने का इन्तजाम बनाना पड़ता है। तो कुछ बनने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। और जो पाया है, उसे खोने के लिए कोई मेहनत की जरूरत नहीं-आप सीधे चले आइये ज़मीन पर; उसमें कोई तो प्रश्न खड़ा नहीं होता।

इसको अगर आप समझ लें, इस बात को, तो आप जान लेंगे कि 'नज़र अपनी हमेशा ऊँची रखें। अगर कोई सी भी सीढ़ी पर आप खड़े हैं, लेकिन आप की नज़र ऊँची है, तो वो आदमी 'उस' आदमी से ऊँचा है 'जो' ऊपर खड़े होकर भी नज़र नीची रखता है। इसीलिये कभी-कभी बड़े पुराने सहज योगी भी 'धक' से नीचे चले आते हैं। लोग बताते हैं कि 'माँ ये तो बड़े पुराने सहजयोगी थे। इतने साल से आपके साथ रहे, ये किया, वो किया-पर नज़र तो उनकी हमेशा नीची रही! तो मैं क्या करूँ? अगर नज़र नीचे रखी तो वो चले आये नीचे। नज़र हमेशा ऊपर रखनी चाहिए। अब जिसे भी फल को देखना है तो नज़र आपकी ऊपर। इनकी भी नज़र ऊपर है। इन सबकी नज़र ऊपर है, क्योंकि बगैर नज़र ऊपर किये हुए वो जानते हैं कि न हम सूर्य को पा सकते हैं, न ही ये कार्य हो सकता है; 'न तो हम श्रीफल बन सकते हैं'।

वृक्ष को बहुत अच्छे से देखना चाहिये और समझना चाहिये। सहजयोग आप वृक्ष से बहुत अच्छे से सीख सकते हैं। बड़ा भारी ये आपके लिये गुरु है। जैसे कि जब हम वृक्ष की ओर देखते हैं, तो पहले देखना चाहिये कि ये अपनी जड़ों को कैसे बैठाता है। पहले अपनी जड़ को ये सम्भाल लेता है और जड़ को सम्भालने के लिये ये क्या करता है। जड़ में घुसा जाता है। ये हमारा धर्म है, ये हमारा चित्त है-'इसमें' ये घुसा चला जाता है और उसी चित्त से वो खींचता है, उस सर्वव्यापी शक्ति को। ये तो उल्टा पेड़ है, ऐसा कहिये तो ठीक है। उस सर्वव्यापी शक्ति को ये जड़ खींचने लग जाता है, और इसको खींचने के बाद में आखिर उसको खींच कर करना क्या है? फिर उसकी नज़र ऊपर जाती है और इसी प्रकार वो श्रीफल बना हुआ है।

आपका सहस्रार भी इसी श्रीफल जैसा है। माँ को अत्यन्त प्रिय है और इसी सहस्रार को समर्पण करना चाहिये। अनेक लोगों ने कल मुझसे कहा कि 'माँ, हाथ में तो ठण्डा आता है, पैर में भी ठण्डा आता है, पर यहाँ नहीं आता।' वहाँ कौन बैठा हुआ है? बस इसको जान लेना चाहिये, यहाँ से ठण्डक आ जाएगी।

और वहाँ जो बैठे हुए हैं, वो सारे ही चीज़ों का फल हैं। इस पेड़ की जो नीचे गड़ी हुई जड़ें हैं, वो भी उसी से जन्मी हैं। इसकी जो तना है, इसकी जो मेहनत है, इसका जो evolution (उत्क्रान्ति) है, यह 'सब' कुछ अन्त में जाकर के वो फल बना। उस फल में सब कुछ निहित है। फिर से आप उस फल को ज़मीन में डाल दीजिये, फिर से वही सारी चीज़ निकल आएगी। 'वो सबका अर्थ वही है; वो सबका अन्त वही है। सारे संसार में जो कुछ भी आज तक परमात्मा का कार्य हुआ है, जो भी उन्होंने कार्य किया है, उसका सारा समग्र-स्वरूप,

फल-स्वरूप आज का हमारा यह महायोग है। और उसकी स्वामिनी कौन है? आप जानते हैं। तो ऐसे शुभ समय पर आप लोग पैदा हुए हैं, ऐसे शुभ अवसर में आकर के आपने ये प्राप्त किया है। सो धन्य समझना चाहिए और इस श्रीफल स्वरूप होकर के और समर्पित होना चाहिये।

पेड़ से तभी फल हटाया जाता है जब वो परिपक्व होता है, नहीं तो बेकार है। पकने से पहले वो माँ को नहीं दिया जाता। इसलिये परिपक्वता आनी चाहिये। बचपना छोड़ देना चाहिए। जब तक बचपना रहेगा, आप पेड़ से चिपके रहेंगे। लेकिन समर्पण के लिये पेड़ पर चिपका हुआ फल किस काम का? उस पेड़ से हटाकर के जो अगर वो समर्पित हो तभी माना जाता है कि पूजा सम्पन्न हुई। इसलिये सहजयोग को समझने के लिये एक बड़ा भारी आपके सामने प्रतीक रूप से स्वयं साक्षात् श्रीफल ही खड़ा हुआ है। यह बड़ी मेहरबानी हो गई कि आज यहाँ पर हम लोग सब एकत्रित हुए और इस महान् समारोह में इन सब पेड़ों ने भी हमारा साथ दिया है। यह भी सारी बातों से नादित हैं, यह भी स्पन्दित हैं और यह भी सुन रहे हैं; उसी ताल पर यह भी नाच रहे हैं। यह भी समझ रहे हैं कि बात क्या है।

इसी प्रकार आप लोगों के भी श्रीफल हैं, उसको पूरी तरह से परिपक्व करना है। उसको परिपक्व करने का एक ही तरीका है कि अपने हृदय से सामंजस्य बनायें। हृदय से एकाकार होने की चीज़ है। हृदय में और मस्तिष्क में कोई भी अन्तर नहीं है। हृदय से इच्छा करते हैं और मस्तिष्क से उसकी पूर्ति करते हैं। दोनों चीजें जब एकाकार हो जायेंगी तभी आपको पूरा लाभ होगा।

अब सर्वसाधारण लोगों के लिये सहजयोग एक बड़ी secret (रहस्यमयी) बात है। उनकी समझ में नहीं आने वाली-क्योंकि उनका जीवन ही रोज मर्रा का उसी level (स्तर) का है। उस पर वो चलते हैं। लेकिन आपका level अलग है। आप अपने level से रहिये। दूसरों की ओर अधिकतर जब आप देखते हैं तो दया-दृष्टि से, क्योंकि यह बेचारे क्या हैं, इनका क्या होने वाला है? यह कहाँ जायेंगे इनकी समझ में नहीं आता, इनकी गति ही क्या है? यह कौन-से मार्ग में पहुँचने वाले हैं? इसको समझ करके और आप लोग यह समझें कि इनको अगर समझाने से समझ आ जाये सहजयोग, तो बहुत अच्छा है-समझाया जाए। लेकिन अगर यह लोग परवाह न करें तो इनके आगे सर फोड़ने से कोई फायदा नहीं। अपने श्रीफल को फोड़ने से कोई फायदा नहीं। इसको बचाकर रखें। इसका कार्य बहुत ऊँचा है।

इसको बड़ी ऊँची चीज के लिये आपने पाया हुआ है और उसी ऊँचे स्तर पर इसे रखें और उसी सम्पन्न अद्भुत स्थिति को प्राप्त होने पर ही आप अपने को धन्य समझ सकते हैं। इसलिये हमको व्यर्थ चीज़ों के लिये अपनी खोपड़ी फोड़ने की कोई जरूरत नहीं। किसी से argue (बहस) करने की जरूरत नहीं। पर अपनी स्थिति को बनाये रखना चाहिए। नीचे उतरना नहीं चाहिए। जब तक यह नहीं होगा तब तक सहजयोग का पूरा-पूरा आप में जो कुछ समर्पण पाना था वो नहीं पाया। जो कुछ अपनाना था, वो नहीं पाया। जो कुछ growth (वृद्धि) थी वो नहीं पाई। जो आपकी पूरी तरह से सरदारगिरी पूरी उन्नति होने की थी, वो नहीं हुई और आप गलतफ़हमी में फँस गये। इसलिये किसी भी मिथ्या चीज़ पर आप यह न सोचें कि हम कोई बड़े भारी सहजयोगी हो गये या कुछ हो गये। जब आप बहुत बड़े हो जाते हैं तो आप झुक जाते हैं, आप झुक जाते हैं।

देखिये, इन तीन पेड़ों की ओर, हवा उल्टी तरफ बह रही है। वास्तव में तो पेड़ों को इस तरफ झुक जाना चाहिये जबकि हवा इस तरफ बह रही है। लेकिन पेड़

किस तरफ झुके जा रहे हैं? आप लोगों ने कभी mark किया है कि सारे पेड़ों की दिशा उधर है। क्यों? वहाँ से तो हवा आकर के उसको धकेले जा रही है फिर तो भी पेड़ उसी तरफ क्यों झुक रहे हैं? और अगर ये हवा न चले तो न जाने और कितने ये लोग झुक जायें। क्योंकि ये जानते हैं कि सबको देने वाला "वो" है। उसके प्रति नतमस्तक होकर के वो झुक रहे हैं और 'वो' देने वाला जो है, वो है "धर्म"। हमारे अन्दर जो धर्म है जब वो पूरी तरह से जागृत होगा, पूरी तरह से कार्यान्वित होगा, तभी हमारे अन्दर के श्रीफल इतने मीठे, सुन्दर और पौष्टिक होंगे। फिर तो आपके जीवन से ही संसार आपको जानेगा और किसी चीज़ से नहीं जानेगा, आप लोग कैसे हैं।

अब चौदह बार आप इसका जन्मदिन, इस सहस्रार का मना रहे हैं और न जाने कितने साल और इसका मनाएंगे। लेकिन जो भी आपने इस सहस्रार का जन्मदिन मनाया उसी के साथ-साथ आपका भी सहस्रार खुल रहा है और बढ़ रहा है।

कोई भी तरह का compromise (समझौता) करना, कोई भी तरह की बातों में अपने को ढील दे देना, सहजयोगियों को शोभा नहीं देता। जो आदमी सहजयोगी है उसको वीरस्वपूर्ण अपना मार्ग आगे बढ़ाना चाहिये। कितनी भी रुकावटें आयें, घर वाले हैं, family वाले हैं, ये हैं, वो हैं, तमाशे हैं, इनका कोई मतलब नहीं। ये सब आपके हो चुके हज़ार बार। इस जन्म में आपको पाने का है और आपके पाने से और लोग पा गये तो उनका धन्य है, उनका भाग्य है। नहीं पा गये तो क्या आप, क्या उनको अपने हाथ से पकड़कर ऊपर ले जाओगे? यह तो ऐसा हो गया कि आप समुद्र में जायें और अपने पैर में बड़े-बड़े पत्थर जोड़ लें और कहें कि 'समुद्र, देखो, मुझे तो तैराकर ले जाओ।' समुद्र कहेगा कि 'भई! ये पत्थर तो छोड़ो पहले पैर के, नहीं तो कैसे ले जाऊंगा, मैं?' पैर में बड़े-बड़े आप ने लोड बाँध दिये तो उनको कटवा ही देना अच्छा है और नहीं कटवा सकते तो कम-से-कम ये करो कि उनसे परे रहो। इस तरह की चीजें जो-जो आपने पैर में बाँध रखी हैं, उसे एकदम तोड़-ताड़ कर ऊपर उठ जाओ। कहना चाहिये, आपको जो करना है करिये लेकिन हम से कोई मतलब नहीं क्योंकि और ऐसे ही कितनी बाधायें हैं और यह फालतू की बाधायें लगा लेने से कोई फायदा नहीं।

जिस तरह से ये पेड़ देखिये, इतना भारी फल उसको उठा लेते हैं-ऊपर! कितना भारी होता है यह फल, इसके अन्दर पानी होता है। इस फल को उसने अपने ऊपर उठाया है। इसी प्रकार आपको भी इस सर को उठाना है और इस सर को उठाते वक्त ये याद रखना चाहिए कि सर को नत मस्तक होना चाहिये, समुद्र की ओर। समुद्र जो है, ये धर्म का लक्षण है। इसको धर्म की ओर नतमस्तक होना चाहिए। बहुत-से सहजयोगी यह समझते ही नहीं हैं कि जब तक हम 'धर्म' में पूरी तरह नहीं उतरते, हम सहजयोगी हो ही नहीं सकते। हर तरह की गलतियाँ करते रहते हैं। जैसे बहुत-से लोग हैं, तम्बाकू खाते हैं, सिगरेट पीते हैं, शराब पीते हैं, ये सब करते रहते हैं और फिर कहते हैं हमारी सहज योग में प्रगति नहीं हुई।' तो होगी कैसे? आप अपने ही पीछे हाथ धो करके लगे हैं।

सहजयोग के कुछ छोटे-छोटे नियम हैं, बहुत simple (सादे) हैं-इसके लिये आपको शक्ति मिली है वो पूरी तरह से आप अपने आचरण में व्यवहार में लायें। और सबसे बड़ी चीज जो इनके (पेड़ों के) झुकाव में है वो नतमस्तक होना, और उस प्रेम को अपने अन्दर से दर्शित करना। जो कुछ आपने परमात्मा से पाया, उस प्रेम को परमात्मा को समर्पित करते हुए याद रखना चाहिए कि

सबके प्रति प्रेम हो।

अन्त में यही कहना चाहिये कि **जिस मस्तिष्क में, जिस सहस्रार में प्रेम नहीं हो, वहाँ हमारा वास नहीं है।** सिर्फ दिमाग में प्रेम ही की बात आनी चाहिये कि प्रेम के लक्षण में क्या करना है। गहराई से सोचें, तो मैं फिर वही कह रही हूँ कि दिल को कैसे हम प्रेम में ला सकते हैं। यही सोचना चाहिये कि क्या ये मैं प्रेम में कर रहा हूँ? ये क्या प्रेम में बात हो रही है? सारी चीज़ मैं प्रेम में कर रहा हूँ? ये सब कुछ बोलना मेरा, करना-धरना क्या प्रेम में हो रहा है? किसी को मार-पीट भी सकते हैं आप प्रेम में। इसमें हर्ज नहीं। अगर झूठ बात हो तो मार सकते हैं-कोई हर्ज नहीं। लेकिन यह क्या प्रेम में हो रहा है? देवी ने इतने राक्षसों को मारा, वो भी प्रेम में ही मारा। उन से भी प्रेम किया, उससे वो ज्यादा कहीं, और भी राक्षस के महाराक्षस न बन जायें और अपने भक्तों को प्रेम की वजह से, उनको बचाने के लिये, उनको मारा। उस अनन्त शक्ति में भी प्रेम का ही भाव है जिससे उनका हित हो वही प्रेम है।

तो क्या आप इस तरह का प्रेम कर रहे हैं कि जिससे उनका हित हो? यह सोचना है। और अगर कर रहे हैं तो आपने वो चीज़ पा ली जो मैं कह रही थी कि सामंजस्य आना चाहिए। तो वो सामंजस्य आपके अन्दर आ गया।

एक ही शक्ति है जिसे हम कह सकते हैं 'प्रेम' और प्रेम ही से सब आकारित होने से सब चीज़ सुन्दर, सुडौल और व्यवस्थित हो सकती है। जो सिर्फ शुष्क विचार हैं उसमें कोई अर्थ नहीं। और शुष्क विचार तो आप जानते ही हैं, वो सिर्फ अहंकार से आता है और जो मन से आने वाली चीज़ है वो दूसरी-ऊपर से जरूरी उसको खूबसूरती ला देती है लेकिन अन्दर से खोखली है। इसलिए एक चीज़ गन्दी होती है लेकिन शुष्क होती है, दूसरी चीज़ सुन्दर होती है लेकिन नीरस होती है, पूर्णतया खोखली होती है। एक नीरस है, तो दूसरी खोखली। दोनों चीज़ों का सामंजस्य इस तरह से बैठ ही नहीं सकता क्योंकि एक दूसरे के विरोध में है।

लेकिन Realization (आत्म-साक्षात्कार) के बाद में, सहजयोग में आने के बाद में सारे विरोध छूटकर के जो चीज़ विरोधात्मक लगती है, वो ऐसा लगता है कि वो एक ही चीज़ के दो अंग हैं। और यह आपके अन्दर हो जाना चाहिये। जिस दिन ये चीज़ घटित होगी, तब हमें मानना पड़ेगा कि हमने अपने सहस्रार का 14वाँ जन्मदिन पूरी तरह से मनाया।

परमात्मा आप सबको सुखी रखे और इस शुभ अवसर पर हमारी ओर से और सारे देवताओं की ओर से, परमात्मा की ओर से आप सब को अनन्त आशीर्वाद।

श्रीमाताजी की महिलाओं से बातचीत

जनवरी 1984

महिलाओं को वह सब करने की आवश्यकता नहीं है जो पुरुष करते हैं अन्यथा उनकी शक्ति पूर्णतया बर्बाद हो जाएगी। इस कुम्भ युग में कुण्डलिनी उत्थान के लिए पूरी तैयारी कर दी गई है ताकि बाँए और दाँए का मिलन हो, उनमें सन्तुलन आए तथा आप लोग प्रज्जवलित-ज्योतिर्मय बन जाएं। यह हमारे अस्तित्व का प्रश्न था ताकि पूरे ज्ञान को उचित सूझ-बूझ से परस्पर बाँटा जाए। अब देखिए कि किस प्रकार स्वयं पृथ्वी माँ की सृष्टि हुई। यह अत्यन्त साधारण चीज़ है। सर्वप्रथम ऊर्जा की गतिविधि का प्रवाह आरम्भ हुआ। यह शक्ति मिश्रित शक्ति है, ठीक है। तत्पश्चात् यह मिश्रित शक्ति चहुँ ओर परिक्रमा में चली गई और जब इसने पिण्ड रूप धारण किया तो तुमुल-नाद (Big-bang) हुआ। अब यह एक पुरुषोचित (मर्दाना) (Manly) कार्य है, या मुझे कहना चाहिए, यह मर्दाना शैली है क्योंकि अभी तक पृथ्वी माँ का सृजन नहीं हुआ था। अत: ये छोटे-छोटे पिण्ड गोल-गोल परिक्रमा में घूमते रहे और गोल गति में घूमते हुए इन्होंने गोलाकार धारण किया। इन गोल पिण्डों में से एक कार्य विशेष के लिए धरा माँ को चुना गया। पृथ्वी माँ पर जल में से जीवन का उदय हुआ-कार्बन का प्रवेश हुआ। सभी शक्तियों ने सहायता की और मानव का सृजन हुआ। तत्पश्चात् मानव अपने समाज को सुधारने के लिए निकला और अपने अहम् के माध्यम से जो भी बन पाया उसने किया। अब यह सब हो चुका है। मानव अपना कार्य कर चुका है और अब वह अनुदान (Dole) का आनन्द ले रहा है।

अब महिलाओं ने अपना कार्य पूर्ण करना है और मिल कर आगे बढ़ना है। महिलाएँ, या हम कह सकते हैं कुण्डलिनी, इतने वर्षों तक आराम फरमा रही थी और समय की प्रतीक्षा कर रही थी। क्या यह बात ठीक नहीं है। अत: हम कहते हैं कि 'अब बसन्त का समय आ गया है'। 'Blossom time has now come'. इस समय पर कुण्डलिनी को उठना है और इस प्रकार प्रज्जवलित करना है कि पूरे विश्व की पूर्णता घटित हो सके। यह सहज बात है। क्या अब आप इसे समझ पाए? अत: पुरुषों और महिलाओं में कोई स्पर्धा नहीं है, परन्तु उनकी कार्य शैली भिन्न है। आप जब इस बात को समझ जाएँगे केवल तभी इस प्रकार कि क्रांति घटित हो सकेगी जो कि विद्रोह नहीं बन पाएगी। वास्तव में महिलाएँ आज-कल पुरुषों के विरुद्ध विद्रोह कर रही हैं। यह मूर्खता है। यह ऐसा सिरदर्द है जैसे आप किसी चीज़ का सृजन करते हैं, उसे विकसित होने का अवसर देते हैं और कोई दूसरा आता है, जिसे यह कार्य पूर्ण करना होता है, परन्तु वह विद्रोह कर उठता है। अत: क्रांति तो घटित होती है परन्तु यह क्रांति तभी सम्भव है जब हम यह समझ लें कि कार्य का कौन सा भाग बाकी है, कौन सा कार्य होना शेष है। क्या आप मुझे ठीक से समझ रहे हैं?

तो कार्य का वह भाग अब करना है - आत्मसाक्षात्कार, हमारी कुण्डलिनी की जागृति। इस कार्य के लिए आप के मादा गुण (Feminine Qualities) आपकी मदद करेंगे, आपके मर्दाना गुण नहीं। अत: पुरुषों को चाहिए कि आक्रामकता (Aggressiveness) त्याग दें। वैसे भी क्योंकि अब वो सहजयोगी हैं, उन्हें मादा गुण (विनम्रता) अपनानी होगी। परन्तु यह मादा गुण परस्पर झगड़ना नहीं है। महिलाएँ यदि परस्पर लड़ती हैं तो वे महिलाएँ नहीं हैं। आप देखें, महिलाओं को कहा जाता है कि, 'आप किसी काम की नहीं।' तो अब वो यह दर्शाने के प्रयत्न कर रही हैं 'नहीं, हम भी ठीक हैं। आप ने (पुरुष) यदि एक कौवा खाया है तो हम तीन कौवे खाएँगी।'

अब सूझ-बूझ तथा विवेकशील सोच यह होगी कि, "हमें जीवन की इस प्रथा तथा शैली को बदलने के लिए क्या करना होगा? यहाँ पर क्या दोष है?" परिवर्तन बिन्दु आ गया है। उत्थान किसी भी प्रकार से विद्रोह नहीं है। लोगों के मन में यह गलत धारणा है। ऐसा नहीं है कि आप मुझे चोट मारो और मैं आपको चोट मारूँ तथा दोलक (Pendulum) कि तरह से एक दूसरे को चोट मारते चले जाएं। यह धमाके की तरह से नहीं है कि आज आप ने मुसलमान के रूप में जन्म लिया, कल यहूदी के रूप में और फिर हिन्दू के रूप में-यह दोलक नहीं है। यह कुण्डलाकार गति है। अत: जब-जब भी आप कोई उत्थान प्राप्त करते हैं तो पहले से ऊँचे स्थान पर पहुँच जाते हैं। अत: उत्थान की गति कुण्डलाकार है। क्या आप मेरी इस बात को समझ पाए?

अपने अस्तित्व की उच्चतम स्थिति पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए यह समझना चाहिए कि इस बिन्दु से उस बिन्दु तक पहुँचने के लिए हमारी चाल दोलक जैसी न होकर कुण्डलाकार (घुमावदार) होती है। कुण्डल के रूप में चलने के लिए व्यक्ति को एक अन्य प्रकार की शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। अभी तक जो भी शक्ति आप उपयोग करते रहे हैं, उसमें दूसरे प्रकार की शक्ति के गुण लाने होंगे - और यह महिलाओं के मादा गुण हैं। परन्तु आज मादा महिलाएँ हैं कहाँ? मैं महिलाओं की तरह से वस्त्र पहनती हूँ परन्तु इतना ही काफी नहीं है। अन्दर से, हृदय से, क्या उनमें कोमल मादा-हृदय है? ईसा-मसीह ने यह चीज़ अपने जीवन में दर्शायी थी। उन्होंने क्षमा की। केवल महिला ही क्षमा कर सकती है, पुरुष क्षमा नहीं कर सकता क्योंकि वो तो स्वभाव से ही आक्रामक होता है। वह किस प्रकार से क्षमा कर सकता है? श्रीकृष्ण ने कभी भी किसी को क्षमा नहीं किया। वो तो वध कर दिया करते थे। शाही फैशन से-"तो ठीक है, अगर तुम ऐसे हो तो ठीक है।" समाप्त। ईसा-मसीह ने इस सीमा तक क्षमा दर्शायी थी, अब वे इस कुण्डल को परिवर्तन प्रदान कर रहे हैं और आप मानवों के अन्दर ये जो मादा गुण है (क्षमा शीलता) विकसित होनी आवश्यक है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि आप महिलाओं की तरह से चलना शुरु कर दें या पतली कमर बनाने लगें। क्योंकि यह एक अन्य मूर्खता है। उन्हें 'माँ सम' होना हैं, पिता सम नहीं, माँ सम। एक दूसरे के प्रति व्यवहार में आपके अन्दर 'वह करुणा', 'वह कोमलता' होनी चाहिए।

नि:संदेह यह शक्ति त्रुटि सुधार भी करती है, कभी-कभी नाराज़ भी हो जाती है। माँ को भी कई बार, बच्चे यदि अपने व्यवहार में सुधार न करें तो माँ (आदि शक्ति) को भी कभी-कभी नाराज़ होना पड़ता है, क्रोधित होना पड़ता है। कई बार उसे चिल्लाना पड़ता है, दण्ड देना पड़ता है और कई बार विनाश भी करना पड़ता है। यह बात ठीक है, परन्तु ऐसा कभी कभी होता है। हमेशा नहीं।

अत: व्यक्ति को यह स्वीकार करना होगा कि माँ की तरह से बनने के लिए उसमें सहन-शक्ति आवश्यक है-आधार (धारण करने वाला) सभी चीज़ों का आधार। वो सभी चीज़ें ले लेती है, चैतन्य लहरियों को भी सोख लेती है। अब आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के बाद, पहली बार आप उन्हें वो लौटा सकते हैं जो आपने उनसे लिया है। उनके बनाए हुए पेड़ों को आप चैतन्य लहरियाँ दे सकते हैं और उन्हें सुन्दर बना सकते हैं। किसी भी पुष्प को आप अधिक सुन्दर बना सकते हैं। जो भी कुछ आपने पृथ्वी माँ से प्राप्त किया है वह आप लौटा सकते हैं, क्योंकि पृथ्वी माँ अब आपके अन्दर जागृत हो गई है। अत: जो भी कुछ आपने उनसे प्राप्त किया है वह सब उन्हें लौटा दें, अन्य लोगों को दें - 'उदारता, हृदय की

विशालता, श्रेष्ठता, क्षमाशीलता, प्रेम, स्नेह और प्रेम के कारण सभी कुछ सहन करना।' शिशु की रक्षा करने के लिए माँ खुद भूखी रह जाएगी, सभी कुछ करेगी-अपने बच्चे के प्रति माँ का इतना समर्पण होता है, वही माँ वास्तव में सच्ची माँ है। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि आज कल जो माताएं आप देखते हैं, वो न तो माताएं हैं और न ही महिलाएं। मैं जो कह रही हूँ वही माँ की सच्ची प्रतिमा है और आपके सम्मुख एक ऐसी प्रतिमा विद्यमान है। आप चाहे, पुरुष हो या महिलाएं, सहजयोगियों के रूप में आपने अपने अन्दर यह गुण विकसित करने हैं। **अपने अन्दर आपने प्रेम, स्नेह एवं करुणा रूपी नई चेतना विकसित करनी है। क्रोधित होना, आपा खो देना, लोगों पर चिल्लाना आदि से आपको कोई लाभ न होगा।** 'आप यदि पूर्ण की सहायता करना चाहते हैं, पूर्ण विकास चाहते हैं तो स्वयं को विनम्र बनाने का प्रयत्न करें, स्वयं पर नाराज़ हों कि आप क्रोधित होते हैं और दूसरों के प्रति इतने क्रूर हैं। मर्दानगी के अवांछित विकास के कारण ही सारी समस्या उत्पन्न हुई है।' यह एक ऐसे बिन्दु पर पहुँचता है, इतने कष्टकर बिन्दु तक यह पहुँचता है कि अब इसे नीचे आना ही चाहिए, हर सहजयोगी, हर व्यक्ति के लिए आपके मन में प्रेम होना चाहिए।

नए साधकों के साथ किस प्रकार से व्यवहार करें? सर्वप्रथम आपको भद्र, विनम्र, मधुर एवम् सुखकर होने के विषय में सोचना चाहिए। इसके विषय में सोचें और इसके तरीके खोज निकालें। शाम को बैठकर लिख लेना बहुत अच्छा होगा कि 'आज मैंने कितनी मधुर बातें कहीं?'

जिस प्रकार से प्राय: हम मधुर बातें करते हैं वैसे नहीं-'आज आप बहुत सुन्दर लग रही हैं' आदि-आदि। सतही बातें नहीं, इन बातों से अहम् को बढ़ावा मिलता है। कुछ बातें वास्तव में बहुत मधुर होती हैं। आप बहुत से मधुर शब्द कह सकते हैं जैसे 'आपको ठंड तो नहीं लग रही?' प्रश्न पूछने का यह बहुत मधुर तरीका है। यह बहुत साधारण बात है। इस बात को आप देख सकते हैं। परन्तु मैंने यह देखा है कि लोगों को इतनी सी बात कहने में भी कठिनाई होती है! अन्य लोगों के सुख-सुविधाओं को देखना, मान लो कोई व्यक्ति बैठा है उसे पानी चाहिए। आपको चाहिए कि दौड़ कर उसे पानी दें। 'ओह! इतनी आशा करना तो बहुत ज्यादती है। हे परमात्मा! आपने पानी दिया!' 'मैं आपका नौकर नहीं हूँ'-तुरन्त यह प्रश्न मस्तिष्क में उठता है। यहाँ वहाँ कुछ कर देना, कुछ सोचना, बाज़ार जाकर कुछ खोजना। 'ओह! यह चीज मुझे उसके लिए ले जानी चाहिए। ऐसा कर देना चाहिए। मैंने कुछ बच्चों को देखा है जो सदैव यही सोचते रहते हैं कि अपने मित्रों के लिए क्या खरीद लें?' 'मेरे मित्र के लिए यह चीज़ बहुत अच्छी है। उसे ऐसी चीजें बहुत पसन्द हैं।' यह सभी छोटी-छोटी बातें बहुत आवश्यक हैं। एक दूसरे के लिए यह सभी छोटे-छोटे कार्य करें। कभी-कभी ऐसी छोटी-छोटी चीजें जैसे जब आप प्रात: काल उठते हैं तो देखते हैं कि कोई व्यक्ति सोया हुआ है, उसका कम्बल एक तरफ पड़ा है और सराहना दूसरी तरफ। उसको देखना एक माँ का कार्य है। किसी भय के कारण नहीं, मात्र प्रेम के कारण उसे देखें। यदि ठंड है और किसी सहजयोगी के बटन खुले हुए हैं तो आप उसे बन्द कर सकते हैं। छोटी-छोटी चीजें हैं जो आप जानते हैं।

महिलाएं भी बहुत से मधुर कार्य कर सकती हैं। ऐसे कार्य जिनसे पुरुष प्रसन्न हो जाते हैं। परन्तु आजकल महिलाओं में यह विवेक समाप्त हो गया है। लड़ना-झगड़ना नहीं है। यह सोचना है कि कौन से मधुर कार्य आप कर सकते हैं। अहम् पर नियन्त्रण पाने के लिए, सहजयोगी

बनने के लिए, किस सीमा तक आप सहजयोग के सत्य से एकरूप हैं? यह आप पर निर्भर करता है कि आप इसे कितना प्राप्त करेंगे, कितना आत्मसात करेंगे। आप ही ने सभी कुछ परिवर्तित करना है। यह आपका कार्य है इसलिए यह गम्भीर मामला है।

दूसरी बात मैं हमेशा कहती रही हूँ कि अहम् की समस्या के कारण हम अत्यन्त अवखन्डित (Disintegrated) रहे हैं। हम इतने अवखन्डित रहे हैं कि परमात्मा से हमारा सम्बन्ध कभी भी पूर्णत: स्थापित नहीं हुआ। जैसा मैंने बताया कि जिस यन्त्र के माध्यम से मैं बात कर रही हूँ (माईक) अगर यह पाँच हिस्सों में बंट जाए और इसके पाँचों भाग परस्पर लड़ने लगें तो इसके माध्यम से आप कुछ भी नहीं कर सकते हैं चाहे यह अपने स्रोत से जुड़ा हुआ ही क्यों न हो। इसी प्रकार से यदि आप अब भी अवखन्डित हैं तो आप को योग प्राप्त नहीं हो सकता।

हमारे यहाँ कुछ बहुत उच्च स्तर के सहजयोगी होंगे। मैं यह भी जानती हूँ कि कुछ मध्यम दर्जे के होंगे, कुछ बेकार होंगे और कुछ को बाहर फेंक दिया जाएगा। सभी प्रकार के सहजयोगी हमारे यहाँ होंगे यह बात मैं जानती हूँ। अब आपने स्वयं यह निर्णय करना है कि आप कौन से दर्जे में आते हैं।

उदाहरण के रूप में मैंने देखा है कि लोग यहाँ सहजयोग के लिए आते हैं परन्तु उनकी रुचियाँ और प्राथमिकताएँ अन्य चीजों में होती हैं और वही उनके लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्हीं के लिए वे सारा समय बर्बाद कर देते हैं और फिर कहते हैं कि, "श्रीमाताजी, सहजयोग में हमारी उन्नति ठीक प्रकार से नहीं हो रही है।" आप यदि निर्णय करें, (जैसे मिस्टर वेणुगोपालन आपको बता चुके हैं) कि 'हमें सर्वप्रथम सहजयोग करना है बाकी सबकुछ बाद की बातें हैं' केवल तभी आपके अन्दर वास्तव में सहजयोग स्थापित हो पाएगा। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप कौन सा स्थान लेते हैं और किस स्तर तक पहुँचते हैं। यदि आप अन्य सहजयोगियों के विषय में, छोटी-छोटी अनावश्यक चीजों को सोचने में ही अपना सारा समय बर्बाद कर रहे हैं तो आपका विघटन (Disintegration) और अधिक बढ़ जाएगा, आप इससे और भी दूर चले जाएंगे। क्योंकि यह सभी निर्णय आपके अहम् द्वारा लिए गए हैं। उदाहरण के रूप में आपका कहना कि, "मुझे यह पसन्द नहीं है, मैं वो नहीं करता, मैं यह नहीं देखता, आदि-आदि।'

किसी तरह से यदि आप अपने अहम् को कार्य करते हुए देख लें तो आप इससे मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे और यही कार्य व्यक्ति ने करना है-अहम् से झगड़ना नहीं है। मैं कभी नहीं कहती कि अहम् से लड़ाई करें। इसे समर्पित कर दें। केवल इसी तरीके से आपका अहम् जा सकता है।

झूठे सन्तों का सम्मान न करें। उनकी जूता पिटाई करें। प्रात: काल उठ कर ध्यान-धारणा करें। यहाँ (इंग्लैंड) पर तो लोग प्रात: उठने के लिए ही एतराज करते हैं। इस तरह की धीमी गति वाले लोगों के साथ आप क्या करेंगे? आप देखिए, ऐसा कर पाना अत्यन्त कठिन है और मैं यह सोचती हूँ कि हमें यह समझ लेना आवश्यक है कि पश्चिम में हमारे सम्मुख बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। यह घटना लन्दन में ही होनी थी, इसका आरम्भ इंग्लैंड में ही होना था। इसलिए आप लोगों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आपको अपना तथा सहजयोग का बार-बार मूल्यांकन करना होगा और यह जान लेना होगा कि आपका अहम् तथा प्रतिअहम् ही आपकी गति को रोक रहा है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

परन्तु अहम् मुख्य समस्या है। मैं आपको बता देना

चाहती हूँ कि अहम् ही मुख्य समस्या है। परन्तु बलपूर्वक मैं किसी को नहीं कह सकती कि यह आपका अहम् है क्योंकि ऐसा करने पर तो वे मेरे सिर पर कूद पड़ेंगे। परन्तु अहम् को देखने का प्रयत्न करें। देखें कि किस तरह से यह विचलित कर रहा है। आप अपने आनन्द को खोज रहे हैं। यह आपका अपना है परन्तु आपसे छुपा हुआ है और आप इसे युगों से खोज रहे हैं। अब इसी का रहस्य मैंने समाप्त करना है। जो व्यक्ति आपको महानतम चीज देने का प्रयत्न कर रहा है उससे बहस करने का क्या लाभ है? यह तो अपनी शक्ति को बर्बाद करना है। मूर्खतापूर्ण चीज़ों तथा दूसरों के दोष खोजने में अपनी शक्ति बरबाद न करें।

अब श्री वेणुगोपालन हमारी पुस्तक की छपाई आदि का बहुत ही शान्तिपूर्वक प्रबन्ध कर रहे थे। कोई समस्या मेरे सम्मुख नहीं आई। आपने दिल्ली के कैम्प देखे हैं, यह किस प्रकार कार्य करते हैं! आपने देखा है कि वहाँ कार्य करने के लिए कितने अधिक लोग होते हैं! कभी कोई समस्या नहीं होती। आपने किसी को शिकायत करते हुए, लड़ाई झगड़ा करते हुए देखा है? इस प्रकार का कुछ भी नहीं हुआ। हर समय दूसरों के दोष खोजना या स्वयं को दोष देते रहना, विवेक का चिन्ह नहीं है। दोनों ही बातें गलत हैं। सर्वोत्तम बात तो अधिक से अधिक विवेक को प्राप्त करना और स्वयं यह देखना है कि हम अधिक से अधिक बुद्धिमान बन रहे हैं। आपमें से कुछ लोग वास्तव में बहुत उन्नत हैं और कुछ ऊपर नीचे चलते रहते हैं तथा कुछ लोग अभी तक भी अत्यन्त निम्न स्तर पर हैं।

अत: हम सबको मिलकर चलना होगा। किसी ने यदि कुछ प्राप्त कर लिया है तो सहजयोग को इसका कोई लाभ नहीं है। मैंने आपको बताया है कि यह सामूहिक चीज़ है जिसे कार्यान्वित होना है और आप सबने इसे कार्यान्वित करना है। अत्यन्त मधुर बात है कि आज विश्व भर में आपके भाई बहन हैं। पूर्ण हृदय से जब आप समझ जाएंगे तो वो भी वैसे ही पूर्ण हृदय से आपका स्वागत करेंगे। परन्तु हमें एक ऐसे स्तर तक पहुँचना होगा जहाँ हम पूर्ण प्रेम, स्पष्टवादिता से परिपूर्ण होकर बिना किसी की चिन्ता किए या उससे डरे एक दूसरे का सामना कर सकें और कह सकें कि ये हमारे भाई हैं और हम इनके, तथा हमें इनसे प्रेम करना है।

आपको सहजयोग में अपने भाई बहनों से प्रेम करना है। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब हम भय मुक्त हो जाएं। क्योंकि इसका अन्य पक्ष भी है कि अहम् के साथ भय भी जुड़े होते हैं। अहंकारी अन्य लोगों को उत्पीड़ित करता है और यह भी जानता है कि दूसरे लोग भी उसका उत्पीड़न कर सकते हैं। अत: इस बात को हमें सोचना है कि उत्पीड़न से हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। कभी अपना तिरस्कार न करें। आप सन्त हैं यह बात आपको समझनी है। इस विश्व में आप ही साक्षात्कारी लोग हैं। कितने लोग हैं जो कुण्डलिनी उठा सकते हैं? चैतन्य लहरियों को समझने वाले कितने लोग हैं?

गुरु पूजा पर मैं आपको बताऊँगी कि आपने क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं और आपके अन्दर कौन सी शक्तियाँ जागृत हो गई हैं जो कार्यरत हैं। सहजयोग के माध्यम से किस प्रकार आपके चक्र जागृत हो गए हैं। हाँ ऐसा घटित हुआ है। लेकिन आप इसके विषय में क्या कर रहे हैं? आप जानते हैं कि किसी के साथ घटित हो सकने वाली यह महानतम चीज है। आप यह भी जानते हैं कि बहुत समय पूर्व की गई भविष्यवाणियों में इस महानतम घटना को 'अन्तिम निर्णय' (The Last Judgement) का नाम दिया गया। आप जानते हैं कि एक यही मार्ग है जिसके द्वारा आपको जांचा जाएगा। अत: हमें कठोर परिश्रम करना है। हमें कार्य करना है।

बिना किसी प्रयत्न के यह आपको प्रदान किया गया। ठीक है, परन्तु इसको बनाए रखने के लिए, उच्च स्तर पर ले जाने के लिए हमें सत्यनिष्ठा पूर्वक इसे कार्यान्वित करना होगा। इसे अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिए, अपने अन्दर इसे आत्मसात् करने के लिए यही विनम्र दृष्टिकोण है। अपने मस्तिष्क पर इसे इस प्रकार छा जाने दें कि मस्तिष्क पूर्णत: आच्छादित हो जाए, ढक जाए। इस शाश्वत आशीर्वाद को अपने अन्दर आने दें। इसके लिए मैं पूरी तरह उत्सुक हूँ। स्वयं को तुच्छ न बनाएं। अपने स्वप्न को विशाल बनाएं, अपने विचारों को उच्च बनाएं क्योंकि अब आप महानतम चीज़ से सम्बन्धित हैं, अनादि से, सर्वोच्च से तथा विराट से। अपने महत्व को जब आप महसूस करेंगे तो आप इसे कार्यान्वित करेंगे। निश्चित रूप से हमारे अन्दर कुछ चीजें गलत हो गई हैं। यह बात हम जानते हैं, उन चीज़ों को हमें समझना चाहिए क्योंकि यह सब कठिनाइयाँ हमारे बहुत अधिक सोचने, बहुत अधिक पढ़ने तथा बहुत अधिक रोबीले स्वभाव के कारण हैं। परन्तु हम इनसे मुक्ति पा सकते हैं।

स्वयं से निर्लिप्त होकर, स्वयं को देखने से तथा स्वयं को सम्बोधित करने से-"अब श्रीमन् आप कैसे हैं"? यह कार्य कर पाना सम्भव है। जब आप ऐसे कहेंगे तो तुरन्त आपका चित्त आपके अन्दर से, आपके बाह्य अस्तित्व को देखने में लग जाएगा, ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है। जितना स्पष्ट आप स्वयं को देखेंगे उतना ही बेहतर है, आपने स्वयं का सामना करना है। परन्तु आप अपना सामना नहीं करना चाहते क्योंकि स्वयं का सामना करने से आप घबराते हैं। क्योंकि आप लोगों का उत्पीड़न करते रहे हैं, इसीलिए उत्पीड़ित होने से घबराते हैं। तब कोई उत्पीड़न न होगा क्योंकि जिस स्थिति में आप स्वयं को देखते हैं वह पूर्णता की स्थिति होगी। न किसी को उत्पीड़ित करें, और न ही किसी से उत्पीड़ित हों। स्वयं को स्पष्ट देखें, यही आपका कार्य है।

शनै: शनै: आप अपने चक्रों को देखने लगेंगे, अपनी समस्याओ को देखने लगेंगे। आप जानते हैं कि यह सब शनै: शनै: विकसित होता है। परन्तु सभी लोग तुरन्त परिणाम चाहते हैं। आपके अन्दर यदि धैर्य नहीं है, मेरे प्रति नहीं, अपने प्रति। मैं कह रही हूँ कि आपको धैर्यवान् होना है क्योंकि आपमें समस्या बनी हुई है, अत: आपको अपने आपमें धैर्यवान होना होगा, किसी अन्य के साथ नहीं। यह मुख्य बात है। आप यदि स्वयं के प्रति शान्त हैं तो आपको बहुत समय पूर्व दिए गए वचन अनुसार वह उपलब्धि प्राप्त हो जाएगी। परन्तु स्वयं से शान्त होना आपको सीखना होगा, स्वयं से क्रोधित होना नहीं। स्वयं का तिरस्कार करना नहीं। दूसरों पर अपनी खीज़ उतारना नहीं। ऐसा करना बहुत सुगम कार्य है। परन्तु आपके जटिल जीवन और जटिल कार्य के कारण आप अन्य चीज़ों में फंस गए हैं, इनसे आसानी से मुक्ति पाई जा सकती है और बिना किसी कठिनाई के इनसे बचा जा सकता है। मैं जानती हूँ आप ऐसा कर सकते हैं। अत: मेरे पिता, मेरी बहन, मेरा भाई जैसी चीज़ों को भूल जाएं, यह सभी समस्याएँ बिना किसी देरी के भस्म हो जाएंगी। ज्यों ही आपका जीवन सीधी दिशा में चलेगा, सभी बुराइयाँ भस्म हो जाएंगी। आपके प्रकाश के सिवाए कुछ भी बाकी न रह जाएगा तथा उन लोगों के सिवाए जो आपके पास प्रकाश प्राप्त करने के लिए आते हैं।

मैं जानती हूँ कि गुरु पूजा का दिन आपके लिए महान दिवस होगा और इससे पूर्व, मेरा अनुरोध है कि आप स्वयं को तैयार करें। हो सकता है मैं कुछ महान कार्य करूँ। परन्तु इसको लेने वाला कोई उचित व्यक्ति भी तो होना चाहिए। अत: आप स्वयं को तैयार करें। इसके विषय में सोचें कि क्या आप अन्य लोगों से प्रेम

करते हैं? क्या आप प्रेम मार्ग में हैं? क्या आप सभी को प्रेम करते हैं? यह सोचना मात्र ही बहुत बड़ी चीज है कि आप अन्य लोगों को प्रेम करते हैं। आप मेरे से पूछें क्योंकि मैं हमेशा यही सोचती हूँ कि मुझे अन्य लोगों से कितना प्रेम है। मुझमें इतना प्रेम है कि मैं सदा इसे देती रहती हूँ। कल्पना करें कि अन्य लोगों से प्रेम करना कितना महान है। आप जानते हैं कि लोग मुझसे इस प्रकार व्यवहार करते हैं। अविश्वसनीय! क्या ऐसा नहीं है? फिर भी मैं उन्हें प्रेम करती हूँ और उनसे खेलना मुझे अच्छा लगता है। जिस प्रकार मैं प्रेम करती हूँ उसी प्रकार आपको प्रेम करना चाहिए।

प्रेम ऐसी चीज है जो कमल की तरह से अपने सौन्दर्य को फैलाता है : अपनी पंखुड़ियों को खोलता है और मधुर सुगन्ध बहने लगती है। इसी प्रकार आपके हृदय भी खुल उठेंगे और विश्व भर में आपके प्रेम की सुगन्ध फैल जाएगी। आपके अन्दर यह जागृत हो जाएगा। मैं जानती हूँ ऐसा घटित हो सकता है। जितना जल्दी यह घटित हो जाए उतना ही बेहतर है। इच्छा आपकी अपनी है, आपने ही इसकी इच्छा करनी है।

मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि क्रिसमस से पूर्व इतना सुन्दर भजन सुना। आप यह बात जानते हैं। इसी प्रकार से हम अब एक अन्य क्रिसमस मनाएंगे। अपने अन्दर उत्पन्न हुए ईसा-मसीह का जन्म दिवस मनाएंगे। उनके आगमन के लिए हमें तैयारी करनी है, यह तैयारी स्वयं से दौड़कर नहीं होगी : मूर्खतापूर्ण चीजों से फंसने से नहीं होगी। इसे कार्यान्वित करने से होगी, स्वयं को शुद्ध करने से होगी। इस शरीररूपी मंदिर में यदि आत्मा को स्थापित करना है तो इसका शुद्धिकरण आवश्यक है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।